𑒂𑒪𑒹𑒐 𑒮𑒘𑓂𑒔𑒨𑒢

आलेख सञ्चयन



𑒚𑒰. 𑒨𑒼𑒑𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒗𑒰

डा. योगानन्द झा

आशीराशि

श्रीयोगानन्दझा मैथिलीक चिन्तनशील अध्येता छथि। मिथिलाक ग्राम जीवनक साङ्गोपाङ्ग अध्ययन करैत, लोकगीत, लोकगाथा, ग्रामदेवता आदिक विषयमे अनुसन्धान करैत, मिथिला-मैथिलीक एहि क्षेत्रकेँ उजागर करबाक उद्देश्यैँ पत्र-पत्रिकामे शोध-लेख प्रकाशित करैत रहल छथि। जाति-जाति ओ पेशा-जीविकाक यावतो शब्द संग्रहक हिनक सहज अभिरुचि मैथिली शब्दकोषक पूर्ति दिशामे प्रशस्तता प्राप्त करत। अध्ययन-अध्यापन, लेख-निबन्ध आदिक रचनासँ ई अपन अधीत विषयमे प्रौढ़ता-प्राप्त छथि।

सुरेन्द्र (सुमन)

सदस्य, साहित्य अकादमी, दिल्ली
मैथिली मन्दिर, दरभंगा
20/3/85

●

श्रीयोगाबाबू वास्तविक अनुर ानकर्ता छथि। ओ अपना विषयकेँ नीक जकाँ बुझैत छथि, ओकरा कोना कोना नव मार्ग, नव बात आनि राखल जाए तकर विधिवत् ज्ञान छन्हि। ई आब अनुभूत खेलाड़ी भए गेल छथि तेँ आवश्यकता छैक जे डुबकी मारि मारि आरो रत्न सभ बहार करथि। ई जे मार्ग धएलन्हि अछि तकरा धएने रहथु, इएह आशीर्वाद दैत छिअन्हि। हिनक कार्य मौलिक छन्हि, परिश्रमसँ ई कोताही नहि करैत छथि, तत्त्वक वास्तविक अनुसन्धान करबाक विशुद्ध परिपाटी अपनओने छथि, झूठ फूसिकेँ स्थान नहि दैत छथिन्ह, एकनिष्ठ भए कार्यरत रहैत छथि।

श्रीजयकान्तमिश्र

ज्येष्ठ कृष्ण तृतीया सोम 1393 साल
? बी., सर पी. सी. बनर्जी रोड, इलाहाबाद

आलेख सञ्चयन

डा. योगानन्दझा

मिथिला रिसर्च सोसाइटी
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा-846001

ALEKHA SANCHAYANA : A Collection of Essays and Literary Criticism in Maithili by Dr. Yoganand Jha; (2002), Rs. 100.00

- प्रकाशक
  मिथिला रिसर्च सोसाइटी
  कबिलपुर, लहेरियासराय
  दरभंगा-846001 (बिहार)

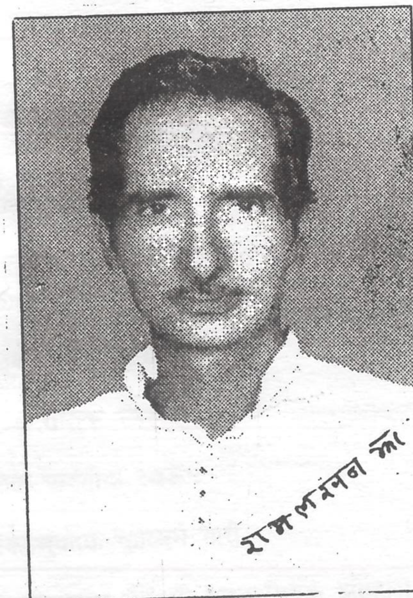
- प्रथम संस्करण : 2002
  मूल्य : रु. 100.00 (एक सय टाका) मात्र

- प्राप्ति स्थान
  श्री मिलिन्दकुमारझा
  द्वारा डा.योगानन्दझा
  भगवती स्थान मार्ग
  कबिलपुर, लहेरियासराय
  दरभंगा-846001
  दूरभाष : 06272-42774

- आवरण शिल्प : *श्रीधीरजकुमारझा*

- मुद्रक :
  सुधीर प्रिंटिंग वर्क्स
  बहादुरपुर, रोड न०-13 'सी'
  पटना-800016

समर्पण



जन्म : 01-01-1926 अवसान : 06-06-1990

जनिक जीवनसंघर्ष, सरलता ओ वात्सल्य
निरन्तर हमरा अनुप्राणित कयने रहैछ
ओहि पूज्यचरण पिताक
स्मरणमे
ई श्रद्धापुष्प

01-01-2001 योगानन्द झा

विषय–सूची

पुरोवचन

आधुनिक कालमे कोनहु भाषाक परिनिष्ठित गद्य-साहित्यक महत्त्वपूर्ण अंग मानल जाइत अछि अनुसन्धान ओ आलोचना । अनुसन्धान यदि भाषा-साहित्यक अनभिज्ञात तथ्यक उद्घाटन, अभिज्ञात तथ्य सभक पारस्परिक समन्वयन-व्यवस्थापन ओ तर्कसम्मत व्याख्या करैत अछि, तँ आलोचना साहित्यकार, साहित्यिक कृति ओ साहित्य-विधा सभक विश्लेषण, विवेचन ओ मूल्यांकन करैत अछि । वास्तवमे अनुसन्धान द्वारा जे सामग्री प्रकाशमे आनल जाइत अछि, तकरा सबकेँ आलोचना माँजि-खराजि चमका देबाक काज करैत अछि ।

आलोचना सामान्यतः दुइ प्रकारक होइत अछि : सैद्धान्तिक ओ व्यावहारिक । सैद्धान्तिक आलोचना ओ होइत अछि जाहिमे काव्य-साहित्यक मूल्यांकनक आधारभूत सिद्धान्त ओ मानदण्डक विवेचन कयल जाइछ । व्यावहारिक आलोचना ओ थिक जाहिमे कोनो लेखकक समग्र साहित्यिक व्यक्तित्व, कोनो विशेष कृति, कोनो विधा अथवा कोनो साहित्यिक प्रवृत्तिक विश्लेषण-विवेचन ओ मूल्यांकन कयल जाइत अछि । व्यावहारिक आलोचना सेहो दुइ रीतिक होइत अछि : वस्तुनिष्ठ ओ आत्मनिष्ठ । वस्तुनिष्ठ आलोचनामे आलोचकक हेतु महत्त्वपूर्ण रहैत अछि आलोच्य वस्तु जकर विवेचन-मूल्यांकन विभिन्न काव्यसिद्धान्तक आलोकमे करबाक प्रयत्न कयल जाइछ । यद्यपि आब वस्तुनिष्ठ आलोचनाक आधार काव्यशास्त्रीय सिद्धान्तक अपेक्षा समाजशास्त्रीय सिद्धान्त होइत जा रहल अछि । समाजशास्त्रीय आधार पर आलोचना करबाक क्रममे आलोचक वस्तुनिष्ठ नहि रहि आत्मनिष्ठ भऽ जाइत छथि । आत्मनिष्ठ आलोचनामे आलोचक पूर्णतः आत्मकेन्द्रित भऽ जाइत छथि। हुनक आलोचनामे दृष्टि एक तरहेँ एकांगी भऽ जाइछ । वैयक्तिक रुचि-अरुचि, वैचारिक विधि-निषेध ओ राजनीतिक सिद्धान्तक प्रतिबद्धता प्रबलतर भऽ उठैत छनि । मैथिलीमे सम्प्रति व्यावहारिक आलोचनाक नाम पर एहने एकांगी आत्मनिष्ठ आलोचनाकेँ प्रश्रय देबाक प्रवृत्ति देखल जाइत अछि ।

मैथिलीमे अनुसन्धान-आलोचनाक स्थिति दयनीय नहि परन्तु उत्साहवर्द्धको नहि कहल जा सकैत अछि । एहने परिस्थितिमे डा.योगानन्दझा मैथिलीक अनुसन्धान-आलोचनाक क्षेत्रमे अपन विशिष्ट परिचिति स्थापित कऽ लेलनि अछि। विज्ञान-स्नातक होइतो भाषा साहित्य दिस उन्मुख भेलाह तँ ने केवल मैथिली ओ हिन्दी विषयमे एम्. ए. ओ पी-एच्. डी. उपाधिए प्राप्त कयलनि,

अपितु अपन लेखनीसँ मैथिली साहित्यक श्रीसमृद्धिक लेल सेहो सर्वात्मना सन्नद्ध भऽ गेलाह ।

योगानन्दजी यद्यपि सर्जनात्मक विधा : कविता, कथा ओ साहित्यिक निबन्ध सेहो लिखैत रहलाह अछि परन्तु विशेष अभिरुचि-प्रवृत्ति अनुसन्धान ओ आलोचना दिस रहलनि अछि । अनुसन्धानहुमे विशिष्ट क्षेत्र रहलनि अछि लोकवृत्त (Folklore) एवं लोकसाहित्य (Folk literature) । जखन ई मैथिलीमे एम्. ए. केर छात्र छलाह तँ विशिष्ट पत्रक रूपमे *काष्ठ व्यावसायिक मैथिली शब्दावलीक व्याख्यात्मक अध्ययन* विषय पर विनिबन्ध (Dissertation) प्रस्तुत कयने छलाह जे शोध-प्रबन्धहि सदृश मौलिक ओ गम्भीर छल । हिनक पी-एच्. डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबन्धक विषय छलनि *'मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावलीक व्याख्यात्मक अध्ययन'* । एहिमे ओहन कतोक हजार शब्दक संकलन कयल गेल अछि जे लिखित साहित्यक क्षेत्रमे सर्वथा अस्पृष्ट ओ अनभिज्ञात छल । समाजक निम्नतम स्तर धरि पहुँचि गवेषक द्वारा स्वयं श्रवण, पर्यवेक्षण ओ अनुभवक आधार पर शब्द सभक संकलन, अर्थ-निर्वचन ओ व्याख्यात्मक विवरण देल गेल अछि । ई शोध-प्रबन्ध मैथिली भाषाक कोष-निर्माण ओ मिथिलाक लोकवृत्तक अनुसन्धान-अध्ययनक दिशामे केहन महत्त्वपूर्ण कार्य भऽ सकल से एही बातसँ सिद्ध होइछ जे शोध प्रबन्धक परीक्षक डा.सुभद्रझा ओ डा.प्रबोधनारायणसिंह सन विशेषज्ञ पी-एच्. डी. उपाधि हेतु एकर संस्तुतिए नहि कयलनि अपितु मौखिकी परीक्षामे अनुसन्धाताक भूरि-भूरि संवर्द्धना करैत शोधप्रबन्धकेँ विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित कराओल जयबाक हार्दिक अनुशंसा सेहो कयने छलाह ।

लोकवृत्तसँ सम्बद्ध हिनक एक पुस्तक *'लोकजीवन ओ लोकसाहित्य'* 1986 मे प्रकाशित भेल छलनि । ई पुस्तक विशेष स्थूलकाय नहिओ रहैत सम्बद्ध क्षेत्रक अनुसन्धातागणक हेतु मार्गदर्शक सिद्ध भऽ रहल अछि ।

मैथिलीक प्राचीन-अर्वाचीन साहित्यहुक क्षेत्रमे अपन अनुसन्धानक अवदानसँ विद्वद्वर्गकेँ प्रभावित करैत रहलाह अछि, जकर प्रमाण अछि हिनका द्वारा संकलित-सम्पादित *'मैथिली शाक्त साहित्य'* (1996) । एहिमे मैथिली साहित्यक शाक्त परम्परामे विद्यापतिसँ लऽ कऽ अद्यतन काल धरिक कवि द्वारा रचित देवी-वन्दना विषयक 70 गोट कविक 182 गोट गीत सब संकलित अछि । ई संकलन देखि सहजहि अनुभव कयल जा सकैछ जे मैथिली काव्यक विकासमे शाक्त भावधारा एकटा महत्त्वपूर्ण उत्प्रेरक तत्त्व रहल अछि ।

वास्तवमे श्रीयोगानन्दझा साहित्यहु विषयपर आलोचना लिखैत छथि तँ ओहिमे किछु ने किछु अनुसन्धान-लब्ध सामग्रीक संयोग-सन्निवेश रहितहिँ

अछि, किछु अभिनव तथ्य, अभिनव विन्यास ओ अभिनव व्याख्या रहितहिँ अछि । हिनक अनेको विशिष्ट आलेख सब संगोष्ठी सबमे अथवा पत्र-पत्रिकादिमे प्रकाशमे अबैत रहलनि अछि । ई आवश्यक छल जे ओकरा सबकेँ संकलित कऽ पुस्तकक रूप प्रदान कयल जाय, तखने वृहत् पाठक समुदायकेँ सहज रूपमे उपलब्धि सम्भव । ओही आवश्यकताक पूर्त्यर्थ प्रस्तुत भऽ रहल अछि प्रस्तुत *आलेख सञ्चयन* ।

एहि सञ्चयनमे नौ गोट आलेख राखल गेल अछि । ई आलेख सब तीन कोटिक अछि : लोकवृत्त विषयक, साहित्य विषयक ओ भाषातत्त्व विषयक । आरम्भक दुइ गोट आलेख लोकवृत्तसँ सम्बद्ध अछि । एहि दूनू आलेखमे लेखक अपन लोकवृत्त विषयक अध्ययनकेँ विस्तीर्ण कयलनि अछि । पहिल दीर्घ आलेखमे मैथिलीक लोकसाहित्यक वैज्ञानिक रीतिसँ वर्गीकरण उपस्थित करैत मैथिलीक लोकसाहित्यक प्रत्येक प्रकारक यथासम्भव सोदाहरण परिचय देल गेल अछि। एहिसँ मैथिली लोकसाहित्यक रूप-वैविध्य, वर्ण्यवस्तु ओ प्रकृतिक अभिज्ञान सहज रूपमे होइत अछि । दोसर आलेखमे मैथिली लोकोक्तिमे मलाह जातिक उल्लेख कोन-कोन रूपमे भेल अछि, ताहिपर विचार भेल अछि ।

दोसर कोटि अछि साहित्यिक आलोचनाक जाहिमे पाँच गोट आलेख राखल गेल अछि । पहिल तीन गोट आलेखमे विद्यापति ओ सुमनजीक कृतिमे वर्णित वस्तुक पक्ष-विशेषक विश्लेषण कयल गेल अछि । विद्यापति पर दुइ गोट आलेख अछि । प्रथम आलेखमे विद्यापतिक काव्यमे वर्णित राधाक स्वरूप पर विचार कयल गेल अछि । अवश्ये ई विद्यापति विषयक बहुचर्चित विषय रहल अछि । अतः पूर्ववर्त्ती विद्वान्लोकनिक चिन्तन ओ विचारक प्रभाव-ग्रहण करब स्वाभाविक । किन्तु विषय ई तेहन जे जतेक बेर विचार कयल जाय, ततेक बेर, विद्यापतिक अपनहि शब्दमे 'तिल तिल नूतन होय' चरितार्थ होइत रहत, से एहू आलेखमे लेखकक वैचारिकता ओ प्रतिपादनशैलीमे मौलिकता ओ हृदयग्राहिता परिलक्षित होइतहि अछि । विद्यापतिक शिव विषयक गीत समूहक एकटा महत्त्वपूर्ण उपादान थिकीह पार्वती । परन्तु बहुत अल्प विचारक विद्यापतिक पार्वती पर गम्भीरतापूर्वक शास्त्रीय रीतिसँ विचार कयलनि अछि । एहि ठाम विद्यापति विषयक अपर आलेखमे विद्यापतिक काव्यमे वर्णित पार्वतीक स्वरूपक गम्भीर दृष्टिसँ विश्लेषण कयल गेल अछि । तेसर आलेखक आलोच्यवस्तु अछि सुमनजीक काव्यमे नारीक स्वरूप । सुमनजीक काव्य-फलक अत्यन्त विस्तृत ओ वैविध्यपूर्ण छनि । हिनक काव्यक समीक्षा सामान्यतः रस, ध्वनि, अलंकार, रीति अथवा वर्णनक विषयक आधार पर कयल जाइत रहलनि अछि । अत्रत्य आलेखमे सुमनजीक काव्यमे वर्णित नारीक विभिन्न स्वरूपक विश्लेषण कयल

गेल अछि । लेखकक विचारमे सुमनजीक काव्यमे सामान्यतः नारीक पौराणिक स्वरूप, प्रकृतिमे नारीक आरोपित स्वरूप, नारीक काव्यशास्त्रीय स्वरूप एवं लौकिक स्वरूप व्यंजित-रंजित भेल अछि ।

एक गोट आलेख साहित्यकार ओ हुनक विशिष्ट कृतिक समीक्षा पर केन्द्रित अछि । एहिमे प्रसिद्ध साहित्यकार श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'क साहित्यिक व्यक्तित्व पर प्रकाश दैत हुनक साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत प्रसिद्ध ग्रन्थ '*मैथिली पत्रकारिताक इतिहास*'क समीक्षा कयल गेल अछि । साहित्यिक आलोचना कोटिक अन्तिम आलेखमे मैथिली कथा-विधाक महत्त्वपूर्ण पक्ष-वर्णन, भाषा ओ संवाद-योजनाक विश्लेषणात्मक विवेचन कयल गेल अछि ।

तेसर कोटिमे दुइ गोट आलेख अछि जे पूर्णतः भाषा-तत्त्वसँ सम्बद्ध ओ अनुसन्धानपरक अछि । एहिमे प्राचीन आचार्य ओ आधुनिक भाषा-तत्त्वज्ञ लोकनिक देशीशब्दक अवधारणा पर प्रकाश दैत आचार्य हेमचन्द्रक मान्यताकेँ विशेष प्रश्रय देल गेल अछि । मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा प्राकृत, अपभ्रंश ओ अवहट्ठक शब्द-सम्पदाक विषयमे आचार्य हेमचन्द्रक '*देशीनाममाला*' अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आधारभूत साधन मानल जाइत अछि । यद्यपि '*देशीनाममाला*'क शब्द-संचयक आधार महाराष्ट्री ओ शौरसेनी प्राकृत-अपभ्रंश थिक परन्तु ओहिमे ओहनो शब्दक अभाव नहि जे कोनो ने कोनो रूपमे मैथिलीमे प्रयुक्त होइत रहल अछि अथवा सम्प्रतियो प्रचलनमे अछि । लेखक अत्यन्त श्रमपूर्वक ओहन शब्दावलीक अन्वेषण कऽ रूप ओ अर्थक दृष्टिएँ ओहिमे जे परिवर्त्तन भेल अछि, जे विकसित रूप बनल अछि तकर भाषावैज्ञानिक रीतिसँ अध्ययन कयलनि अछि । मैथिली भाषाक प्राक्कालीन, मध्यकालीन ओ आधुनिक भाषिक स्वरूपक अध्ययनक दिशामे अभिरुचि रखनिहार अध्येतालोकनिक निमित्त ई सामग्री सब महत्त्वपूर्ण सिद्ध भऽ सकैछ ।

सर्वेकत्वेन प्रस्तुत **आलेख सञ्चयन** आलोच्य विषयक महत्त्व ओ ओकर समीक्षण-वैशिष्ट्यक कारणेँ अत्यन्त उपादेय, पठनीय एवं संग्रहणीय कृति सिद्ध भऽ सकत से विश्वास कयल जा सकैछ । श्रीयोगानन्दझा मैथिली भाषा-साहित्यक अध्ययन-अनुशीलन, अनुसन्धान-आलोचना, रचनात्मक विधामे साहित्य-सर्जनक यात्रा पथ पर आत्मविश्वासपूर्वक बढ़ैत रहथि । मैथिली साहित्यक कोषकेँ निरन्तर अपन अवदानसँ सम्वलित करैत रहथि । यैह हार्दिक शुभकामना ।

वसन्त पञ्चमी, 17 फरवरी 2002
कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा

सदस्य, साहित्य अकादेमी

भूमिका

छओ जून 1990 इसवीक प्रातः हमरा जीवनमे एकटा एहन क्षण आबि गेल जखन हमर व्यक्तित्व-निर्माणक एकटा विशिष्ट ओ अनन्य स्तम्भ हमर पिता **स्व० रामलखनझा** (01.01.1926–06.06.1990) गोलोकवासी भऽ गेलाह । हम विधिक एहि आकस्मिक प्रहारसँ स्तब्ध रहि गेल छलहुँ ।

परवर्त्तीकालमे हुनक धयल-उसारल कागत-पत्रक अनुशीलनसँ ज्ञात भेल जे हुनक जन्मदिवस 01.01.1926 इसवी छलनि । तेँ तर्पणक रूपमे हुनक पचहत्तरिम जन्मदिवस 01.01.2000 इसवीमे एकटा अपन कृति हुनक स्मरणकेँ समर्पित करबाक संकल्प लेल । से ऊहि एहि कारणेँ नहि जे ओ हमर पिता मात्र छलाह, प्रत्युत् एहि कारणेँ जे अत्यन्त दयनीय आर्थिक स्थितिमे रहितहुँ शिक्षाक प्रति हुनक अवधारणाहिक कारणेँ हमरा पाँचो भाइ-बहिनकेँ स्नातक-स्नातकोत्तर स्तर धरिक शिक्षा प्राप्त भऽ सकल, जीवन-संघर्षमे एकनिष्ठताक संग कर्मपथ पर आगू बढ़ैत रहबाक प्रेरणा भेटैत रहल, आ सफलता-असफलताक प्रति स्पृहाहीनताक गीता-गंगामृतक पान करबाक मनोवृत्ति बनल रहि सकल ।

हायर सेकेण्डरी पाठ्यक्रममे पठित दिनकरजीक '*रश्मिरथी*' पोथीक ई पाँती '*सबको मिली स्नेह की छाया नई नई सुविधायें । नियति भेजती रही सदा ही मेरे हित विपदायें ।।*' हमरा जीवनमे निरन्तर संघर्षशीलताक उत्प्रेरक रहल अछि । पितृ-तर्पणक दैनन्दिन विधानक प्रति यथासंभव सचेष्ट रहितो ओकर अलक्ष्य प्रभावक प्रति कखनो कखनो शंको उत्पन्न होइत रहल अछि ।

साहित्य अकादेमी द्वारा जखन मायाधर मानसिंह लिखित अँग्रेजी विनिबन्ध *फकीरमोहन सेनापतिकेँ* मैथिलीमे रूपान्तरित करबाक हेतु अनुबन्धित कयल गेलहुँ तँ आधुनिक उड़िया भाषाक एहि शलाकापुरुषक जीवन-वृत्त पढ़ला उत्तर ज्ञात भेल जे मैथिली भाषा-साहित्यक आजुक स्थिति आ उड़िया भाषा-साहित्यक डेढ़ सय साल पूर्वक स्थिति सर्वथा समाने रहल अछि । उड़ियाकेँ एकटा फकीरमोहन भेटि गेने आइ ओ राष्ट्रीय भाषा होयबाक गौरव प्राप्त कयने अछि मुदा मैथिली आइयो अपना लेल ओहन व्यक्तित्वक अवतरणक बाटे ताकि रहल अछि । एही फकीरमोहनक पत्नी हुनक एक गोट रचना (रामायणक अनुवाद) छपला उत्तर कहने छलथिन: 'लोक बच्चा तँ एही लेल ने चाहैत अछि जे ओ अपन स्मृतिकेँ एहि संसारमे चिरस्थायी देखि सकय । मुदा सभटा स्मृति बहुत अल्पे अवधि धरि टिकैत छैक । हमरा ई पूर्ण विश्वास अछि जे हमर ई बच्चा (पोथी) हमरालोकनिक नामकेँ सर्वदाक हेतु अमर कऽ देत ।'

तेँ मैथिली पोथीक लेखन-प्रकाशन-वितरणादिसँ सम्बद्ध प्रभूत अनुभूत

कटु सत्य सबसँ अनभिज्ञात नहिओ रहैत, पितृ-तर्पणमे एहि संसाधनकेँ अपन प्रतिबद्धतावश समर्पित कऽ उल्लसित छी । एके साधे सब सधे । एही लाथेँ मैथिली-मन्दिरमे एकटा पुष्प आर तेँ चढ़ि जायत, तेँ ई आलेख सञ्चयन ।

सञ्चयनक आलेख सभमे बहुलांश मैथिली पत्र-पत्रिकादिमे प्रकाशित भऽ सहृदयलोकनिक स्नेह पाबि चुकल अछि । एकर पुस्तकाकार संस्करण जँ मैथिली भाषा साहित्यक श्रीवृद्धिमे कनेको सहायक होयत, अन्वेषक-अनुसन्धाता लोकनिकेँ कनेको मार्गदर्शन कऽ सकतनि, तेँ हम धन्य होयब ।

एहि अवसर पर हम पुण्यस्मरण करैत छियनि श्रद्धेय आचार्य सुमनजी केँ जनिक आशीराशि हमर साहित्य यात्रा पथक संबल बनल रहत । मान्यवर डा. श्रीजयकान्तमिश्रजीक प्रोत्साहन हमर प्रतिबद्धताकेँ व्यापक आयाम दैत रहल अछि, तेँ हिनका प्रति प्रणति निवेदन करैत छियनि । गुरुवर पं० श्रीचन्द्रनाथ मिश्र'अमर'जी द्वारा प्रदत्त मातृभाषानुराग ओ साहित्यिक संस्कार हमरा जीवन भरि बनल रहय, से भगवतीसँ प्रार्थना ।

सव्यसाची साहित्यकारक रूपमे विश्रुत साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक वर्त्तमान सदस्य *डा० रामदेवझाक* प्रति आभार प्रदर्शन मात्रसँ हमर कर्त्तव्य कोटि क्षरित होयत किएक तँ मैथिलीक साहित्यिक जगतमे हमरा जे प्रेरणा, अनुराग ओ सम्मान भेटैत आबि रहल अछि, तकर एकमात्र श्रेय एही विद्वद्वरकेँ छनि-रहतनि । पुरोवचन लिखि ओ हमर आलेख सभक गरिमाकेँ आर प्रवर्द्धित कऽ प्रोत्साहित कयलनि अछि । ई हमरा लेल गौरवक विषय थिक ।

डा० बासुकीनाथझा, डा० शशिनाथझा, श्रीमोहन भारद्वाज, डा० भीमनाथझा, श्रीचन्द्रेश, श्रीफूलचन्द्रझा 'प्रवीण', डा० मेघन प्रसाद, श्रीशंकरदेवझा आदिक सहज स्नेहक हेतु हिनकालोकनिक आभारी छियनि । मुद्रण व्यवस्थामे श्री जवाहरझा, दूर शिक्षा निदेशालय, पटना विश्वविद्यालय तथा सहकर्मी श्रीराजेन्द्रझाक ऊर्जस्विता एवं श्रीसुधीरकुमारजीक उदारतासँ हमर मार्ग प्रशस्त भऽ सकल ।

एहि क्षीणकाय पोथीमे अपन अभिलाषाक पूर्त्ति हम नहि कऽ सकलहुँ अछि जकर मूल कारण अर्थाभाव ओ मैथिली पोथीक वितरण-व्यवस्थामे हमर कटु-तिक्त अनुभवक राशि रहल अछि ।

'पितृ देवो भव'क आदि संकल्पना आ कुलक्रमागत तर्पण करैत रहबाक अपन परम्पराक प्रति प्रतिबद्धता हमर संकल्पक हेतु अछि, तेँ

'ॐ अद्य ज्येष्ठे मासे शुक्ले पक्षे त्रयोदश्यां तिथौ
शाण्डिल्य गोत्रः पिता रामलखनशर्मा तृप्यताम्
इदं आलेख सञ्चयनं तस्मै स्वधा' ।

योगानन्दझा

कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा-846001

22 जून, 2002

मैथिलीक लोक साहित्य

लोक शब्दक सामान्य अवधारणा अछि जनसामान्य । डा० सत्येन्द्र मानव-समाजक ओहि वर्गकेँ लोक कहलनि अछि जे आभिजात्य संस्कार, शास्त्रीयता ओ पांडित्य-चेतना अथवा अहंकारसँ शून्य अछि आ एकटा परम्पराक प्रवाहमे जीवित रहैछ *(लोकसाहित्य विज्ञान-डा० सत्येन्द्र, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कं०, दिल्ली, 1962, पृ० 3)*। समाजक एहि वर्ग-विशेषक जीवनमे प्रचलित श्रुतिसाहित्यकेँ लोकसाहित्य कहल जाइछ । ई साहित्य अनभिज्ञात सामान्य-जन द्वारा रचित, सामान्य जनक हेतु सामान्य जनक साहित्य थिक जे शिष्ट शास्त्रीय साहित्यसँ सर्वथा पृथक् प्रकृतिक होइछ । एहि साहित्यमे ने तँ छन्दपिंगलक बन्धन होइत छैक, ने क्रम-अनुक्रमक बाध्यता रहैत छैक आ ने साहित्यशास्त्रीय रस, ध्वनि, अलंकार, रीति, वक्रोक्ति, औचित्य, गुण आदि रचना-प्रक्रियाक समावेशक प्रौढ़ वा कृत्रिम प्रयत्नक आवश्यकते रहैत छैक ।

तथापि लोकसाहित्यक परम्परा सुदीर्घकालीन अछि आ विस्तार अपरिमित। एहि साहित्यमे लोकजीवनक प्रतिच्छवि अंकित-टंकित भेटैछ । आधुनिक सभ्यताक प्रभावसँ दूर निरक्षर ग्रामीण जनताक दैनन्दिन जीवनक उपभुक्त सुख-दुःख, भावानुभाव, लाभ-हानि, आचार-व्यवहार, हर्ष-विषाद, आशा-निराशा आदिक सहज ओ सर्वथा अकृत्रिम अभिव्यंजना, सर्वसाधारण समाजक मौखिक रूपमे भावमय अभिव्यक्ति, एकरूपता ओ समरसताक अभाव होइतो रूढ़ क्षेत्रीयताक सुमधुर आस्वाद, लोकजीवनक आधार रूढ़ जातीय संस्कृतिक उच्छल अनुरागसँ युक्त एहि लोकरंजनी साहित्यमे लोकजीवन ओ लोकसंस्कृतिकेँ अपन समस्त आरोह-अवरोहक संग प्रतिस्थापित देखल जा सकैछ । लोकजगतक भाषा-वेष, मनोवांछा, तृष्णा, कल्पना-जल्पना, रूढ़ि-विश्वास आदि अपन प्रकृत स्वरूपमे एही साहित्यमे प्रस्फुटित पाओल जाइछ ।

लोकसाहित्य शास्त्रीय परिपाटीसँ आबद्ध नहि रहैछ । एहिमे परम्परासँ अबैत लोकविश्वास, लोकरूढ़ि, लोककथ्य एवं विशिष्ट शैली एकरा शिष्ट साहित्यसँ पृथक् कयने रहैत छैक । क्रमहि युगविशेषक लोकसाहित्य जखन

नागरजन द्वारा परिनिष्ठित साहित्य मध्य परिगृहीत कऽ लेल जाइछ तँ ओहिमे कृत्रिमता आबि जाइत छैक आ ओ शिष्ट साहित्य मध्य परिगणित होमऽ लगैछ।

मैथिलीक लोकसाहित्य आने समृद्ध भाषाक लोकसाहित्य जकाँ अत्यन्त समृद्ध अछि। आचार्य रमानाथझा आदि साहित्यिक ग्रन्थ वर्णरत्नाकरसँ पूर्वक जाहि जनमनोरंजक आ जनजीवनक उपकारी रचनाक चर्चा कयलनि अछि, से सब मैथिलीक प्राचीन लोकसाहित्येक विधा मध्य परिगणित कयल जा सकैछ *(द्रष्टव्य, प्रबन्ध संग्रह-रमानाथझा, दरभंगा प्रेस कं० प्रा० लिमिटेड, 1963, पृ० 63)*। हुनका मतें वर्णरत्नाकरसँ प्राचीन निम्नलिखित कोटिक रचना भेल छल–

(अ) *जनमनोरंजक*

(क) व्यावहारिक, सामयिक, भक्तिक, नृत्यक, मुक्तक
(ख) वीरगाथा-भाट, दशजुधी प्रभृतिक रचना
(ग) तत्तत् जातिक वीरलोकनिक गाथा
(घ) तत्तत् जातिक देवतालोकनिक आराधनाक
(ङ) प्रबन्धकाव्य, गद्यमे वा पद्यमे
(च) कथा-गद्यमे, पाबनिसबहिक तथा प्रमोदार्थ

(आ) *जनजीवनक उपकारी*

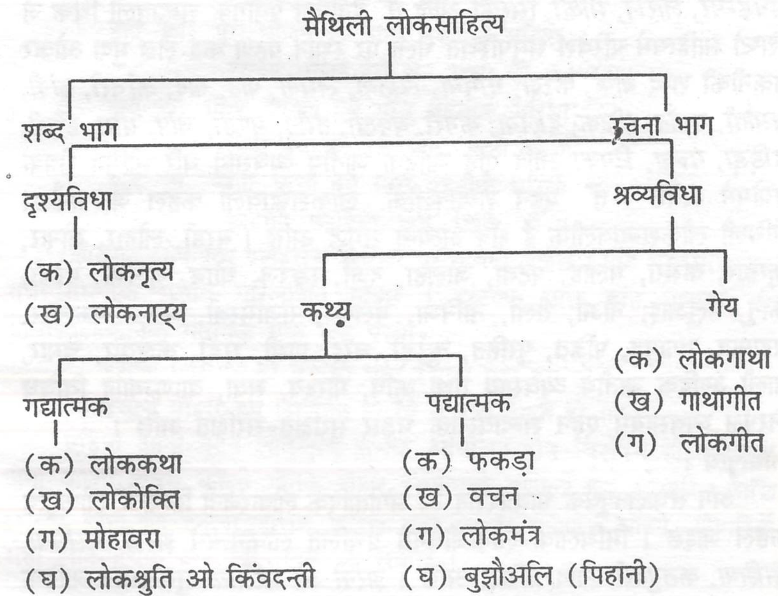
(क) कृषि, यात्रा, शकुन प्रभृतिक (ख) धर्मोपदेशक
(ग) धर्मप्रचारक (घ) भजन

डा० श्रीमती अणिमासिंह लोकसाहित्यक वर्गीकरण विधाक आधार पर कयलनि अछि *(द्रष्टव्य, मैथिली साहित्यक रूपरेखा, द्वितीय खण्ड, चेतना समिति, पटना, 1974, पृ० 6)*, जे निम्नस्वरूपक अछि–

(क) लोकगीत (ख) लोकगाथा
(ग) लोककथा (घ) लोकनाट्य
(ङ) बुझौअलि (च) फकड़ा
(छ) वचन

यद्यपि श्रीमती सिंहक ई वैज्ञानिक वर्गीकरण मैथिली लोकसाहित्यक अध्ययनक मार्गकेँ प्रशस्त करबाक हेतु अत्यंत समीचीन ओ तर्कसंगत अछि तथापि एकरा पूर्ण नहि कहल जा सकैछ। एहि वर्गीकरणकेँ आर व्यवस्थित ओ पल्लवित कयल जा सकैछ।

मैथिली लोकसाहित्यकेँ एकटा भिन्ने दृष्टिकोणसँ देखब अपेक्षित अछि। एहि साहित्य मध्य ओहि समस्त उपेक्षित तत्त्वकेँ समेटब आवश्यक अछि जे मैथिली भाषा साहित्यक आधारशिलाक रूपमे विकासमान अछि। एहि दृष्टिएँ मैथिलीक समस्त लोक-साहित्यकेँ पहिने दुइ भागमे विभाजित करब समीचीन अछि-शब्द भाग ओ रचना भाग। पुनश्च रचना भागकेँ दुइ भागमे बाँटल जा सकैछ–दृश्यविधा ओ श्रव्यविधा। पुनश्च श्रव्यविधाकेँ दुइ उपवर्गमे बाँटल जा सकैछ–कथ्य ओ गेय। कथ्यविधाकेँ पुनश्च गद्यात्मक ओ पद्यात्मक आधार पर वर्गीकरण कयला उत्तर लोकसाहित्यक विधानुरूप वर्गोपवर्गीकरणक जे सूची प्राप्त होयत से निम्नस्वरूपक होयत–



लोकशब्दावली :

मैथिलीमे तीन प्रकारक शब्दावली दृष्टिगोचर होइछ। एक प्रकारक शब्दावली ओ अछि जकर प्रयोग दैनन्दिन जीवनमे निरन्तर होइत रहैछ। दोसर प्रकारक शब्दावली ओ अछि जकर प्रयोग सामान्यतः शिष्टे साहित्य धरि सीमित अछि आ तेसर प्रकारक शब्दावली ओ अछि जकर प्रयोग ने तँ दैनन्दिन जीवनमे होइत छैक, ने शिष्ट साहित्यिक भाषामे। एहन शब्दावलीक प्रयोग विशिष्ट व्यवसायमे विशिष्ट वस्तु ओ अर्थक द्योतनक हेतु विशिष्ट प्रयोजनसँ होइत छैक। कहल जा सकैछ जे विशिष्ट परिवेश ओ क्षेत्रे धरि एहन शब्दावलीक

प्रयोग सीमाबद्ध रहैछ । पारिभाषिक रूपेँ ई तकनीकी शब्दावली साहित्य ओ समाजसँ उपेक्षित रहितहुँ वर्गविशेषक विशिष्ट शब्दावली होइछ । शिष्ट साहित्यसँ सामान्यत: अवडेरल ई शब्दावली लोकजगतक संचालनमे महत्त्वपूर्ण भूमिका रखैछ आ भाषाक महत्त्वपूर्ण सम्पदा थिक । क्रमिक संक्रमण भाषाक एहि महत्त्वपूर्ण सम्पदाक रूप ओ अर्थ तथा अस्तित्वहुमे विघटनकारी परिवर्त्तन आनि दैछ, जकर परिणामस्वरूप लोकजगतमे परिव्याप्त एहि शब्दावलीमे संरचनात्मक ओ प्रयोगात्मक परिवर्त्तन परिलक्षित होमऽ लगैछ आ कखनोकाल शब्दलोप ओ अर्थलोपो भऽ गेल करैछ । तेँ शिष्ट जन ओ साहित्यिक प्रयोगसँ विमुक्त एहि शब्दावलीकेँ लोकशब्दावलीक रूपमे परिगृहीत कयल जा सकैछ। डोमक द्वारा प्रयुक्त *ढाकी, छिट्टा, खैंचा, डाला, चालनि, लीलीमौनी, दौरा, दौरी, छितनी, मेघडम्मर, लारनि, सीकी*, सिरकी आदि तँ दैनन्दिन प्रयोगक शब्दावली थिक जे शिष्टो साहित्यमे परिवेश समुपस्थित भेला पर स्थान ग्रहण कऽ लैछ मुदा ओकर तकनीकी शब्द *बांके, करदा, गभिया, पिठिया, लधना, पाट, गाद, कोचरी, बोनी, बसौती, गभौट, छीटक, दलिया, कनरी, बक्खी, तेरौन, मण्डी, चोप, धीरा, छाँछी, हड़िड़ा, गच्चा, टिपका* आदि एहि जातिक जातीय व्यवसाये धरि सीमित क्षेत्रक प्रयोगमे अबैछ । तेँ एहन शब्दाक्लीकेँ लोकशब्दावली कहल जा सकैछ। मैथिली लोकशब्दावलीक ई क्षेत्र अत्यन्त समृद्ध अछि । बरही, लोहार, सोनार, कुम्हार, कसेरा, मलाह, पटवा, जोलहा, दर्जी, रङरेज, धोबि, धुनिञा, गरेड़ी, कानू, हलुआइ, नौआ, तेली, नोनिञा, बेलदार, राजमिस्त्री, वैद्य, शिकलगर, महापात्र, गंगापुत्र, पंडित, पुरहित, कुरेड़ी, बरइ, पासी, सूड़ी, कलवार, चमार, माली आदिक जातीय व्यवसाय तथा कृषि, गौरक्ष्य, सेवा, वाणिज्यादि विविध निरपेक्ष व्यवसायमे एहन शब्दावलीक भंडार सुरक्षित-संरक्षित अछि ।

लोकनृत्य :

अंग संचालनपूर्वक भावप्रदर्शन ओ संगीतादिक लोकरंजनी क्रियाकेँ लोकनृत्य कहल जाइछ । मिथिलाक लोकजीवनमे प्रचलितं लोकनृत्यमे *झरनी, मरसिया, झिझिया, कठपुतरी* आदि प्रसिद्ध अछि । *झरनी* ओ *मरसिया* मुसलमान जातिक क्रमश: सुन्नी ओ शिया सम्प्रदायमे प्रचलित अछि जाहिमे कर्बलाक लड़ाइमे हसन-हुसैनक गाथागानपूर्वक चक्रनृत्यक आयोजन कयल जाइछ । द्रष्टव्य अछि सैयद दुलहिनक लोकजीवनक चित्रांकनसँ सम्बद्ध ई झरनी—

हाए जी, कोने उगलइ चान सुरुजबा कोने उगलइ तारा
कोने दुलहिन अङना बहारे जी ॥
हाए जी, पुरबे उगलइ चान सुरुजबा पछिमे उगलइ तारा
सैयद दुलहिन अङना बहारे जी ॥
हाए जी, अङना बहारिते सासु टूटलइ बढ़निञा
ताहि लय पढ़ै छइ सासु गारिये जी ॥

हाए जी, जुनि गारी दिऔ सासु जुनि उलहनमा
नैहरा से बढ़नी मँगाएब जी ॥
हाए जी, आगू आगू आबै सासु बढ़नीके भरिया
पाछू पाछू आबै जेठ भइये जी ॥
हाए जी, किए बैसक देबै सासु बढ़नीक भरिया
किए बैसक देबै जेठ भइये जी ॥
हाए जी, पटिये बैसेबै सासु बढ़नीके भरिया
अँचरे बैसेबै जेठ भइये जी ॥
हाए जी, किए भोजन देबै सासु बढनीके भरिया
किए भोजन देबै जेठ भइये जी ॥
हाए जी, पूरी भोजन देबै सासु बढ़नीके भरिया
खोआ भोजन देबै जेठ भइये जी ॥
हाए जी, किए विदाइ देबै सासु बढ़नीके भरिया
किए विदाइ देबै जेठ भइये जी ॥
हाए जी, धोती कुर्त्ता देबै सासु बढ़नीके भरिया
छोटकी ननदिया जेठ भइये जी ॥

झिझिया लोकनृत्य दशहराक अवसर पर कयल जाइछ । एहि पर मिथिलाक तंत्र-साधनाक प्रभाव परिलक्षित होइछ । द्रष्टव्य अछि एहि नृत्यक संग ग्रामीणालोकनिक गायनक एक गोट प्रसंग—

हँसुली गढ़ा दय हो बंगाली बाबू हँसूली गढ़ा दय हो ।
हँसुली पहिरि हम झिझिया खेलेबै डनिञा देखतै हो ॥

एहिना आनो-आन लोकनृत्य सभक आयोजन क्षेत्र-विशेषमे होइत होयत जेना कोशी क्षेत्रमे कोशी गीतक बहार लोकनृत्ये प्रणाली पर आधारित अछि (द्रष्टव्य, कोशी गीत—ब्रजेश्वर मल्लिक, मल्लिक सदन, बड़गाँव, मधेपुरा)। भाओ, गोहारिकेँ सेहो लोकनृत्येक अन्तर्गत राखल जा सकैछ ।

लोकनाट्य :

अवस्थानुकरणपूर्वक लोकरंजनी दृश्यकाव्यकेँ लोकनाट्य कहल जा सकैछ । मिथिलाक लोकजीवनमे *जट-जटिन, सामाचकेवा, डोमकछ, पमारा* आदि लोकनाट्य अत्यन्त जीवंत अछि । *जट-जटिन* लोकनाट्यमे दाम्पत्य-जीवनक उतराचौरी, *सामाचकेबामे* भाइ-बहिनक स्नेहसम्बन्धक उत्कर्ष, *पमारामे* नेनाक जन्मोत्सवक बधैया तथा *डोमकछमे* मानवीयताक उत्कर्षक चरम स्थिति देखाओल गेल अछि । संगहि इहो ध्यातव्य अछि जे सलहेस, दीनाभदरी, लोरिक, बौआ बख्तौर, घुघली-घटमा आदि यावन्तो लोकगाथा अछि, तकरा लोकनाट्यक रूपमे प्रस्तुत करबाक विधान अछि । अन्तर एतबे रहैछ जे गाथा जतय पद्यात्मकेटा भेटैछ;

लोकनाट्यक स्वरूपमे अबैत-अबैत हास्य-सृष्टि वा प्रसंगकेँ सम्बद्ध करबाक हेतु गद्यात्मक संवादसँ सेहो संयुक्त भऽ गेल करैछ ।

लोकगाथा :

लोकगाथासँ लोकसाहित्यक ओहि विधाक बोध होइछ जकर आधारमे दुइ गोट वस्तु वर्त्तमान बूझल जाइछ -- गेयधर्मिता ओ कथातत्त्व । एही दुहू तत्त्वक संश्लिष्ट संयोग लोकगाथाक स्वरूपरचनाक कारण होइछ ।

डा० रामदेवझा लोकगाथाक सम्बन्धमे विचार करैत कहने छथि जे 'लोकगाथाकेँ लोकसाहित्यक महाकाव्य कहल जा सकै अछि । महाकाव्यक नायक इतिहासप्रसिद्ध होइत छथि आ लोकगाथाक नायक लोकप्रसिद्ध । महाकाव्यक नायक उच्चकुलसम्भूत होइत छथि । लोकगाथाक नायक सामान्य जनसमुदायमे उत्पन्न भेल रहैत अछि । कोनो सामान्य कुलक व्यक्ति अपन शौर्य, पराक्रम, त्याग, बलिदान अथवा अन्य विशिष्ट कार्यक सम्पादन कऽ गाथाक नायक बनि जाइत अछि । मिथिलामे जतेक जाति अछि सबमे कोनो ने कोनो एहन नायकक गाथा सब श्रुति-परम्परासँ पुस्त-दर-पुस्त चल आबि रहल अछि । एहन मान्यता अछि जे ई नायक सभ दिव्य शक्तिसम्पन्न छलाह । अपन जीवनकालमे अलौकिक कार्य-सम्पादन करबे कयलनि परन्तु अपार्थिवो रूपमे निरन्तर दुखिआक गोहारि करैत छथि । तेँ लोकदेवताक रूपमे एखनो पूजित-प्रतिष्ठित छथि । हुनक गाथा-गानमे धार्मिक-भावना संयुक्त अछि' (द्रष्टव्य, दैनिक स्वदेश, 25 अगस्त 1982), सर्वथा समीचीन अछि ।

मिथिलाक लोकजीवनमे लोकगाथाक परम्परा अत्यन्त प्राचीन ओ समृद्ध अछि । दुसाध जातिमे *राजा सलहेसक*; मुसहर जातिमे दीनाभदरीक; नौआ ओ कुरेड़ी जातिमे *वेणीरामक*; गोप जातिमे *कारू खिरहर*, *बौआ बख्तौरक*; मलाह जातिमे जयसिंह, अमरसिंह, केवल महाराज, दुलरा दयालक; हलुआइ जातिमे *गणिनाथ-गोविन्द*, *फेकूरामक*; धोबि जातिमे *गरीबन भुइञाक*, चमार जातिमे *लुकेशरि*, *लालवन बाबाक*; डोम जातिमे *श्यामसिंहक* लोकगाथा अत्यन्त प्रचलित अछि । लोकगाथा सभमे *लोरिकायन*, *घुघलीघटमा*, *रायरणपाल*, *नैका बनिजारा*, *राजा विजयमल*, *राजा ढोलनसिंह*, *मरुअनि*, *हिरनी-बिरनी*, *गोपीचन्द-मयनावती*, *कुमर-वृजभान*, *कारिख*, *जोतिक*, *कालिदास*, *मीरायण*, *सती बिहुला* आदि प्रमुख अछि। ई समस्त लोकगाथा दीर्घ आख्यानपरक ओ गेय अछि ।

गाथागीत :

लघु आख्यानसँ युक्त लोकगाथाकेँ कथागीत, गीतकथा, गाथागीत कहल जाइछ । शिष्ट साहित्यिक भाषामे एकरा लोकसाहित्यक खण्डकाव्य-पद्यकथा कहल जा सकैछ । मिथिलाक लोकजीवनमे एहि गाथागीतहुक अतिव्याप्ति अछि । मिथिलाक लोकजीवनमे पूजित लोकदेवता सभमे कमला, काली, बन्दी, गोरैया, कलाली, किरंची, कोरल, कुसियारमल, झालाराम, ठीठामल, नाग, पँचपिढ़िया, राहु, रामठाकुर, रकतमाला, भगवत्ती, भैरव, मनुषदेवा, महिषासुर, मातर, मीरा, मोतीदाइ, दयाराम, डीहबाबा, बौधूराम, धर्मराज, झम्मन मरड़, गैरबाबा, बरहम, जलपा, हुलहुली, हलुमान, सुल्तान खाँव, सूर्याऊ आदि विभिन्न जातिक जातीय देवता, कुलदेवता ओ गृहदेवताक रूपमे प्रतिष्ठित छथि । हिनकालोकनिक स्मरण-वन्दनसँ सम्बद्ध गीतमे अनेक लघु आख्यानपरक गेय लोककाव्य देखि पड़ैछ जे गाथागीतक नामे अभिहित कयल जा सकैछ । गाथागीतमे लोकजीवनक सहज अभिव्यक्ति तथा कान्तासम्मित उपदेश-योजनाक सुघड़ नियोजनक निदर्शन उतिमाक गाथागीत *(द्रष्टव्य, गीतनाद, विभूति आनन्द/ज्योत्स्ना आनन्द, भवानी प्रकाशन, मुसल्लहपुर, पटना-6, 1986 गीत सं० 191)* मे देखल जा सकैछ--

नहाय सोनाय उतिमा भीड़ चढ़ि बैसली
उतिमा झाड़ै छै नामी केसिया रे की
घोड़बा चढ़ल आबै जालिमसिंह रसिया
उतिमा सुरतिया देखि लोभयलै रे की
कहाँ गेल किए भेल होरिलसिंह सिपहिया
उतिमा के कय दिऔ दाने रे की
केशिया झाड़ैत उतिमा भैया आगू ठाढ़ भेली
भौजो कहय हुनको कुबोलिया रे की
अगिया लगेबौ उतिमा तोरी नामी केशिया
बजर खसेबौ सुरतिया रे की
कहाँ गेल किए भेल गाम कोतबलबा
दुइ बोझ करची कटायब रे की
एतबा वचन सुनलनि होरिलसिंह सिपहिया
झट दए डोलिया फनाबै रे की
एक कोस गेली उतिमा दुइ कोस गेली
तेसरे मे लागल पिआस रे की
गोर लागू पैञा पड़ू अगिला कहरिया
चुरू एक पनिआ पिआबह रे की
एक चुरू पील उतिमा दोसर चुरू पील
तेसरमे खीरय पताल रे की
हम ने जनलियौ उतिमा, तोहेँ डूबि मरबेँ
डेरबा पइसि इज्जति लितियौ रे की
बाबा कुल तारलै उतिमा भैया कुल तारलै
रखलै वियहुआ के मान रे की

एहिना गोपीचन, सरबनक आख्यानपरक लोकगीत, सम्मरि गीत, भाटक

कतिपय प्रशस्ति पद्य, नट-नट्टिनक गोदना-गीत आदि सेहो गाथागीतेक मध्य परिगणित कयल जा सकैछ । गोदना गीतक एकटा बानगी एतय प्रस्तुत कयल जाइछ–

आ रे बनके कउआ
दुइये गो खुद्दीके कारणमा सासुजी देलखिन वनवासे रे
आ रे वन के कउआ
झोरिओ देलखिन सुइयो देलखिन गामेगाम गोदना पड़ौलखिन रे
आ रे वन के कउआ
आ गे दाइ नटिनिञा
तोरे सनके बेटी छलइ तोरे सन सुरतिया
सेहो बेटी बसै ससुररिये गे आ गे दाइ नटिनिञा
आ गे माइ मदोदरी
तोरे सन के मैया छलइ तोरे सन सुरतिया
तकरो बेटी गामे गाम गोदना पाड़इ छइ गे
आ गे माइ मदोदरी
आ गे दाइ नटिनिञा
जातियो के हम भात देबै कोतबलबाके टकबा
तोरो हम जतिये मिलेबौ गे आ गे दाइ नटिनिञा

लोकगीत :

लोकजगतमे निर्मित, प्रचलित ओ संरक्षित गीतकेँ लोकगीतक अभिधान देल गेल अछि । सांस्कृतिक धरोहरक स्वरूपवला ई श्रुतिसाहित्य लोकजगतक प्रतिनिधि साहित्य थिक । मिथिलाक लोकजीवनमे अदौसँ प्रवहमान ई साहित्य सहज ओ सरल भाषा तथा निरलंकृत भाव-प्रवणताक कारणेँ लोकमानससँ निरन्तर जुड़ल रहल अछि । भक्ति, संस्कार ओ व्यवहारसँ मूलतः सम्बद्ध ई लोकसाहित्य मैथिल संस्कृतिक प्रतीकक रूपमे जनकंठमे वर्त्तमान रहल अछि ।

लोकगीतक महत्त्वक सर्वाधिक प्रशस्त कारण अछि मिथिलाक सांस्कृतिक परिवेशक संगीतमयता । एतऽ धरि जे किछु सम्प्रदायमे तँ मृत्युओक अवसर पर निर्वेदपरक गीत गाओल जाइछ । एहन कोनो क्षण नहि जखन एहिठामक सामान्यजन संगीत-सुधाक पान नहि करैत होथि । बूढ़-बुढ़ानुसक पराती ओ गामक शिवालयक नचारीक जागरण संदेश पर दैनन्दिन जीवनक आरंभ होइत अछि । कान्ह पर हरखंडा लेने हरवाह, महिँसिक पीठ पर बैसल चरवाह, हाथमे पेना लेने गाड़ीमान पर्यन्तकेँ एहिठाम कजरी, मलार, महराइ गबैत सूनल जा सकैछ । जाँत पर बैसलि ग्रामीणाक चूड़ीक खनक ताल दैत अछि लगनीक कोकिलकंठी रव पर आ सन्ध्या दीप लऽ रमकैत-झकमैत ग्रामबालाक वटगमनी

आ साँझक गीत सन्ध्याक मनोहारितामे अतिरिक्त योगदान कऽ दैछ । रात्रिकालो अवञ्च नहि, कीर्त्तन द्वारा भगवानक गुणानुवादक परिपाटी जे अछि ।

दैनन्दिन जीवनक ई क्रम-अनुक्रम सामयिक परिवेशकेँ पाबि आर अधिक पल्लवित पुष्पित भऽ उठैछ । वसन्तपञ्चमीक संगहि प्रारंभ होइत अछि होली-गायनक व्यामोह आ फागुनक अंतिम दिवस रंग-रभस लेने चल जाइत अछि, रामनवमी पर्यन्त चैतावरक बहार रहैछ, साओनमे झूलनक शृंगार, वर्षा भरि कजरी, मलार, बारहमासा; आसिनमे भगवतीक प्रति उद्‌गार, कातिकमे छठि-परमेसरीक अवतार ओ सामा-चकेबाक खेड़ि, पूसमे तुसारीक उत्साह रहैछ ।

तथापि लोकगीतक सर्वाधिक विशिष्ट आयोजनक प्रसंग अबैत अछि संस्कारक अवसर अयला पर । विवाह बेटाक हो वा बेटीक, कोजागरा, बरिसाति, मधुश्रावणी, द्विरागमनमे गीतक बखार फुजिते अछि । नव वर, नव कनिञाक विमल संयुक्ति, दूटा भिन्न कुल, मूल, गोत्र, परिवार, सामाजिकक भिन्न परम्पराक पारस्परिक अनुरक्ति लोकगीतक गिलाबा दय जोड़ल, ढेउरल, पोतल, चुनेटल, रांगल जाइत अछि आ मर्यादित सामाजिक जीवनक अक्षुण्ण परम्परा चलैत रहैछ । शिशुक जन्म, मूड़न, उपनयनमे तँ जेना सैंसे गाम दलमलित भय उठैछ आ सोहर, खेलौना आदि गीत गायनक प्रतिस्पर्द्धात्मक द्वन्द्व चलैत रहैछ । नटुआक तिरहुति, वसन्त, रास, ग्वालरी, बक्खोक मनोरंजक जन्म-विवाह गीत, पचनिञाक अरधौना गीत, शिशुकेँ बहटारबाक नेनागीत, झिझिरकोना, कबड्डी, करियाझुम्मरि आदि लोकक्रीड़ागीत, जगरनथिया, कमरथुआक करुण यात्रागीत, विभिन्न देवीदेवताक मिनती ओ ध्यानपरक भक्तिगीत मिथिलाक जनजीवनक विशिष्ट तन्तु सभ थिक ।

विभिन्न परिवेश ओ सन्दर्भक बोध करबयवला लोकगीतकेँ विभिन्न अभिधान देल गेल अछि । लोकगीत विधाक मुख्यतः तीन गोट प्रभेद कयल जा सकैछ–भक्तिपरक, संस्कारपरक ओ सामयिक गीत । देवी-देवताक स्मरण-वन्दन-कीर्त्तनसँ सम्बद्ध आत्मनिवेदनपरक गीतकेँ भक्तिपरक कहल जाइछ । सोहर, खेलौना, मूड़न, उपनयन, लगन, परिछन, कोबर, गौरीपूजन, महुअक, विषहरि पूजन, उदासी, डहकन, समदाओन, पसाहनि, उचिती, सउजन, योग आदिसँ सम्बद्ध गीतकेँ संस्कारपरक गीत कहल जाइछ । सामयिक गीतमे पराती, मलार, रास, ग्वालरी, फागु, चैतावर, लगनी, एकमासा, चौमासा, छमासा, बारहमासा, साँझ, बटगबनी, चाँचर, कजरी, विरहा, जोगीड़ा, विहाग आदि अबैत अछि । निदर्शनक हेतु एतऽ दुइ गोट लोकक्रीड़ा गीत देल जाइछ–

(क) **कबडीमे लबडी पतालमे पूआ**
बैसल मालिक खेलथि जूआ

(ख) करिया-झुम्मरि खेलै छी
ढील पटापटि मारै छी

लोककथा :

लोकसाहित्यक आख्यानपरक गद्यविधाकेँ लोककथा कहल गेल अछि । डॉ०अणिमासिंह मैथिली लोककथाकेँ चारि वर्गमे खण्डविभाजन कयलनि अछि--रूपकथा, हास्यकथा, व्रतकथा ओ नीतिकथा (द्रष्टव्य, मैथिली साहित्यक रूपरेखा, भाग 2, पृ० 16)। एहिमे रूपकथासँ तात्पर्य्य ओहन कथासँ अछि जाहिमे अमानवीय तत्त्व ओ चरित्रक वर्णन भेल हो । भूत-प्रेत, जादू-टोना ओ असंभव मानवीय क्रियासँ सम्बद्ध कथाकेँ रूपकथा कहल गेल अछि । आँझुलक कथा जाहिमे भाउजसँ प्रताड़िता कन्याक अन्ततः अमानवीय साहाय्यँ जीवन धारण ओ भाइ द्वारा हत्या करबाक, समाधि स्थल पर प्रकृष्ट पुष्पयुक्त वृक्षरूपमे जन्म लेबाक एवं स्वामीक अयला पर प्रकट होयबाक कथा अछि; अलौकिकताक विन्यासक कारणँ रूपकथा मध्य परिगणित होइछ । हास्यकथा मध्य गोनूझासँ सम्बद्ध ओ सदृश कथासभकेँ राखल जा सकैछ जे प्राचीन कालसँ मनोरंजनक अजस्र स्रोत बनल अछि । व्रतकथामध्य *मधुश्रावणी व्रतकथा, वटसावित्री व्रतकथा, जितियाक कथा, सपताविपताक कथा* आदि अछि जे विशिष्ट व्रत-अनुष्ठानक क्रममे सूनल जाइत अछि । पंचतंत्र आ हितोपदेशसँ प्रभावित ओहन कथा जे सदुपदेशक सहज संवाहक अछि, नीतिकथा मध्य राखल जा सकैछ । ई समस्त लोककथा-साहित्य अपरिमित अछि । नीतिकथाक एकगोट उदाहरण एतऽ प्रस्तुत अछि–

धर्मक बानि

एकटा गाम छल । बाहरसँ देखबामे ओ गाम अत्यन्त शुभ्रशाभ्र लगैत छल । घर सभ पतियानीमे बनल छलै । एकमहलासँ पँचमहला धरि सबटा मकान ईंटेसँ बनल--पलस्तर, टिपकारी, पोचारा आ नक्कासी कयल, रांगल-ढेउरल । सड़क सभ पक्का कयल, सोझसोझ, समानान्तर आ ठाम-ठाम चौबट्टी सभ पर फूलक केयारी आ नेना सभक खेलबा-कुदबाक स्थान । बाहरसँ आयल बटोहीकेँ एहि गाममे नगरक आशंका होइक । गामक सम्पन्नताक सभटा लक्षण एहिठामक कोनो घरकेँ देखला पर बुझाइत छलैक । पैघ-पैघ पोआरक टाल, हृष्ट-पुष्ट मालजाल आ भरल-पूरल बखार सभ दरबज्जाक शोभा बढ़ा रहल छलैक । गृहस्थीक सुख-संभारसँ सौंसे गाम प्रसन्न देखि पड़ैत छल ।

एहि गामक दछिनवारि कात एकटा पैघ पोखरि छलैक । पोखरिक एकटा मोहार पर घाट बनल छल, जतऽ सौंसे गामक लोक स्नान करैत छलाह । घाटसँ लगले एकटा जीर्णशीर्ण शिवमन्दिर छलैक । कहिया ई मन्दिर बनलैक, से ककरो बूझल नहि छलैक आ ने ककरो तकर जिज्ञासे छलैक । टूटल मस्तूल, ढहैत गुम्बज आ भखरैत देवाल शिवमन्दिरक प्राचीनता एवं भव्य निर्माणक संकेत दैत छल । भरि जांघक शिवलिंग मन्दिरक मध्यमे स्थापित छलैक । शिवलिंगक सटले एक दिस बसहा, तकर वाम भाग पार्वती ओ दहिन भाग गणेशक मूर्त्ति स्थापित छल । गौआँ सभ ओहि मन्दिरकेँ हरसंहारि महादेवक मन्दिर कहैत छलाह । ओहि मन्दिरमे पूजा करब सभ निषिद्ध बूझैत छल । तथापि एकटा पंडितजी नित्यप्रति ओहि मन्दिरक मूर्त्ति सभकेँ धो-धा कऽ साफ कयल करथि आ पूजा कयल करथि ।

ओहि शिवलिंगक सम्बन्धमे गौआँ सभमे ई धारणा छलैक जे जे क्यो एहि मन्दिरमे पूजा करैछ, से धने-जने हीन भेल चल जाइछ । तेँ मन्दिरक जीर्णोद्वार एवं पूजा-व्यवस्थासँ क्यो कनेको स्नेह नहि रखैत छल । पंडितजीकेँ पूजा करबाक सद्यः परिणाम भेटि रहल छलनि । दूनू प्राणीक अतिरिक्त हुनक परिवारमे आन सदस्यक उत्पत्तिये ने भेलनि आ क्रमहि निर्धन होइत-होइत बेचारे पंडितजीकेँ भिक्षाटनक सहाराटा बाँचि गेल छलनि । जखने ककरो दरबज्जा पर ओ भीखोक लेल जाथि तँ महादेवक कोपक डरेँ लोक हुनका दुरदुराबय लगैत छलनि । हारि-दारिकऽ पंडितजीकेँ गामे-गाम भीख माङिकऽ गुजर करऽ पड़ैत छलनि ।

एक बेर पंडितजी दू-चारि दिनक हेतु गामसँ बाहर जयबाक नेयार कयलनि। हुनका गाममे नहि रहला पर महादेव कतहु अपूज ने रहि जाथि तेँ ओ पंडिताइनकेँ कहलथिन– 'हमरा जायब जरूरी अछि । दू-चारि दिनक बादे घूरि सकब । एहि बीच महादेव अपूज ने रहि जाथि तेँ काल्हिसँ अहीँ पूजा कऽ देल करबनि ।, पंडिताइन कहलथिन– 'जाउ ! जाउ !! हमरा बुतेँ पूजा-तूजा नहि कयल होएत । डेबलहुँ तँ भरि जन्म महादेवकेँ आ हमरा कप्पारमे आगि लगा देल । देखू ने, सौंसे गौआँकेँ , कोना धने-जने अगड़ाइयै आ एकटा अहाँ छी–महादेव, महादेव ! आ महादेव दिनोदिन गलौनहि जाइत छथि । एहन महादेवक पूजासँ की ?

पंडिताइनक एहन गप्प सुनि पंडितजी कानपर हाथ दैत बजलाह–'राम ! राम !! एहन कथा क्यो बाजए ! अयँ ये ! धने-जने हीन भेलहुँ तँ हुनक पूजा छोड़ि देब ! हुनक जे कर्त्तव्य छनि से तँ ओ करिते छथि आ हमहीँ अपन कर्त्तव्य छोड़ि दिअऽ ?' अन्ततः पंडितजी पंडिताइनकेँ पूजाक भार दऽ आनठाम चलि गेलाह ।

एहि बीच एक दिन गाममे चोरि भेलैक । जाग भऽ जयबाक कारणेँ किछु चोरकेँ ई बुझना गेलैक जे सामान लऽ कऽ भगने पकड़ा जायब । तेँ ओ सभ अपन-अपन सामान शिवमन्दिरमे फेकैत भागि पड़ायल ।

दोसर दिन जखन शिवमन्दिरमे सामान फेकल देखल गेल आ पंडितजीकेँ

घर पर नहि पाओल गेलनि तँ चोरिमे हुनको सहायक होयबाक शंकासँ सौंसे गौआँ बैसार कऽ हुनका गामसँ बइला देबाक निश्चय कयलक ।

जखन पंडितजी गाम अयलाह आ पंडिताइन कानि-कानिकऽ सभटा कथा सुनौलथिन्ह तँ मुँहें बौने रहि गेलाह । ओ गाम नहि छोड़ऽ चाहैत छलाह आ गौआँकेँ शान्त करऽ चाहैत छलाह । मुदा पंडिताइन नोर चुआबैत कहलथिन– 'जल्दी छोड़ू ई गाम । एहन गाम बासक जोग नहि । ने भरि पेट अन्नक जोगाड़, ने पाँच हाथ वस्त्रक । आ तइ परसँ ई कलंक ।'

अन्तत: पंडितजी गाम छोड़बाक हेतु विवश भऽ गेलाह । गामसँ विदा होयबा काल हुनका महादेवक अपूज रहि जयबाक कथा अखरलनि तँ बहुत, मुदा उपाये की रहनि ? विदा भेलाह ।

जखन दूनू प्राणी गामक सिमान पर पहुँचलाह तँ पंडितजी अपन महादेवकेँ अन्तिम प्रणाम करबाक हेतु गाम दिस तकलनि । देखैत छथि जे सौंसे गाममे त्राहि-त्राहि मचल अछि । चारू कातसँ गाम आगिक लपेटमे घेरायल अछि । बड़का टा टा गुङरौट आकाशमे लहरा रहल अछि । आगिक लहास उठि रहल अछि आ यावत् ओ पंडिताइनकेँ इशारा करथि तावत् तऽ सौंसे गाम धू-धू कऽ जरि चुकल छल । धूआँ छोड़ि किछुओ ने देखाइ पड़ि रहल छल । पंडितक मुँहसँ निकललनि–'धर्म कयने जँ होअय हानि, तैओ ने छोड़ी धर्मक बानि ।' आ गाम दिस पड़यलाह ।

लोकोक्ति ओ मोहावरा :

लोकोक्ति ओ मोहावरा लोकजीवनक अत्यन्त सूक्ष्म ओ तीक्ष्ण ज्ञानक सूत्र अछि । लोकोक्ति सिद्ध प्रयोग थिक आ मोहावरा लाक्षणिक । मानवी ज्ञानक ई घनीभूत रत्न बुद्धि ओ अनुभवक युग-युगक पर्यवेक्षणक परिणाम थिक आ पदावलीक वामन स्वरूपमे त्रिलोकक अभिव्यंजनाक सामर्थ्य रखैछ । लोककंठ पुस्त-दर-पुस्तसँ एकर परिवहन श्रुति-परम्परासँ करैत आयल अछि आ सन्दर्भ उपस्थित होइत देरी ओकर प्रयोग कऽ तीक्ष्ण संवेदनाक अभिव्यक्ति करैत रहैछ । यथा, घानीसँ बहतौनी भारी, घर से कोल्हुअरबे अच्छा, सड़लो तेली तँ नओ सय अधेली, सब ठाम राम-राम बाड़ी पर नै राम राम, झख मारब, अरकस करब, पटरी बैसब, टाटी-बेनाठी लागब इत्यादि ।

लोकश्रुति ओ किंवदन्ती :

जेँ लऽ कऽ लोक साहित्य श्रुतिसाहित्य थिक तेँ कतोक विश्वसनीय-अविश्वसनीय ऐतिहासिक तत्त्वकेँ सेहो संवहन करैत आबि रहल अछि। एहन तत्त्वसँ सम्बद्ध वस्तु लोकश्रुति वा किंवदन्ती कहल जाइछ । लोकश्रुति विभिन्न कालखंडक परिकल्पनात्मक इतिहासक रूपरेखा दैत अछि ।

उदाहरणक हेतु रहुमाथवगणक मिथिला आगमन आ यज्ञ द्वारा दलदल भूमिकेँ सुखाय बासयोग्य बनयबाक कथा, नेपालस्थित ओहि शमीवृक्षक मणिमण्डप स्थल (सीताक विवाहक मड़बाक स्थान) होयबाक कथा, जाहि पर एकोटा चिड़इ नहि बैसैछ, उच्चैठ स्थित भगवती मन्दिर ओ कालिदाससँ सम्बद्ध कथा, पोखरि द्वारा पथिककेँ बासन देबाक कथा, प्रेत द्वारा पोखरि खूनल जयबाक कथा, जनकपुरसँ आठ किलोमीटर दूर दक्षिण-पश्चिममे स्थित लोहारपट्टी गाममे 1934 ई० मे उखरल महादेव भूकम्पनाथक कथा, दरभंगाक हड़ाही पोखरि खुनयबाक प्रसंगसँ सम्बद्ध कथा, मिथिलाविभूति गंगेशक पत्नी द्वारा हुनका नव्यन्याय-चिन्तनक हेतु प्रेरित करबाक प्रसंग-कथा, वृद्धवाचस्पति द्वारा भामती-टीका लिखबाक क्रममे हुनक पत्नीक साधनाक कथा, उगना-रूप महादेव द्वारा विद्यापतिक सेवा करबाक कथा, वीरनरेन्द्रक शौर्यकथा, लक्ष्मीनाथ गोसांइ ओ म० रमेश्वरसिंहक विशिष्ट तंत्रसाधनाक कथा आदिकेँ राखल जा सकैछ । प्रत्येक गाम, पोखरि, नदी, घाट, बान्ह, डीह आदिक सम्बन्धमे किछु एहने लोकश्रुति ओ किंवदन्ती कालक्रममे अनैतिहासिक होइतो प्रचलित सूनल जा सकैछ । अधिकांश एहन श्रुतिसाहित्य समाने तथ्य रखैत अछि मुदा माध्यम बदलल रहबाक कारणेँ कथ्यमे सेहो क्रमिक परिवर्त्तन देखि पड़ैछ । मिथिलाक अनेक गामक बड़का गाम कहयबाक पाछाँ, भोरे-भोर नाम नहि लेल जयबाक रूढ़िक पाछाँ सेहो एहने किंवदन्ती सभ अछि । गाम-गाममे व्यक्ति ओ प्रकृतिक विविध अवयवसँ सम्बद्ध एहन लोकश्रुतिक संख्या अपरिमेय अछि जे आत्मगौरवक प्रकाशन, मनोबलक संवर्द्धन, ऐतिहासिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथ्यक पर्यवेक्षणक हेतु लोकसाहित्यक महत्त्वपूर्ण सामग्री थिक ।

फकड़ा :

लोकजीवनक फक्कड़ कवि-व्यक्तित्वक जोड़ल एहन पद फकड़ा कहल जाइछ जे मानवजीवनक कोनो सत्य घटनापर आधारित उक्तिविच्छितिपूर्ण प्रभावशाली पद होइछ । ई भाषाक अभिव्यंजना-शक्तिकेँ अत्यन्त संवर्द्धित कऽ दैछ । यद्यपि एहिमे लोकोक्ति जकाँ सार्वजनीनताक अभाव रहैछ तथापि जातीय जीवनक विशिष्ट सन्दर्भ ओ परिवेशक कारणेँ ई लोकजीवनक नीक जकाँ प्रतिनिधित्व करैछ, यथा–

1. एक बरही दू लोहार । बाले बच्चे लगय कुम्हार ॥
2. आ गे दगरिन आ गे दगरिन गोर तोरा लगियौ ।
   दरद मोरा छूटि गेल लोल तोरा दगियौ ॥
3. सात तामा के सात पकैलहुँ चौदह तामा के एके ।
   तोँ कुलबरना सातो खैलेँ हम कुलमन्ती एके ॥
   तोँ कुलबरना तीमन खैलेँ नून तेल मिरचाइ ।
   हम कुलमंती छुच्छे खैलहुँ दही चुड़ा मिठाइ ॥

4. माघ मास जँ माड़ुर खाइ । ससरि फसरि वैकुण्ठे जाइ ।
5. एक बेटी लाइ दोसर मिठाइ । तेसर भेली तँ तीनू बलाइ ॥
6. जेम्हरे देखलहुँ खीर । तेम्हरे गेलहुँ फीर ।
7. बैसल खाय चिबाबय पान । से की राखत देशक मान ॥
8. भूखल केर अन्न गीत रोगी के दवाइ ।
पियासल के गीत पानि तिरपित के महराइ ॥
9. धन के बाजय घाँटी । निरधन लोटए माँटी ॥
10. विधवा घरमे सभ दिन भादव निर्धन घरमे कातिक ।
राजा घरमे सब दिन अगहन फागुन घर अहिवातिक ॥
11. हम नै बूढ़ि गे हम नै बूढ़ि । बुढ़बा वियाहलक तेँ हम बूढ़ि ॥
12. गुड़ा खुद्दी खेलौं उपास भङ भेल ।
बुढ़बा वियाहलक कुमारि पद गेल ॥
13. नैहरा जो बेटी सासुर जो । बहिञा घुमा बेटी कत्तहु खो ॥
14. आधा गेलै उड़न-पुरनमे आधा गेलै पम्ह ।
आधा गेलै धून-लपेटन आधा लेलौं हम ॥

वचन :

परिनिष्ठित साहित्यमे जे स्थान सूक्तिकेँ छैक सैह स्थान लोकसाहित्यमे वचनकेँ छैक । लोकजीवनक अनुभवी, बुद्धिमान ओ विद्वान व्यक्तिसभ ई वचन श्रुतिपरम्परासँ जनकंठमे सुरक्षित अछि आ एहन अनुभवसिद्ध वचन ग्रामांचलमे लोकजीवनक संचालनमे महत्त्वपूर्ण भूमिका निमाहैत अछि । घाघ, भड्डरी आ डाकक भनितासँ तथा अनेक भनिताहीनो वचन मैथिली लोकसाहित्यक अमूल्य निधि थिक, यथा–

यात्रा-शकुन विचार : रविकेँ पान सोमकेँ दर्पण
मंगल किछु किछु धनिञा चर्वण
बुधकेँ गुड़ वृहस्पति राइ
शुक्र कहय मोहे दही सोहाइ
शनि कहल मोर अदरख भाइ

कृषि-सम्बन्धी : कम कऽ जोतिहऽ खूब मेहिअबिहऽ
ऊँच कऽ बन्हिहह आड़ि ।
ताहू पर जँ नहि उपजह तँ
डाककेँ पढ़िहह गारि ॥

अन्य : गेल माघ उन्तिस दिन बाँकी ।
मंगलमुखी सदा सुखी ।
आधा तब सधा ।

लोकमंत्र :

मिथिलाक लोकजीवनमे साप, बिच्छा, बिढ़नी, पचहिया, घोड़न आदिक दंशसँ बचबाक, बिक्ख उतारबाक, सापादि पकड़बाक, नेनाकेँ नजरिसँ बचयबाक, भूत-प्रेत चुड़ैलसँ बचबाक तथा प्रभावित भेलापर दुष्ट-प्रभाव-मुक्त करयबाक, आगि मिझयबाक, चोरा, मंमर्खा, कानक कीडी झाड़बाक मंत्र प्रचलित अछि । एहिना आनो कतोक कार्य जे लोकानुष्ठानपरक अछि, मंत्रक बलेँ साध्य बूझल जाइछ । ई लोकमंत्र सभ क्षेत्रानुसारी विविधतासँ युक्त तथा आदिम संस्कृतिक रिक्थ थिक । द्रष्टव्य अछि कुरेड़ी जाति द्वारा मधु छोड़यबाक क्रममे मधुमाछीक प्रकोपसँ बचबाक हेतु पाठ्य लोकमंत्र–

आँट बान्हू, साँट बान्हू बान्हू अपन काया ।
सत गुरू के बान्हू काया, सूर महामाया ॥

बुझौअलि :

बुझौअलि मैथिली लोकसाहित्यक एक गोट विशिष्ट विधा थिक । एहिसँ मिथिलाक काव्यरसिकता ओ प्रयुत्पन्नमतित्वक परिचय भेटैछ, यथा–

1. फड़य बेराबेरी पाकय एक्के बेरी — *कुम्हारक बासन*
2. छौ मासक कमाइ छनमे गमाइ — *आबाक नष्ट होयब*
3. उठ्ठाके बैठा कहय चलती के गाड़ी ।
मुरूखके पंडित कहय पंडित के भिखारी ॥

एहिमे रजक जे कार्यावधिमे निरन्तर ठाढ़े रहैछ–कपड़ा बोरैत काल, भट्ठी करैत काल, धोइत काल, इस्त्री करैत काल; से बैठा (बैसल) उपनाम धारण करैछ, चलैत शकटकेँ गाड़ी कहल जाइछ, मूर्ख कुम्हार पंडित उपनाम ग्रहण करैछ आ पंडित ब्राह्मण धनाभावक कारणेँ समाजक भीख पर आश्रित होयबाक कारणेँ भिखारि कहबैछ । एहि तरहेँ संसारमे सबटा उनटबाँसिये चलैत छैक, ताहि पर व्यंग्य कयल गेल अछि ।

एहि तरहेँ स्पष्ट अछि जे मैथिली लोकसाहित्यक परिव्याप्त परिसर एकर अत्यन्त समृद्धिक सूचक अछि । एकर संकलन, विवेचन-विश्लेषणक आवश्यकता अछि । शिष्ट साहित्यकेँ ई नव आयाम दऽ सकैत अछि । लोकशब्दावली जँ मैथिली भाषाक प्रकृतिक अध्ययनक हेतु भाषावैज्ञानिक सामग्रीसँ सम्पन्न अछि, भाषाकोशक सम्वर्द्धनक हेतु आवश्यक अछि, व्याकरणक निधि अछि, मैथिलीक क्षेत्रगत उपभाषा-सम्बन्धक परिचायक अछि, तकनीकी ओ पारिभाषिक शब्दावली-सम्वर्द्धनमे सहायक अछि तँ व्युत्पत्तिविज्ञान, इतिहास, समाजशास्त्रक सेहो अमूल्य निधि थिक । लोकनृत्य, लोकनाट्य, लोककथा, लोकगाथा, लोकमंत्र जँ मिथिलाक परिचिति थिक, मैथिल संस्कृतिक अनुशीलन-पर्यवेक्षणक

सूक्ष्म आँकड़ा थिक, तँ फकड़ा, वचन ओ बुझौअलि युग-युगसँ प्राप्त मानवीय ज्ञानक अजस्र स्रोत; लोकोक्ति ओ मोहावरा जँ शिष्टसाहित्यक अलंकृतिमे चमत्कृतिक परिधान थिक तँ लोकश्रुति ओ किंवदन्ती परम्परा ओ इतिहासक प्रारंभिक अध्ययन-सामग्री ।

मुदा लोकसाहित्य लिपिबद्ध नहि होयबाक कारणेँ आधुनिक वैज्ञानिक संक्रमणसँ सीदित अछि । सिनेमा, टी० वी०क सहज सौलभ्य ग्राम्यस्तर धरि भऽ गेने तथा प्रोत्साहनक अभावमे लोकनृत्य ओ लोकनाट्य क्रमश: मृत भेल जा रहल अछि । अनेक लोककथा ओ लोकगाथा नवयुगीन प्रवाहक अवहेला-विवश पुरना पीढ़ीक संगहि नष्ट होइत जा रहल अछि । चिकित्सा सौविध्य लोकमंत्रकेँ, श्रुति परम्परासँ स्मृतिक द्वारा ज्ञानार्जनक प्रक्रियाक समाप्ति फकड़ा, वचन, बुझौअलि, लोकोक्ति, मोहावरा ओ लोकश्रुतिकेँ संक्रमित कयने जा रहल अछि, गिड़ने जा रहल अछि ।

तँ यदि एकर सभक संकलन, व्याख्या ओ अध्ययन-अनुशीलन सम्प्रति नहि कऽ लेल जायत तँ आशंका अछि जे मैथिली भाषाक ई विशाल ओ अमूल्य सम्पदा विलुप्त भऽ जाएत । डा०अम्बाप्रसाद 'सुमन' ब्रजभाषाक कृषक-जीवन सम्बन्धी शब्दावलीक प्रसंगमे कहने छथि जे 'वर्त्तमान युगक भारतवर्षमे नागरिक संस्कृति ओ सभ्यता दिनोदिन बढ़ले जा रहल अछि । विज्ञानक नव आविष्कार प्रत्येक दिन गामक दिस बढ़ले जा रहल अछि । एहन स्थितिमे हमर कृषक ओ शिल्पकारकेँ औजार ओ कार्यपद्धति बदलबामे अधिक समय नहि लगतनि । जखन कृषकक सभ खेत ट्रैक्टरसँ जोतल जाय लागत आ पटौनी बिजलीसँ होमय लागत तँ देशी हर आ ढेकुलसँ सम्बद्ध जनपदीय शब्दावली गामक लोकक जीहपरसँ सर्वदाक हेतु उठि जायत ।' *(द्रष्टव्य, कृषक जीवन सम्बन्धी ब्रजभाषा शब्दावली भाग-1, डा० अम्बाप्रसादसुमन, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, 1960, ग्रन्थ के सम्बन्धमें, पृ० 3-4)* । डॉ० सुमनक ई आशंका लोकशब्दावलियेटा नहि अपितु सम्पूर्ण लोकसाहित्यक संरक्षणक हेतु विचारणीय कथ्य थिक ।

एही तथ्यकेँ ध्यानमे रखैत मिथिला-मैथिलीक मनीषीलोकनि लोकसाहित्य-संकलनक दिस विद्वज्जनकेँ अभिप्रेत करबाक हेतु आह्वान करैत रहलनि अछि । डॉ०अमरनाथझा, आचार्य सुमनजी आदि लोकशब्दावलीक संकलनक दिस बहुत पूर्वे इंगित कयल *(द्रष्टव्य, भाषणत्रयी, सं० देवेन्द्रझा, मैथिली अकादमी, पटना, 1983, पृष्ठ 13 तथा मिथिला मिहिर, 27 मई 1944 पृ० 7)*, डा०जयकान्त मिश्र लोकसाहित्यक संकलन-क्षेत्रक अभिज्ञान करओलनि, ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म' लोकगाथाचक्रकेँ शिष्ट-साहित्यिक मानदंड पर कसैत रहलाह, डा० प्रफुल्लकुमारसिंह 'मौन' निरन्तर लोकसाहित्यक विभिन्न अनुद्घाटित अंशकेँ उजागर करबाक दिस अभिमुख देखि पड़ैत छथि ।

तथापि एहि क्षेत्रमे मानक, प्राथमिक ओं मार्ग-प्रदर्शक कार्यक श्रेय यूरोपीय विद्वान सर जी० ए० ग्रियर्सन महोदयकेँ छनि जे एसियाटिक सोसाइटी जर्नल 1881 मे गीत राजा सलहेसक तथा गीत दीनाभद्रीक प्रकाशन कऽ मिथिलाक दुइ गोट प्रमुख लोकगाथाकेँ शिष्ट-साहित्यक मध्य विवेचन हेतु प्रस्तुत कयल तथा *'बिहार पीजेन्ट लाइफ'* नामक पोथीक माध्यमे मैथिलीओ क्षेत्रक लोकशब्दावली, लोकोक्ति, मोहावरा, लोकश्रुति, वचन, फकड़ा आदिक सम्यक् संकलन ओ व्यवस्थापन कयल, *'एन इन्ट्रोडक्शन टू द मैथिली लैंग्वेज ऑफ नॉर्थ बिहार कन्टेनिंग ए ग्रामर, क्रेस्टोमैथी एण्ड भोकेबुलरी'* द्वारा मैथिली लोकायनक कतिपय अंशकेँ लिपिबद्ध कयल ।

परवर्त्तीकालमे एहि दिशामे मानक कार्यक श्रेय छनि डा० जयकान्त मिश्रकेँ, जनिक दू खण्डमे विभाजित *'इन्ट्रोडक्शन टू द फोक लिटरेचर ऑफ मैथिली'* ग्रन्थ लोक साहित्यानुसन्धानक मानक बनल अछि ।

तत:पर परवर्त्तीकालमे मैथिली लोकसाहित्यक उर्वर क्षेत्र दिस विद्वानलोकनि नजरि देल आ प्रमुखत: विश्वविद्यालयीय अनुसन्धानक हेतु लोकसाहित्यक अंशविशेष सभ पर शोधकर्त्तालोकनि अभिमुख भेलाह । एहि क्रममे लोकसाहित्यपर संकलनात्मक, विवेचनात्मक ओ मिश्र तीनू तरहक काज होइत रहल अछि, होइत जा रहल अछि । एहीठाम इहो उद्धृत करब अनपेक्षित नहि जे मैथिलीक शिष्ट साहित्योमे एकर लोकसाहित्यसँ रसग्रहण करबामे आधुनिको युगक गीतकार-कविलोकनिकेँ असौकर्य नहि बुझाइत रहलनि अछि ।

यावन्तो प्रकाशित सामग्री प्राप्त भेल अछि तकर आधार पर कहल जा सकैछ जे लोकसाहित्यक लोकगीत विधाक संकलन-विश्लेषण पर सर्वाधिक ध्यान देल गेल अछि । एहि क्षेत्रमे प्राथमिक कार्य डा० रामइकबालसिंह 'राकेश'क *'मैथिली लोकगीत'* छनि जे प्रसिद्ध तँ भेल मुदा एहिमे लोकसाहित्यक नाम पर अधिकांश शिष्टसाहित्यिके गीतकेँ समेटि लेल गेल अछि । गीत सभक खण्डविभाजन ओ परिचयमे वैज्ञानिकतासँ बेसी भावुकताकेँ प्रश्रय दऽ देल गेल अछि । हिनके पोथी ओ निजी संकलनकेँ आधार मानि डा० तेजनारायणलाल *'मैथिली लोकगीतों का अध्ययन'* प्रस्तुत कयल जे मैथिली लोकसाहित्यक विवेचन-विश्लेषणक दिशामे मानक ग्रंथ कहल जा सकैछ ।

तथापि मैथिली लोकगीतक संकलन-व्यवस्थाक क्षेत्रमे जाहि मैथिल विदुषीक ग्रन्थरत्न *'मैथिली लोकगीत'* केँ मार्गप्रदर्शकक सिंहासनासीन कहल जा सकैछ से थिकीह डा० अणिमासिंह । हिनक संकलन ओ व्यवस्थापन कार्यसँ आगू एखन धरि लोकगीतक क्षेत्र नहि बढ़ि सकल अछि यद्यपि एहि दिशामे सर्वश्री बालगोविन्द झा 'व्यथित'क मैथिली ग्रामगीत, डॉ० प्रफुल्लकुमारसिंह 'मौन'क *'थारू लोकगीत'* ओ *'नेना गीत'*, ब्रजेश्वर मल्लिकक *'कोसी गीत'*, भोलाझाक *'मैथिली गीत संग्रह'*, विभूतिआनन्द/ज्योत्स्नाआनन्दक *'गीतनाद'*, श्रीमती

कामेश्वरीदेवीक '*मिथिला संस्कार गीत*', श्रीमती तारणीमिश्र तथा श्री राधावल्लभशर्माक '*मैथिली संस्कार गीत*', डा० इन्द्रकान्तझाक '*मैथिली व्यवहार गीत संग्रह*' आदि काज आगू आयल अछि ।

मैथिली लोकसाहित्यक अन्य विधा सभक दृष्टिअे प्रकाशित सामग्रीमे जीवानन्दठाकुरक *मैथिलडाक*, कन्हैयालाल कृष्णदासक *डाकवचनामृत*, राजेश्वरझाक *लोकगाथा: विवेचन, श्यामा चकेबा, जट जटिन, नैना-योगिन;* ऋषभदेव शर्मा रेग्मीक '*दीनाभद्री र सलहेस*', डा० लोकनाथमिश्रक *मिथिलामे व्यवहार गीत*, रमानाथमिश्र' मिहिर'क '*लोकोक्ति ओ मोहावरा*'; डा० तेजनाथ झाक *मधुश्रावणीपूजाकथा*, डा० प्रफुल्लकुमारसिंह' मौन'क *ब्रह्मग्राम*, डा० शैलेन्द्रमोहन झाक *कथा-कहानी*, डा० अमरनाथझाक '*अष्टदल*', डा० योगानन्दझाक '*लोकजीवन ओ लोकसाहित्य*'; डॉ.विभूतिआनन्दक '*एकटा छला गोनू झा आ कथा-कहिनी*, डा. महेन्द्रनारायणरामक *मैथिली लोकमहागाथा: कारिख पजियार* आदि पोथीकेँ प्रमुख रूपेँ गनाओल जा सकैछ । तदतिरिक्त विभिन्न पत्र-पत्रिकामे निरन्तर प्रवहमान लोकसाहित्यक स्फुट सामग्री उपलभ्य अछि ।

अप्रकाशित सामग्रीक दृष्टिअे डा० पूर्णानन्ददास, डा० नन्दनन्दनझा, डा० कमलकान्तझा, डा० महेन्द्रप्रसादसिंह, डा. श्रीमती उर्मिलाप्रसाद, डा० मोतीलालयादव आदिक कार्यकेँ विशिष्ट महत्त्वसंयुत कहल जा सकैछ । मुदा हिनकोलोकनि द्वारा मैथिली लोकसाहित्य पर कतबा न्याय भऽ सकल अछि से तँ प्रबन्धक प्रकाशनक बादे ज्ञात भऽ सकत ।

एहि तरहेँ कहल जा सकैछ जे मैथिली लोकसाहित्यक अध्ययन-अनुशीलनक प्रति विद्वानलोकनि सजग भेलाह अछि । तथापि लोकसाहित्यक ओहने क्षेत्रकेँ स्पर्श कयल जा सकल जछि जे आभिजात्य परिवारसँ सम्बद्ध अछि । ग्रामांचलक लोकजीवन धरि प्रवेश अवडेरले अछि, मिथिलाक विशाल भूगोलक सर्वांशक क्षेत्रश: सर्वेक्षण नहि कयल जा सकल अछि । स्वभावत: समुचित ओ व्यवस्थित संकलन, अध्ययन, अनुशीलनक अभावमे साहित्येतिहासमे मैथिली साहित्यक ई विधा अनुरूप स्थान नहि पाबि सकल अछि । डा० दुर्गानाथझा' श्रीश'क अतिरिक्त इतिहासकार तँ एकर चर्चो करब उचित नहि बुझलनि । श्रीशोजी परिशिष्टे धरि सीमित भेलाह जकर कारण ओ सामग्रीक अभाव बुझने छलाह ।

हमरा जनैत लोकसाहित्यक विशाल क्षेत्रकेँ आब सर्वथा अस्पृश्यताक कोटिमे राखब एकरा संग अन्याय करब होयत । तँ इतिहासकारलोकनि प्रकाशित-अप्रकाशित पोथी, शोध प्रबन्ध-निबन्ध, पत्र, संकलन द्वारा एकर सम्पूर्णतामे अद्यतन स्थिति धरिक विश्लेषण कऽ सकैत छथि ।

♦

लोकोक्तिमे मलाह जाति

माँझी, मुखिया, सहनी, सिंह, चौधरी, मंडल आदि उपाधिसँ विभूषित, बीन, बाँतर, बनपर, सुरहिया, कठौतिया, खुनौट, तिअर, नोनफर, गोँढ़ि, केओट, खरकट, कोल्ह, पछिमा, चाभ आदि उपजातिमे विभाजित मिथिलाक मलाह जातिक स्थान व्यावसायिक जाति सभक मध्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि । जल व्यवसायसँ सम्बद्ध ई जाति माछ, मखान, सिंघाड़ा ओ चूनक प्रत्यक्ष उत्पादन तथा जल-परिवहन द्वारा अप्रत्यक्ष उत्पादन करैत अछि ।

समस्त सुविधाक अछैतो ओहिसँ लाभ नहि उठा पओनिहार तहिना होइत अछि जेना **'मलाह रहैत अछि सदिखन पानिअेमे मुदा नहाइत अछि कहियो ने'** ।

मशीनीकरणक आधुनिक युगसँ अप्रभावित मैथिल श्रमजीवी जाति सभ अनवधानतावश कार्यारम्भसँ पूर्व एम्हर ओम्हर टल्ली दैत रहैत अछि । समय अयला पर धड़फड़ीमे अनेरे घोल फचक्का उठैत छैक । **'मुसहरक चल चल आ मलाहक पैस पैस'** तँ नामी अछि ।

अपना खुट्टापर कुकुरो बरियार होइत अछि । बरियारीक अनुभव कखनो काल अनर्गलो करबाक कारण भऽ जाइत छैक । एही सन्दर्भमे **'जलमे मलाह वनमे गोआर आ नैहरमे स्त्री अपन नहि होइत अछि ।'**

नदीमातृक देश मिथिलामे जल-परिवहनक महत्त्व अत्यधिक अछि । जल-परिवहनक अन्यतम साधन थिक नाओ । उपयुक्त सम्बन्धकेँ **'नदिया नाओ संयोग'** कहल जाइत छैक । परस्पराश्रित सम्बन्धकेँ **'कखनो गाड़ीपर नाओ तँ कखनो नाओ पर गाड़ी'** कहल जाइत छैक ।

नाओमे सभसँ मुख्य स्थान होइत छैक ओकर चाकर ओ समतल माङी । नाओपर बैसबाकाल ओकर माङी छेकबाक हेतु सभ बेहाल रहैत अछि । योग्यताहीन व्यक्तिक अनधिकार चेष्टा **'जकरा खेबा नहि तकरा अगिले माङी'** कहल जाइत छैक । नाओ खेबनिहारक मजूरीकेँ खेबा कहल जाइत छैक । उपयुक्त प्रयत्नक बादो फल प्राप्तिमे विपरीत गतिकेँ **'खेबो दी भसिअयलो जाइ'** बूझल जाइत छैक ।

कृषि कर्मक हेतु वर्षा जतबे महत्त्वपूर्ण अछि, मलाही वृत्तिमे सेहो ओतबे सहायक । अनुभूत सत्यक निरन्तर दर्शनपर आधारित ई उक्ति आइयो सत्ये सावित होइत देखल जाइत अछि–

'जओ पुरबा पुरबैया पाबय । सुखलो नदिया नाओ चलाबय ।।'

माछ मिथिलाक प्रमुख रुचिगर खाद्य अछि । कहल जाइछ जे आम, पान, माछ ओ मखान स्वर्गहुमे दुर्लभ छैक । माछ मारबाक हेतु अनेक साधनक उपयोग होइत छैक जाहिमे सर्वप्रथम थिक जाल । गुप्त प्रयत्नकेँ **'जाल खिरायब'** कहल जाइत छैक । क्षेत्र विस्तार करबाक अर्थमे **'जाल पसारब'** उक्तिक प्रयोग होइछ ।

अपार धन राशिकेँ देखि अकिञ्चनक मोन व्याकुल भऽ उठैत छैक मुदा धनराशि संयुक्त व्यक्तिक हेतु ओ धऽन सन होइत अछि । **'जतेक माछ जाल देखैत अछि ततेक जँ मलाह देखय तँ छातिये फाड़ि कऽ मरि जाय ।'**

माछ छनबाक हेतु मलाह एकटा वंशनिर्मित उपकरणक व्यवहार करैत अछि। एकरा गाँज कहल जाइत छैक । व्यवसायमे लगलो उत्तर जँ लऽ दऽ कऽ बरोबरि भऽ जाय आ लग्गितक बदला लग्गिते उपर होअय, तेहने ठाम कहल जाइत छैक–

'जत बल हौंहि माछ के खाए । तत बल जाँहि गाँज घिसिआए ।'

मारल माछकेँ रखबाक हेतु मलाहक वंशनिर्मित पैघ पात्रकेँ डेली ओ छोट पात्रकेँ खोङ्ही कहल जाइत छैक । **'डेली खोङ्ही समेटब'** समस्त वस्तुजातक संग प्रस्थानक हेतु उद्यत अर्थमे प्रयुक्त होइछ ।

साधारण लोक बनसीसँ माछक शिकार करैत अछि । माछक हेतु प्राचीन शब्द *झख* अछि । झख मारनिहारकेँ बनसीकेँ पानिमे पाथि तट पर निष्क्रिय भेल बैसल रहऽ पड़ैत छैक । एहि निष्क्रियताक आधार पर उपलक्षण अछि **'झख मारब'** अर्थात् निष्क्रिय भेल बैसल रहब ।

बनसीमे माछकेँ फँसयबाक हेतु लोहाक अदृश्य काँटक चारूकात खाद्य पदार्थक *बोर* लागल रहैत छैक । एहि बोर दिस आकृष्ट भऽ माछ बनसीमे फँसि जाइत अछि । जँ कदाचित बनसीकेँ तोड़ि सकबामे समर्थो भऽ पबैत अछि तँ गलफर अवश्ये चिड़ा जाइत छैक । एहन माछ बनसीक बोर देखि आकृष्ट तँ अवश्य होइत अछि मुदा अपन पूर्व अनुभवक कारणेँ ओहिसँ पृथके रहऽ चाहैत अछि । लोभक कारणेँ दुर्दशाग्रस्त भऽ उबरल व्यक्तिक अनुभव एहि फकड़ामे स्पष्ट होइत अछि–

'एक बेर बभ्भ्यो गलफर फट्यौ । बघबर पन्थ चील्ह से बच्यौ ॥
जे नहि जानय बनसीक प्यौ । तकरा आगाँ बनसी द्यौ ॥

जकरा जाहि वस्तुक अवगति नहि छैक से ताहि वस्तुक आलोचक नहि भऽ सकैछ । **'गुआरक सराहल माछ आ मलाहक सराहल दही'** दूनू एके रंग होइत अछि ।'

खाद्यान्नमे मेजनक महत्त्व अत्यधिक अछि । कहबीयो छैक–

'मडुआ मीन चीन संग दही । कोदोक भात दूध संग सही ।''

उपयुक्त मेजनक प्रभावेँ कदन्नो नीक खाद्य भऽ जाइत अछि ।

जीवनमे व्यावहारिकताक अपन महत्त्व छैक । व्यवहारहीन मनुष्य पतित होइत अछि । पतितक लक्षणक ई पाँती द्रष्टव्य–

माछ सङे दुधखिचड़ी खाय । मरला बहुक नैहर जाय ॥
बाट चलैत जे गाबय गीत । डाक कहय जे तीनू पतीत ॥

माछक स्वभाव छैक जे ओ चलता पानिमे धाराक विपरीत दिशामे चढ़ैत अछि । घुट्ठी भरि बहैत पानिकेँ चाँछ कहल जाइत छैक । चाँछ पर चढ़ल माछ सहजतापूर्वक मारि खा जाइत अछि । एहि आधार पर उपलक्षण अछि **'चाँछ पर चढ़ब'** ओ **'चाँछ पर चढ़ायब ।'**

माछ मारबाक हेतु मलाह जाहि ठाम पानिक घेर-बेढ़ करैत अछि ओहि स्थानकेँ *बाड़ी* कहल जाइत छैक । परिचित व्यक्ति बाड़ीपर आबि नमस्कारपूर्वक माछक याचना करैत छैक । मुदा बाड़ीपर जँ मलाह सभ परिचितकेँ माछ बँटने फिरय तँ अत्यधिक व्यावसायिक हानिक संभावना छैक । तँ ओ ओहिठाम कयल नमस्कारक जबाब नहि दैत अछि । **'मलाह ने राखय सलाह'** एही सन्दर्भमे कथित अछि । सदिखन सङ देनिहार जँ बेर उपस्थित भेला पर निःस्पृह भऽ जाय तँ ओकर कार्य केँ **'सबठाम तँ राम राम, बाड़ी पर नै राम राम'** कहल जाइत छैक ।

खत्ता-खुत्तीसँ माछ मारबाक हेतु आरि बान्हऽ पड़ैत छैक, पानि उपछऽ पड़ैत छैक । ई सब श्रमसाध्य होइत छैक । फलसँ अभिरुचि नहि रखनिहारकेँ श्रमक कोन प्रयोजन ? कहबीयो अछि–**'मारी माछ ने उपछी पानि'** ।

छोट-छोट माछकेँ रौदमे सुखाकऽ सुरक्षित कऽ लेल जाइछ आ सुदूर प्रदेश मे विक्रयार्थ पठाओल जाइछ । सुखाओल माछकेँ *सुकठी* कहल जाइत छैक । पहिने मलाह सभ नेपाल जाय सुकठीक व्यापार करैत छल । एहिसँ व्यावसायिक लाभक संगहि पशुपतिनाथक दर्शनक धार्मिक लाभ सहजहिँ प्राप्त भऽ जाइत छलैक । एकटा मुख्य कार्यमे प्रवृत्त भेने अनेक आनुषंगिक लाभ स्वतः भेटि गेला पर **'सुकठीक बनिज आ पशुपतिक दर्शन'** लोकोक्तिक प्रयोग होइछ ।

माछक अंगमे सीराकेँ उत्तम आ पुच्छीकेँ अधम बूझल जाइत छैक । कहबीयो अछि, **'सीरा खाय मीरा पुच्छी खाय गुलाम ।'**

माछक खण्डकेँ कुटिया कहल जाइछ । असमान वितरणपर व्यंग्य अछि **'ककरो कुटिया ककरो झोर, ककरो आँखिसँ बहै छैन्ह नोर ।'** आमद अयबासँ पूर्वहि खर्चक प्राक्कलनकेँ ***'पानी मे मछरी, नौ नौ कुटिया बखरा'*** कहल जाइत छैक ।

माछ आन खाद्य सभसँ महग होइत अछि । जकरा उपाय छैक से तँ पाइ दऽ कऽ माछ कीनैत अछि मुदा जकरा उपाय नहि छैक तथापि माछ खयबाक लति छैक ओ माछक बदला अन्नो-पानि दऽ माछ कीनैत अछि । देय अन्नकेँ बेच कहल जाइत छैक । माछ बेचक ओजनक अधिया, बरोबरि, डेढ़ी भेटैत

छैक । तेँ बेचसँ माछ किननिहारक घरमे अन्नोक क्रमिक कमी होमऽ लगैत छैक ।

'बेच दऽ कऽ जे कीनथि माछ । ताहि घर लछमी खल खल नाच ।।'

लोकोक्ति मे जे विपरीत लक्षणा अछि से ध्यातव्य ।

माछ मारलाक बाद अधिक काल रहने सड़ि जाइत छैक । क्रमहि ओकर स्वादमे विकृति आबऽ लगैत छैक आ दू तीन दिनुक बाद तेँ ओ बेकारे भऽ जाइत अछि । यैह गति गृहागत पाहुनोक होइत छनि । पहिल दिनुक पहुनाइमे जतेक सत्कार भेटैत छनि से दोसर दिन नहि आ क्रमहि घटैत दू तीन दिन बाद तेँ पाहुनक पाहुनत्वो समाप्त भऽ जाइत छनि । कहबीयो अछि **'माछ आ पहुना, तीन दिन कहुना ।'**

माछक अनेक सहचर जीव सभ होइत छैक । कठोर कवचसँ युक्त एकटा जलीय जीव काछु होइत अछि । कठोर कवचक कारणेँ बगुला ओकर किछु ने बिगाड़ि सकैत छैक । माटि धयने रहबाक प्रवृत्तिक कारणेँ ई जल्दी जालोमे नहि फँसैत अछि । शारीरिक बनाबटि ओ बौद्धिक प्रवृत्तिक कारणेँ ओकरा पर धपायल बगुलाक प्रति ओकर गर्वोक्ति सर्वथा स्वाभाविक लगैछ–

'की बक हेरसि दीठी । सए सए जाल घड़कि गेल पीठी ।'

माछक अन्य सहचर अछि काँकोड़ । एकर सन्ततिये एकर माँसु खा कऽ एकरा नष्ट कऽ दैत छैक । अपने कृत्यसँ अधोगति प्राप्तिक अर्थमे **'कँकोड़बा बियान कँकोड़बे खाय'** उक्तिक प्रयोग होइत अछि ।

कारी रंगक एकटा जलीय जन्तु जोँक होइत अछि । ई पानिमे गेल आन जीवक देहमे सटिकऽ ओकर खून चूसऽ लगैत अछि। ककरोसँ सटिकऽ नीक जकाँ लाभ उठयबाक हेतु उपलक्षण अछि **'जोँक जकाँ लागब ।'**

पानीमे गोहि नामक पैघ ओ भयानक जन्तुक साम्राज्य रहैत छैक । ककरो साम्राज्यमे रहि ओकर संग प्रभुत्वक प्रदर्शन नहि सम्भव । **'पानिमे रहि गोहिसँ कतहु गौलैसी भेलैक अछि ?'**

बगुला पक्षी माछक बीछल शत्रु अछि । जलाशयक कातमे ई एक टाङ पर ठाढ़ सुच्चा तपस्वी जकाँ ध्यानस्थ रहैछ । अबैत जाइत माछपर एकाग्रचित्तताक संग एकर लक्ष्य संधानकेँ, **'बगुलबा धेयान'** कहल जाइत छैक । माछक स्फुरण होइत देरी ई तपस्वी टप दऽ ओकरा लोलसँ पकड़ि लैत अछि । बगुलाक एही कपटचालिक अनुरूप कपटी साधुकेँ *'बगुला भगत'* कहल जाइत छैक ।

कथ्य अछि जे एकटा बगुला जलाशयक सभटा माछ खयलाक बादो तृप्त नहि भऽ सकल आ लोभवशात् काँकोड़ सभकेँ खयबाक उद्योग कयलक । मुदा काँकोड़ ओकर गरदनिमे चाङुर भिड़ा ओकर हत्या कऽ देलक । बगुलाक एहि परिणतिक अनुरूप लोभ संवरणक मानदण्डक रूपमे कथ्य अछि–

अतिशय लोभ बगुलबे किन्हा । क्षणमे प्राण कँकोड़बे लिन्हा ।।'

माछक जलीय शत्रु मध्य ढोर साप सेहो उल्लेख्य अछि । कष्टपूर्ण प्रयास

केँ **'ढोर हाँकब'** कहल जाइत छैक । अयोग्य व्यक्तिक देखाबाकेँ **'जानी ढेँढ़क मन्त्र ने दी दराधक माथा हाथ'** द्वारा प्रकट कयल जाइछ ।

माछक अनेक प्रभेद अछि । एहि प्रभेद सभमे रोहुकेँ सबसँ नीक बूझल जाइत छैक । कहलो गेल अछि–**'उड़न्तमे बगेडी, गरन्तमे ओल आ जलन्तमे रोहु'**। अनका द्वारा उकाठी लारबाक कारणेँ जखन आनक क्षति होइत छैक तेँ कहल जाइत छैक **'टेङरा पोठी चालि दिअय रोहुक सिर बिसाय ।'**

अत्यन्त नीक वस्तु कतबो खराब किएक ने भऽ जाय तथापि अनेको वस्तुक अपेक्षा उत्कृष्टे रहैत अछि । **'सड़लो भुन्ना तेँ रोहुक दुन्ना'** एही सन्दर्भ मे प्रयुक्त होइत अछि । स्वादक दृष्टियेँ **'रोहुक मूड़ा, भुन्नाक पेट, दहीक उपर, गुड़क हेठ'** प्रशस्त मानल जाइत अछि ।

माङुर माछ सेहो अपन अपूर्व स्वादक हेतु प्रसिद्ध अछि । कहबी अछि–

'माघ मास जँ माङुर खाइ । ससरि फसरि वैकुण्ठे जाइ ।।

साधन रहितो कतेको गोटे आलस्यवश ओकर उपयोग नहि कऽ पबैछ । **'तरे तरे सौरा जाय कोढ़िया कुत्ता छुच्छे खाय'** एहने ठाम चरितार्थ होइत अछि।

स्वादिष्ट वस्तु अल्पो मात्रामे भेटि गेने लोक भरि पेट खा लैत अछि । कहबीयो छैक–**'एक पोठ पर नौ रोट'** । मुदा जखन पेट भरल रहैत छैक तेँ नीको खाद्य दिस ध्यान नहि जाइत छैक । एहने ठाम कहल जाइत छैक **'अघायल बककेँ पोठी तीत ।'**

जखन महाविनाशक काल अबैत छैक तेँ सक्रियतामे वृद्धि भऽ जाइत छैक । फतिंगाकेँ अन्तिम समयमे पाँखि भऽ जाइत छैक । तेल सधि गेने दीपक टेमी बेस प्रकाशित भऽ उठैत छैक । *'छोटा पानि चह चह कर पोठी'* लोकोक्तिक प्रयोग महाकवि विद्यापति एही सन्दर्भमे कयने छथि ।

भोरा, ढलोइ आदिकेँ नीक माछ नहि मानल जाइछ । कहबीयो अछि **'तोरा के पुछौ गे ढलोइ'** आ **'भोरा खाय से घोड़ा खाय'** । मुदा मछखौक लोक तेँ अधलाहो माछकेँ ग्रहण करितहिँ अछि । नीक अधलाहपर बिनु विचार कयने प्रतिज्ञा भंग कयनिहारपर फकड़ा अछि–

'भुल्ला माछ कबइ के झोर । तइ लय भुल्ला कंठी तोर ।।'

एहने कंठी तोड़निहार मछखौकक सम्बन्धमे कहल जाइत अछि जे **'ई ओहि जन्मे मलाह छल ।'**

एतावता मलाह जातिक व्यावसायिक जीवनसँ सम्बद्ध औजार ओ उत्पादन सामग्री पर आधारित शताद्धं लोकोक्ति मिथिलाक जनजीवनमे प्रचलित अछि । एहिसँ ई तथ्य उद्घाटित होइछ जे एहि नदीमातृक देशक प्राचीनतम व्यवसाय जल-व्यवसाये थिक ।



विद्यापतिक राधाक स्वरूप

भारतीय धर्मसाधना ओ साहित्यिक परिकल्पनाक भावविग्रह राधा सौन्दर्य ओ स्नेह, राग ओ अनुराग, त्याग ओ विवेकक साक्षात् प्रतिमाक रूपमे भारतीय जनमानसकँ सरल, तरल ओ सत्वर करैत रहल छथि। वृन्दावनविहारी श्रीकृष्णक प्रणयसंगिनी राधाक स्वरूप पर पर्याप्त विमर्श होइत रहलनि अछि आ विभिन्न विद्वानलोकनि अपन-अपन निकतीसँ हिनका तौलैत रहलाह अछि। राधाक स्वरूपमे भक्ति ओ अनुरक्ति, ऐहिकता ओ पारलौकिकता, वस्तुनिष्ठता ओ भावनिष्ठता, सहजता ओ रहस्यवादिताक तेहन नीर-क्षीर संयोजन रहलनि अछि जे हिनक स्वरूपमे एकतामे अनेकता ओ अनेकतामे एकता दृष्टिगोचर होइत अछि।

ब्रह्मवैवर्त्त पुराणक लीलाविलासक अतिरिक्त पौराणिक साहित्यमे राधा परमेश्वर श्रीकृष्णक प्रकृतिस्वरूपा शक्तिक रूपमे चित्रित छथि। मुदा राधाक स्वरूपक अपरिमित विस्तार जयदेवक गीतगोविन्दमे भेल अछि। एहिमे काम-कला ओ हरिस्मरण; आसक्ति ओ भक्ति दुहूकँ एके संग काव्यक उद्देश्य कहल गेल अछि–

यदि हरिस्मरणे सरसं मनो, यदि विलासकलासु कुतूहलं।
मधुर कोमलकान्तपदावलीं शृणु तदा जयदेव सरस्वतीम्॥[1]

मुदा प्रभावक दृष्टिञे गीतगोविन्दमे हरिस्मरणक अपेक्षा विलासकला-कुतूहलेक प्रधानता दृष्टिगोचर होइत अछि आ एकर काव्यकला रसिकजनकँ, हरिचरण-शरणसँ बेसी कोमल कलावती युवतीयेक सौन्दर्यक आनन्द दिअयबामे सफल भेल।[2]

जयदेवसँ अनुप्राणित भऽ विद्यापति सेहो राधाकृष्णलीलाकँ ताहि रूपमे अपन पदावली साहित्यमे सजौलनि जे ओ हुनका अभिनव जयदेवक रूपमे प्रतिष्ठापित कऽ देलकनि। हिनक राधामे राधाक पौराणिक स्वरूप ओ लोकावृत प्रणयी जीवनक तेहन सितासित संगम देखि पड़ैत अछि जे राधाक एहि अभिनव छविमे भक्ति ओ शृंगारक नीर-क्षीर संयोजनक कारणेँ भक्तकँ अपन हृदयक उद्गार, शृंगाररसिककँ अपन प्रियतमा, कामशास्त्रीकँ काम कलाविन्यासक शिक्षिका, मधुर भक्तकँ अपन स्त्रैण प्रतिच्छवि ओ रहस्यवादीकँ परमात्माक हेतु जीवात्माक दर्शन भेलैक।

राधाक एहि बहुआयामी छवि पर विचार करैत डा० शिवप्रसादसिंहक मान्यता अछि जे–'राधाक ई मूर्त्ति जे वेदकालक पृथ्वी रूपमे प्रस्फुटित भऽ नाना

पुराणक देवीरूप, लक्ष्मी, श्रीरूप तथा तन्त्रमे वर्णित देवी रूपसँ पुष्ट होइत मध्यकालीन प्रेमप्रधान काव्यमे प्राणप्रतिष्ठा प्राप्त कऽ जयदेवक काव्यक राधाक रूपमे उपस्थित भेल–विद्यापतिकेँ ओहिना प्राप्त भेलनि, जेना कोनो परिवारक व्यक्तिकेँ पूर्वजक सम्पत्ति अपन सम्पूर्ण गरिमा, अन्धविश्वास, गन्दगी, शुभ्रताक समवेत गुणदोषक संग प्राप्त होइत छैक।[3] डा० शैलेन्द्रमोहनझाक शब्दमे राधाक जाहि प्रतिमामे ओ (विद्यापति) प्राण-प्रतिष्ठा देलनि ओ एक दिस यदि अपन कौतूहल चकित मनोवृत्तिसँ मानवी अछि तँ दोसर दिस कविक विशुद्ध साधनाक भावमूर्त्ति, सौन्दर्यलक्ष्मी। राधाक एहि रूपमे वास्तव ओ अवास्तवक युगपत् सम्मिश्रण अछि।[4]

विद्यापतिक राधाक बहुआयामी छविमे हिनक तीन गोट स्वरूप स्पष्टतः दृष्टिगोचर होइत अछि–

1. राधाक वैष्णवी स्वरूप
2. राधाक कामशास्त्रीय स्वरूप
3. राधाक काव्यशास्त्रीय स्वरूप

राधाक वैष्णवी स्वरूप :

पौराणिक वैष्णव भक्तिसम्प्रदायमे राधा परमेश्वरक शक्तिस्वरूपा महामाया, सत्व, रज, तमोगुणसँ युक्त; सृष्टि, स्थिति ओ विनाशक कारणभूता पराशक्ति छथि। परमेश्वर अपन लीला विस्तारक हेतु हिनक स्वरूपमे एकटा सम्पूर्ण नारीकेँ मांसल शरीर सौन्दर्य संभारक संग अपन प्रियतमाक रूपमे अवतरित करौलनि अछि। वृन्दावनेश्वरक प्रणयी जीवनक परकीया सहचरी राधा दिव्य रूपसौन्दर्यक आभासँ द्युतिमान भेलि अपन तन-मन-जीवन श्रीकृष्णकेँ प्रत्यर्पित कयने छथि। वृन्दावनक सघन निकुञ्ज, कालिन्दीक कूल हिनक प्रणयलीलाक निकेतन अछि। समस्त गोपकन्यामे श्रीकृष्णक सर्वाधिक प्रिया प्रेमोन्मत्ता राधा अपन समष्टिकेँ श्रीकृष्णमे उझीलि देबाक हेतु आकुला-व्याकुला रहैत छथि। सामाजिक बन्धनसँ निर्द्वंद्व राधाक परपुरुष-निरतिमे दिव्यताक आरोपपूर्वक हिनक चरित्रकेँ सुरक्षित कयल गेल अछि।

राधाक एहि शक्तिस्वरूपक अभिव्यंजना विद्यापतिक 'कत-कत लछमि चरणतल नेओछय' मे भेटैत अछि। श्रीकृष्णक प्रणयी जीवनमे ई हुनक सर्वाधिक प्रिय वल्लभाक रूपमे चित्रित भेलीह अछि।

'कत अछ युवति कलामति आने। ताहि मानय जनि दोसर पराने॥

पूर्वानुरक्ता राधा श्रीकृष्णक प्रेममे तेना पागलि छथि जे **'बाँसि निसास गरल तनु भोर'** भेलि **'जउनिक तीरे-तीरे साँकड़ि बाटि'** पर **'अगमने पेम गमने कुल जाएत'**क चिन्ताक अछैतो सामाजिकताक बान्हकेँ तोड़ि प्रेमक विजयपताका

फहराबैत क्रीड़ा-कौतुकमे लागलि रहैत छथि आ अन्तमे विरहिणीक व्यथिता स्वरूपमे परिणत होइत छथि ।

राधाक विलासलीलाक उच्छल ओ चंचल आवेगमे मांसल प्रेमटाक अभिव्यंजना भेल अछि, मुदा राधाक प्रीति ओ अनुरक्तिक वास्तविक स्वरूपकेँ कवि हिनक विरह-प्रसंगक गीतमे स्फुट कएलनि अछि । विद्यापति *'सेहे पिरीति अनुराग बखानिअ तिल तिल नूतन होय'*क कवि छथि । हिनका दृष्टिमे **'टुटइत नहि टुट प्रेम अद्भूत', 'दारुण पेम तबहि नहि टूटत बाढ़त विरहक बाधा', 'पुरुष पेम हेम समतूल', 'पहुसंग कामिनि अधिक सोहागिनि चान्द निकट जइसे तारा'** प्रेमी जीवनक शाश्वत सत्य थिक आ एहि सत्यक अन्वेषी राधा **'हृदयक वेदन वाण समान'** सहैत रहैत छथि । विरहिणी राधाक जीवनमे जखन पुनः मिलनक अवसर अवैछ तँ हिनक मनोभावमे आनन्दक पराकाष्ठा देखि पड़ैत अछि ।

कि कहब हे सखि आनन्द भोर । चिरे दिन माधव मन्दिर मोर ॥

एतावता पुराणमे वर्णित राधाक स्वरूपमे कवि हिनक प्रेमलीलाक परम्परित आख्यानकेँ साहित्यिक अभिव्यंजना देलनि अछि । राधाकृष्णक लीलाविलाससँ संबद्ध हिनक प्रेम कवितामे भाव, रस ओ भङ्गिमाक दृष्टियेँ साधारण भारतीय प्रेमकविता-धाराक अनुसरण भेल अछि ।

गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदायमे भजनक रूपमे स्वीकृत विद्यापतिक पदावलीक राधाक स्वरूपमे भगवत्प्राप्तिक हेतु भक्तक विह्वल हृदयक कल्पना कयल गेल । राधाभावान्वित भक्त परमेश्वरक सान्निध्यक हेतु प्रणयोपचार ओ अनुराग-चेष्टापूर्वक अपनामे पत्नीत्वक आरोप कऽ पतिपरमेश्वरकेँ प्राप्त करबाक हेतु तत्पर भेल । भक्त ओ भगवानक सम्बन्ध मधुर भाव पर आधारित दाम्पत्य सम्बन्धक स्वरूपकेँ धारण कयलक आ एहि सम्बन्धक वाहिका भेलीह चिरअनुरागमयी राधिका । सहजिया वैष्णव सम्प्रदायमे राधाक रहस्यवादी स्वरूपक कल्पनापूर्वक हुनका जीवात्माक प्रतिनिधि मानल गेल जे सखीदूती रूप गुरुक सहायतासँ परमात्मा श्रीकृष्णकेँ प्राप्त करबाक हेतु आतुर-व्याकुल रहैत छथि ।

परवर्ती वैष्णव सम्प्रदायक राधाक एहि द्विविध व्याख्यात स्वरूप पर पर्याप्त विवेचन भेल अछि । ग्रियर्सन राधा ओ माधवक प्रणय-सम्बन्धकेँ भक्त ओ भगवानक दाम्पत्य-सम्बन्ध कहलनि । डा० नगेन्द्रनाथगुप्त राधा ओ माधवक स्वरूपमे जीवात्मा ओ परमात्माक आप्तिक दर्शन कएलनि । डा० जनार्दन मिश्रकेँ राधामे मधुराभक्ति ओ रहस्यवादक नीर-क्षीर संयोजन दृष्टिगोचर भेलनि ।

मुदा हिनकालोकनिक मतमे पूर्वाग्रहग्रस्तता देखि पड़ैछ । एहि पूर्वाग्रहक कारण अछि आलोचकलोकनिक बंगीय वैष्णव सम्प्रदायवादी नजरि आ कथित

सम्प्रदायमे विद्यापतिक पदावलीक भजनावलीक रूपमे मान्यता ।

अपन एहि स्वरूपमे राधा स्नेहसँ मान, मानसँ प्रणय, प्रणयसँ राग, रागसँ अनुराग ओ अनुरागसँ भावक क्रमिक उपभोग करैत अन्तमे अधिरूढ़ महाभावक प्रेम-दशाकेँ प्राप्त करैत छथि । ई समाधिक अवस्था थिक जखन द्वैतभाव अद्वैतभावमे परिणत भऽ जाइत छैक आ भेदाभेदक ज्ञान लुप्त भऽ जाइत छैक ।[5]

मुदा अधिकांश विद्वान राधाक एहि स्वरूपसँ असहमत छथि । म० म० हरप्रसादशास्त्री विद्यापतिक पदकेँ पूर्णतः शृंगारिक मानलनि अछि । डा० उमेशमिश्र ओ पं० रमानाथझा विद्यापतिक कवितामे लौकिक प्रेमक अंग-प्रत्यंगक अभिव्यंजना मानलनि अछि । डा० सुभद्रझा परमात्माकेँ निरपेक्ष होयबाक कारणेँ राधाक स्वरूपमे जीवात्माक आरोपकेँ अस्वीकार कएलनि अछि । पं० शिवनन्दनठाकुर तँ विद्यापतिक राधाभावक रहस्यवादिताक अत्यन्त उग्र स्वरमे विरोध करैत कहलनि अछि जे-'जँ एहि प्रकारक प्रवृत्ति बलात् लदबाक परम्परा चलाओल गेल तँ भय अछि जे कोनो दिन अभिज्ञान शाकुन्तल सदृश शृंगार प्रधान ग्रन्थमे सेहो शकुन्तलाकेँ जीवात्मा ओ दुष्यन्तकेँ परमात्मा मानि ओहिमे रहस्यवादक (अर्थात् पतिक रूपमे ईश्वरोपासनाक) कल्पना कऽ लेल जाय आ एहि तरहेँ शृंगार रसकेँ सभ दिनक लेल दुनियाँसँ बहिष्कृते कऽ देल जाय ।[6]

राधाक कामशास्त्रीय स्वरूप :

कामशास्त्रमे नारी ओ पुरुषक रतिलीलाक सम्यक् विवेचनपूर्वक जाहि दुइ गोट वस्तु पर ध्यान केन्द्रित कयल गेल अछि से थिक कामिनी-लक्षण ओ कन्या-विस्रंभण । कामिनी-लक्षणक अन्तर्गत नारीक वाह्य सौन्दर्य ओ आन्तरिक प्रकृतिक विवृत्ति आ कन्या-विस्रंभणक अन्तर्गत प्रणयोपचारक विविध आयामक सूक्ष्मातिसूक्ष्म विश्लेषण भेल अछि । एहि शास्त्रक प्रारंभिक उद्देश्य छल- प्रणयी जीवनमे संतुलन स्थापित कऽ ब्रह्मानन्द सहोदर कामानन्दक सम्पूर्णतामे सर्वसाधारणक सहज उपभोगकेँ आर सहज कऽ चतुर्वर्गमे एहू वर्गक प्रति संवेदनाक सन्तुलन । मुदा पछाति एहि शास्त्रक मूल प्रयोजन इन्द्रियसुख धरि सीमित भऽ गेल । इन्द्रिय सुखक प्रति रूढ़ आसक्ति ततेक व्यापक भऽ गेल जे कला ओ सौन्दर्यक नापे कामशास्त्रीय आधार पर होमऽ लागल । साहित्यमे नारी-सौन्दर्य ओ नारीक विभिन्न उत्तेजक अंगक वर्णन कामशास्त्रीय प्रभावहिसँ भेल । शक्ति ओ देवीक स्वरूप पर्य्यन्तमे नारीक उत्तेजक अंगक वर्णनकेँ पुष्कल परिवेश भेटलैक । तुंगकुचा, सुश्वेतस्तनमण्डला[7], पीनोन्नत घनस्तनी[8], विम्बोष्ठी, पदनखनिर्जितमदना[9], आदि विशेषणक ध्यान ओ स्तोत्रमे प्रयोग एहि तथ्यकेँ स्फुट करैत अछि । एतेक धरि जे शक्ति ओ देवीलोकनिक आचारमे कन्या विस्रंभनक सेहो सहायता लेल गेल । कुमारसंभवमे कालिदास पार्वती ओ परमेश्वरक लीला-विलासकेँ

उपजीव्य बनौलनि । जयदेव विष्णुकेँ **'श्रित कमलाकुचमण्डल**[10] कहि सम्बोधित कयलनि तँ शंकराचार्य हुनका **'लक्ष्मीलसत्कुचसरोरुह राजहंस'**[11] 'क प्रतिष्ठा देलनि । स्वभावत: परकीया राधाक कामशास्त्रीय स्वरूपमे नारीसौन्दर्यक वृहत् आयामक अतिरंजित चित्रांकन भेल आ हिनक केलिविलासमे प्रणयोपचारक अनावृत आलेखन । परिणामस्वरूप राधा केलिविलासक शिक्षिकाक रूपमे प्रकट भेलीह ।

राधाकेँ माध्यम बनाय विद्यापति रतिक विभिन्न अवस्थामे कामशास्त्रमे वर्णित कामोत्पादक उपचार नखक्षत, दन्तक्षत, प्रहणन, मर्दन, आश्लेष, चुम्बन आ रतिकेलिक विभिन्न मुद्राकेँ सचित्र प्रस्तुत कऽ देलनि अछि । सुरतलीलाक उल्लासमय वातावरणमे कवि विपरीतो रतिक मनोरम चित्र खचित करबामे कनेको कुंठित नहि छथि । मांसल प्रेमक एहि ऐन्द्रिय व्यापार, दैहिक सुखक एहि अनावृत विवरणमे कामी जीवनक नग्न प्रदर्शन भेल अछि । नारी-सौन्दर्य ओ लीलाक प्रति अभिभूत कवि राधाक अंग-उपांग ओ प्रणयलीलाक तेहन स्थूल ओ निरावृत विवरण प्रस्तुत कयलनि जे सहजहिँ इन्द्रियलिप्साटा कविक उद्देश्य बुझना जाइत अछि ।

तथापि मानव-हृदयक सुप्त वासनाक सहज ओ मनोहर चित्रांकनक आलम्बन राधा अपन विरहिणी स्वरूपमे आकस्मिक विश्लेषक अतीन्द्रिय पीड़ाक कारणेँ ततेक संतुलित छथि जे हिनका पर नग्नताक आरोप करब अपन विदग्धताक अभाव प्रदर्शित करब होयत । किन्तु अनेक आलोचक विद्यापतिकेँ कामुक ओ घोर श्रृंगारिक कहि हिनकापर अश्लीलताक आरोप लगबैत छथि । प्रसिद्ध विद्वान आचार्य रमानाथझाक हिसाबेँ 'विद्यापतिक नजरिक समक्ष यौन जीवनक पूर्ण चित्र छल-यौन जीवनदर्शनक स्पष्ट धारणा । हुनका लेल ओ मानव-हृदयक एक गोट मूल भावनाटा नहि छल आ ने मानव जीवनक एकटा मूल उद्देश्ये-एकटा जैविक आवश्यकता । हुनका नजरिमे प्रेम एकटा दैहिक आवश्यकता छल, जीवनमे आनन्दक एकटा स्रोत छल । विद्यापति द्वारा चित्रित स्त्रीक यौनजीवनक चित्रावली ततेक वास्तविक, पूर्ण, विविध ओ रंगीन, कल्पनायुक्त, अनुभूतिपूर्वक अभिव्यक्त, मधुर शब्दात्मक ओ रञ्जित अछि जे कामिनीविलासकेँ पूर्णतामे सिखबाक हेतु तथा प्रेमीकेँ पूर्ण संतोष दैत यौन-जीवनक आनन्द पयबाक हेतु स्त्रीलोकनिकेँ यौन-शिक्षा देबाक काज करैत छल ।'[12]

एहि आधार पर विद्यापतिक राधा कामशास्त्रक विदग्धा शिक्षिका-प्रशिक्षिका छथि । राधा द्वारा यौनवृत्तिक वस्तुपरक आलेखन भेल अछि । मुदा कविक राधाक विलासलीलाक एक गोट अंशमात्र पर आधारित राधाक एहि स्वरूपकेँ अव्याप्ति दोषसँ ग्रस्त कहल जा सकैछ ।

राधाक काव्यशास्त्रीय स्वरूप :

विद्यापतिक राधाकेँ काव्यशास्त्रीय स्वरूपमे श्रृंगार रसक अधिष्ठात्री देवीक रूपमे प्रतिष्ठापित कयल गेल अछि । रसराज श्रृंगारकेँ अपन पूर्ण ओ बहुआयामी परिवेशक संग राधामे समेटल गेल अछि । राधाक अंग-सौष्ठवमे श्रृंगार रसक तीक्ष्ण उद्दीपन विभावक कल्पना भेल अछि । राधाक *बिजुरीक रेहक समान कान्ति, साँमर झामर कुंचित केश, कुचयुग चारु चकेबा, अधर विम्ब, दसन दाड़िमबिज, लोल कपोल, कम्बु कण्ठ, लोचन चकित चकोर, कुटिल कटाख, पीन पयोधर, खीन माझ, गरुअ नितम्ब, करभ कोमल कर, पल्लवराज चरणयुग*, गजराज-गति आदि नारी सौन्दर्यक विविध आयामकेँ श्रृंगारक परिपोषक उद्दीपन विभावक रूपमे चित्रित कयल गेल अछि ।

आश्रयालम्बन ओ विषयालम्बन दुहूक हेतु राधाक उपयोग भेल अछि । नायिकाभेद निरूपणकेँ समष्टिमे राधामे समेटल गेल अछि । **'निअ पिअ पेम हेम सम हारि, अँगिरल कामिक दुहू कुल गारि', 'परक रतन परगट कर कोय'; 'परक रतन आनि मत्रे देला' 'परक पेयसि आनलि चोरि'** आदिमे जँ राधाक परकीया स्वरूप स्पष्ट अछि तँ मान, मिलन ओ विरहक अनेकश: पदमे हिनक स्वकीया स्वरूपोक प्रति सन्देह नहि कयल जा सकैछ । स्वीयात्वक प्रतिष्ठा कऽ राधाक प्रणयकेँ सामाजिकताक मोहर लगयबाक हेतु कवि **'भल भेल राधे भेल निरवाह, पानिगहन विधि भेल विवाह'** द्वारा राधाक गान्धर्व विवाहो करा देलनि अछि ।[13]

'नवि अभिसारिनि पहिल परसङ्ग, पुलकित होय सुमरि रतिरङ्ग'मे राधाक मुग्धा स्वरूपक अभिव्यञ्जना भेल अछि तँ **'ए सखि लाजे की कहब तोहि, कान्हक कथा पुछह जनु मोहि'**मे हिनक मध्याक स्वरूपकेँ स्फुट कयल गेल अछि । मानप्रसंग, अभिसार ओ विदग्धविलासक पदमे राधाक प्रौढ़ा स्वरूपक अत्यन्त मनोरम चित्रण भेल अछि । प्रणयी जीवनक विभिन्न अवस्थाक अनुसार राधाक स्वरूपमे नायिकाक आठो भेद-स्वाधीनभर्तृका, खण्डिता, अभिसारिका, कलहान्तरिता, विप्रलब्धा, प्रोषितभर्त्तृका, वासकसज्जा ओ विरहोत्कंठिता केँ निरूपित कयल गेल अछि । एहि समस्त प्रभेदमे राधाक अभिसारिका, कलहान्तरिता, प्रोषितभर्त्तृका ओ विरहोत्कंठिताक चित्र अत्यन्त हृदयावर्ज्जक भेल अछि । एकर अतिरिक्त नायिका भेदक धीरा, अधीरा, धीराधीरा, रूपगर्विता, प्रेमगर्विता, विदग्धा, अनुशयाना, प्रवत्स्यतपतिका आदि सेहो राधामे समाहित अछि, जे काव्यशास्त्रक अनुरूप अभिव्यंजित भेल अछि । नायिकाक अङ्गज, यत्नज ओ अयत्नज अलंकार, विविध अनुरागचेष्टा, कामदशा आदिक काव्यशास्त्रीय निरूपण राधाक माध्यमे भेल अछि । आठो सात्विक भाव एवं समस्त संचारी भावकेँ रतिक सम्पोषणक हेतु विद्यापति संयोजित कयलनि अछि आ समष्टिमे राधाक काव्यशास्त्रीय

स्वरूपमे श्रृंगार रसक नायिकाक छवि अपन समस्त अवयवक संग चित्रित भेल अछि ।

एतावता विद्यापतिक राधामे पौराणिक वैष्णव भक्तिवाद, बंगीय वैष्णव सम्प्रदायवाद, सहजिया वैष्णव रहस्यवाद, अन्योक्तिवाद, काव्यशास्त्र ओ कामशास्त्रक नारी-निरूपणादिक बहुरंगी अनुलेखन अछि । हिनक स्वरूपक सम्बन्धमे मतवैभिन्यकेँ देखि सहजहि मोन पड़ि जाइत अछि ओहि तीन गोट आन्हरक कथा जे बेराबेरी हाथीक पैर, सूढ़ ओ धऽड़ छूबिकऽ कहने छलैक जे हाथी केराक थम्ह, साप आ देवाल थिक, मुदा क्यो ई नहि बूझि सकलैक जे हाथी थिकै की ? तथापि एतबा तँ स्वत: सिद्ध अछि जे राधा विद्यापतिक काव्यक भाव, सौन्दर्य, प्रेम, प्रणय, काम, साधना, आराधना ओ रसविग्रह थिकीह । रसराज श्रृंगारकेँ पूर्णतामे अभिव्यक्त करबाक हेतु कवि हिनक अवतारणा ओ आराधना कयलनि अछि। मैथिली साहित्यमे हिनक एही सर्वमान्य स्वरूपमे अथर्ववेदक देवीक 'अत एवोच्यते अज्ञेयानन्तालक्ष्याजैका नैकेति'वला दृष्टि रहल अछि ।

सन्दर्भ-निर्देश

1. श्रीगीतगोविन्दम्-जयदेव, ठाकुर प्रसाद एण्ड सन्स बुकसेलर्स, राजादरवाजा, कचौड़ीगली, वाराणसी, श्लोक 3
2. तत्रैव 7/8

   हरिचरण शरण जयदेव कविभारती ।
   वसतु हृदय युवतीरिव कोमल कलावती ॥
3. विद्यापति-डा०शिवप्रसादसिंह, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, पो० बॉ० न० 70, वाराणसी-1, 1964, पृ० 125
4. विद्यापति-डा० शैलेन्द्रमोहनझा, मैथिली अकादमी, पटना, 1977, पृ० 59-60.
5. द्रष्टव्य, विद्यापति गीतावली, मैथिली अकादमी, पटना, 1981, पद सं० 191
6. विद्यापति-पं० शिवनन्दनठाकुर, मैथिली अकादमी, पटना, 1996, पृ०-145
7. दुर्गासप्तशती, गीताप्रेस, गोरखपुर, सं० 2027, पृ० 159, 200
8. तन्त्रकौमुदी, सं० रमानाथझा, शाके 1890 पृ० 28
9. स्तोत्ररत्नावली-गीताप्रेस, गोरखपुर, सं० 2025, पृ० 64, 91
10. श्रीगीतगोविन्दम्, पृ० 7
11. स्तोत्ररत्नावली, गीताप्रेस, गोरखपुर, पृ० 126
12. विद्यापति : रमानाथझा, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, 1980, पृ० 50
13. विद्यापति गीतावली, पद सं० 258



विद्यापतिक पार्वतीक स्वरूप

नारीक सामान्यत: तीन गोट रूप होइत छैक-कन्या, भार्य्या एवं माताक रूप । एहिमे प्रथम साधनावस्थाक ओ अपरद्वय सिद्धावस्थाक रूप थिक । मातृरूपमे सिद्धावस्थाक चरम परिणति परिलक्षित होइत छैक । एहि तीनू रूपमे नारीक रति ओ प्रीति, सख्य ओ दास्य, स्नेह ओ वात्सल्य उपर्युपरि रहैछ आ एहि समस्त गुणवत्ताक नियामक रहैछ नारीक सहज त्याग ओ आत्मबलिदानक प्रवृत्ति ।

नारीक एहि तीनू रूपक अत्यन्त सहज जो उत्कर्षपरक आरोप जाहि प्रतिनिधि पौराणिक पात्रमे भेल अछि, से थिकी पार्वती जे गिरिजा, गौरी, उमा, शंकरी, भवानी, शिवा, माहेश्वरी, मेना ओ गिरिराज हिमालयक पुत्री कहल गेलि छथि । साधनावस्थाक उग्र तपस्या द्वारा अभीष्ट मृत्युञ्जय महेश्वर केँ वरक रूपमे प्राप्त करबाक कारणेँ आइयो कुमारिका ओ सधवालोकनि अखंड सौभाग्यक प्राप्तिक हेतु हिनक पूजा करैत छथि । वैवाहिक मंगलमे हिनक वर्चस्व मिथिलाक घर-घरमे प्रचलित एहि मन्त्रमे देखल जा सकैछ–

सा ते भवतु सुप्रीता देवी शिखरवासिनी ।
उग्रेण तपसा लब्धो यया पशुपतिः पतिः ॥

गौरीपूजनक मैथिल परम्परा पर विचार करैत डा० रामदेव झा कहने छथि– "मिथिलामे शिव पत्नी गौरीक पूजा स्त्रीवर्गक आवश्यक कृत्यक रूपमे मान्य अछि । मिथिलाक समस्त नारी समाज सौभाग्यक अधिष्ठात्री देवीक रूपमे गौरीक उपासना करैत छथि। गौरी अपन प्रबल इच्छाशक्ति, साधना ओ तपस्याक बल पर शिव समान ईप्सित वर ओ अचल-अखंड सौभाग्य प्राप्त कयने छलीह । आदर्श दम्पती हरगौरी मिथिलाक नारीवर्गक काम्यविन्दु । अत: सकल सिद्धिदात्री आराध्या गौरीक आराधना ओ उपासना अनुकूल ईप्सित वर, चिर सौभाग्य ओ सुखी परिवारक उपलब्धिक हेतु मिथिलाक कुमारि ओ सधवालोकनि करैत आबि रहलीह अछि । (द्रष्टव्य, शैव साहित्यक भूमिका, मैथिली अकादमी, पटना, पृ० 79-80)

वेद, पुराण, महाभारत, रामायण एवं विभिन्न संस्कृत काव्यग्रन्थक माध्यमे गौरी ओ शम्भुक कथा अनन्त कालसँ भारतीय संस्कृतिक अमूल्य निधि रहल अछि । गौरीशंकरक प्रति जनमानसक सहज भावोद्रेक शत-सहस्र लोकगीतक माध्यमे मुखरित होइत रहल अछि । तथापि मैथिली शैव साहित्यमे उमाशम्भुक

वैवाहिक प्रसंगक व्यापकता देखि पड़ैछ । ई प्रसंग शिवपुराण ओ कुमार संभवम्क कथासँ अनुप्राणित भऽ तथा मिथिलाक लोकजीवनक संग नीर-क्षीर संयोजनपूर्वक मैथिली साहित्यक विशिष्ट निधि रहल अछि ।

महाकवि विद्यापति अपन भक्ति साहित्यक बहुआयामी प्रवाहमे गौरी-शम्भुक कथाधाराकेँ प्रमुख रखलनि अछि । हिनक पदावली साहित्यमे पार्वती शाक्त परम्पराक अनुरूप शिवक शक्तिस्वरूपा सेहो अभिव्यंजित भेलीह अछि मुदा खासकऽ कवि जाहि प्रसंगकेँ अपन पदावली साहित्यक प्रमुख उपजीव्य रखलनि अछि से थिक गौरीक परिणय तथा गार्हस्थ्य प्रसंग । एहन पदावलीमे पार्वतीक पूर्वराग, पतिनिष्ठा, पतिक वित्तहीनताजन्य खिन्नता, साचिव्य, पारिवारिक कलह एवं लीलाविलासक वर्णनमे हिनक स्वरूप स्फुट भेल अछि ।

पार्वतीक पराशक्ति स्वरूप :

पार्वतीक पराशक्ति स्वरूपक अनुगायन महाकवि विद्यापति मार्कण्डेय पुराणक देवीमाहात्म्यक अनुरूप कयलनि अछि । देवीमाहात्म्य (आठम अध्याय श्लोक 13-16) मे पराशक्ति स्वरूपा महामायाकेँ विविध स्वरूपमे उपस्थापित करैत कहल गेल अछि–

ब्रह्मेश गुह विष्णूनां तथेन्द्रस्य च शक्तयः ।
शरीरेभ्यो विनिष्क्रम्य तद्रूपैश्चण्डिकां ययुः ॥
यस्य देवस्य यद्रूपं यथा भूषण वाहनम् ।
तद्वदेव हि तच्छक्तिरसुरान् यौद्धुमाययौ ॥
हंसयुक्त विमानाग्रे साक्षसूत्र कमण्डलुः ।
आयाता ब्रह्मणः शक्तिर्ब्रह्माणी साभिधीयते ॥
माहेश्वरी वृषारूढ़ा त्रिशूलवर धारिणी ।
महाहिवलया प्राप्ता चन्द्ररेखा विभूषणा ॥

एहिना दशम अध्यायक श्लोक छौ मे देवीक विभिन्न स्वरूपमे ऐक्यक परिकल्पना करैत कहल गेल अछि–

ततः समस्तास्ता देवी ब्रह्माणी प्रमुखालयम् ।
तस्या देव्यास्तनौ जग्मुरेकैवासीत्तदाम्बिका ॥

एहि तरहेँ देवीमाहात्म्यक अनुसार पराशक्ति स्वरूपा महामाया जे सकल जगतक सृजन, पालन ओ विनाशक कारणभूता छथि, ज्ञानीयोलोकनिक चित्तकेँ बलपूर्वक वशीभूत कयने रहैत छथि, प्रसन्न भेला पर भुक्ति ओ मुक्तिक वरदान दैत छथि तथा संसारबन्धन ओ मोक्षक हेतुभूता सनातनी महामाया छथि (तत्रैव, अध्याय 12, श्लोक 55-77) मे विभिन्न देवतालोकनिक विभिन्न शक्तिक ऐक्य ओ अनेकत्व प्रतिपादित अछि ।

एही तथ्यकेँ ग्रहण करैत विद्यापति अपन एकगोट शक्तिगीतमे कहने छथि जे जेना सृष्टिकर्त्ता ब्रह्माक शक्तिस्वरूपा ब्रह्माणी छथिन, पालनकर्त्ता विष्णुक शक्तिस्वरूपा लक्ष्मी छथिन तहिना गौरी सेहो संहारकर्त्ता शिवक शक्ति स्वरूपा छथि–

ब्रह्मा घर ब्रह्माणी कहिअए हर घर कहिअए गौरी ।
नारायण घर कमला कहिअए के जान उतपति तोरी ॥

पार्वतीक पूर्वराग

महाकवि विद्यापति पार्वतीक दर्शनजन्य पूर्वरागक वर्णन कतोक पदावलीक माध्यमे कयलनि अछि । पूर्वरागक वर्णनमे एकाध ठाम अलौकिकता अछि ने तऽ सर्वत्र सहजता दृष्टिगोचर होइछ । अल्पवयस्का गौरीक पूर्वरागमे अलौकिकता एहि पदमे द्रष्टव्य अछि– (द्रष्टव्य, हरगौरी विवाह नाटक-जगज्ज्योतिर्मल्ल, सम्पादक-डा० रामदेवझा; पृ० 50)

ए माइ हे मोहि अजगुत लागु । सुतलि गोरि जोगिआ देखि जागु ॥
जाहि जोगिआ देखि दुरहि पराइ । ताहि जोगिआ कोर गोरि खेलाइ ॥

कुसुम चयनक क्रममे गौरीक पूर्वरागक वर्णन अत्यन्त सहज भेल अछि (द्रष्टव्य मित्र-मजुमदार, गीत सं० 787)–

ए माँ कहह पुछों तोही ।
ओहि तपोवन तापसि भेटल कुसुम तोड़य देल मोही ॥
आँजलि भरि कुसुम तोड़ल जे जत अछल जाँहाँ ।
तीनि नयने खने मोहि निहारय बइसलि रहलि जाँहाँ ॥

एहिना गौरी परिणयक कतिपय गीतमे सेहो पूर्वरागक सहज छटा द्रष्टव्य–

–कओने वर आनल तपसिया । गौरि मुगुधि भेलि देखि रंगरसिया ॥
(भाषा गीत संग्रह, गीत सं० 67)

–दोसर विधि पड़िचाँ चढ़ि बैसलाहे जखने दिगम्बर आइ रे ।
लाजक लेल गोरि नहि आबए सखि सबे गेलि पड़ाइ रे ॥
(भाषा गीत संग्रह, गीत सं० 76)

पार्वतीक पूर्वरागक सर्वाधिक उदात्त ओ मर्यादित चित्रांकन महाकविक मेनाविलापसँ सम्बद्ध गीत सभमे देखि पड़ैछ । वरक रूपमे प्रस्तुत शिव कुरूप, बूढ़, भङ्गताह, वित्तहीन, कुलपरिवारविहीन छथि । एहन जमायकेँ देखि मेनाक वात्सल्य अनिष्टक आशंकासँ करुणामे बदलि जाइत अछि आ ओ हाक्रोश कऽ उठैत छथि । पुत्रीक अनमेल विवाहक असंतोषसँ ओ क्रमशः प्रतिरोध, विरोध ओ विद्रोहक स्थिति धरि चलि जाइत छथि । मुदा परिवेश बाधक छनि ।

विद्यापति पार्वतीक परिणयप्रसंगमे मिथिलाक संस्कृतिकेँ अक्षुण्ण रखबाक यत्न कयलनि अछि। डा० रामदेवझा एहि परिवेशक विवेचन करैत कहलनि अछि– 'वर द्वितीय होउक, बूढ़ होउक, विरूप होउक, निर्धन होउक, मुदा द्वार पर जखन आबि गेल तँ घूमि नहि सकैछ। मिथिलाक ई प्रथा सामाजिक मान्यता रहल अछि। लोकलज्जाक भय, सामाजिक मर्यादाक भय, वैयक्तिक अप्रतिष्ठाक भय कन्याक जीवनमे कन्याक बापक विवेकक आगाँमे पहाड़ बनि कऽ ठाढ़ भऽ जाइत छैक। कन्याक माए कतबो हाक्रोश करओ, कतबो चीत्कार करओ, विरोध ओ विद्रोह करओ, मुदा रहैत अछि अबला, विवशा आ विवशतामे स्वीकृति देबहि पड़ैत छैक।' (द्रष्टव्य, मैथिली शैव साहित्य, मैथिली अकादमी, पटना, पृ० 49)

स्वभावत: शिव-पार्वतीक विवाहकेँ कन्याक माता-पिताक स्वीकृति भेटिए जाइत छैक। एहन परिस्थितिमे कन्या विवश भऽ जाइत अछि। भाग्यवादेटाक आश्रय ओकर एकमात्र आदर्श गति बचि पबैत छैक। 'विवाहो जन्ममरणञ्च यदा यत्र भविष्यति' केँ अवधारि कन्या अपन शील, आदर्श, कृतज्ञता, आर्थिक परिस्थितिजन्य विवशताक अनुरक्षणे श्रेयष्कर बूझैत अछि। गौरी सेहो सएह करैत छथि–

कह जगजननि जननि सौ चिन्ता छाडु हमारि।
जतए जाएब ततहि दुख सुख लिखल मेटल नहि जाय॥
(मि० म० 904)

गौरीक एहि चरित्रमे महाकवि मैथिल ललनालोकनिक अनमेल विवाहजन्य सामाजिक शोषणक यथार्थपरक चित्र उपस्थापित कऽ एहि प्रथाक विरुद्ध अप्रत्यक्ष दिशा निर्देशकक काज कयलनि अछि। तथापि एहि चित्रसँ पार्वतीक पूर्वराग सेहो द्योतित होइछ।

एकटा गीतमे तँ महाकवि गौरीक पूर्वरागक चरम परिणतिक चित्र उपस्थापित कऽ हुनक प्रेमीक प्रति दृढ़ भावनाविन्यासक उल्लेख कयने छथि–

जोगिआ मन भावइ हे मनाइनि॥
आएल बसहा चढ़ि विभूति लगाए हे।
मन मोर हरलन्हि डमरू बजाइ हे॥
सुन्दर गात अजर पति से नहि।
चितसौँ नइ छूटइ छथि जानथि किछु टोना हे॥ (मि० म० 783)

महाकविक एकमात्र पदमे कन्या जीवनक विवशताजन्य आक्रोशक अभिव्यक्तिमे प्रगतिशीलताक पुट देखि पड़ैछ–

माए ने सोचल बाप ने खोजल खोजल दैव अपने।
विहिक लिखल मेटि ने पाबए झाँखिअ मनहि मने॥
(विद्यापति गीतावली, मै० अ०, पटना, पद सं० 8)

पार्वतीक पतिनिष्ठा

महाकवि विद्यापति विवाहक बादक पार्वतीक पतिनिष्ठाक अत्यन्त उत्कर्षपरक चित्रण कयलनि अछि। विवाहक तुरत बादेसँ पार्वती अपन उन्मत्त वरक सुरक्षा-परिचर्यामे सन्नद्ध वर्णित भेलीह अछि, वित्तहीन वरकेँ सासुरक उपेक्षा भावसँ अवमानित भेलापर खिन्न दर्शाओल गेलीह अछि।

एक बेर महादेव गंगाजलसँ रंगभूमिकेँ सिंचित कऽ देलनि आ ओहिसँ भेल पिच्छड़ पर खसि पड़लाह। गौरी हुनक अवलम्बनक हेतु दौड़ि पड़ैत छथि–

गंगा जले सीचु रंगभूमि।
पिछड़ि खसल हर घूमि घूमि।
अवलम्बने गोरि तोरए जाय॥ (मि० म०, गीत सं० 789)

गौरीक द्वारा अवलम्बनक ई प्रक्रिया उन्मत्तहु वरक प्रति हुनक सहज अनुराग ओ स्नेहशीलताकेँ अभिव्यंजित करैछ। पति खाहे केहनो अधलाह प्रकृतिक किएक ने रहौक तथापि पत्नीत्वक ई धर्म थिकै जे ओकर अनुगामिनी बनलि रहय। भारतीय नारीक एहि सांस्कृतिक आदर्शकेँ महाकवि एहि पदमे गौरीक चरित्र ओ भावदशाक माध्यमे स्फुट कयलनि अछि।

शिवक अंग, वेष, वसन, आयुध, स्वभाव, परिजन आदिक विकृति एवं विसंगतिक चित्रण शैवसाहित्यक प्रधान उपजीव्य रहल अछि। कविलोकनि मेना, पुरनागरिका आदिक माध्यमे शिवक विभिन्न विकृति पर चिन्ता अभिव्यक्त करौलनि अछि। महाकवि विद्यापति सेहो एहि प्रकारक अभिव्यक्तिसँ बाँचल नहि छथि तथापि गौरीक समर्पणभाव ओ निष्ठामे कनेको दोच नहि आबऽ देलनि अछि। अपितु पतिक प्रति सामाजिकक काकु-कुचेष्टासँ हुनक प्रेमकेँ क्रमश: दृढ़तरे होइत वर्णित कयलनि अछि। पत्नीत्वक सर्वाधिक विशिष्ट ओ श्रेष्ठ गुणकेँ समेटने ओ सर्वथा समर्पिता, सहज समरसता ओ सायुज्यसँ युक्ता वर्णित भेलीह अछि। सामाजिक जीवनक सामान्य नव परिणीता जकाँ हिनको पतिक निन्दा असह्य लगैत छनि आ हुनक विकृतियेमे अपन कर्मफलकेँ नियोजित बूझि गौरी स्पष्ट रूपेँ सभकेँ शिवनिन्दासँ विरत करैत वर्णित भेलीह अछि–

केओ नहि किछु कहइन्हि हिनकहूँ।
पुरविल लिखल छला मोर पहू॥ (मि० म० गीत सं० 907)

एकटा पदमे तँ गौरीक शिवक प्रति समर्पण भावक अत्यन्त स्फुट अभिव्यंजना भेल अछि । शिवक विकृतियोमे हुनका सौन्दर्येक अनुभूति 'जा की रही भावना जैसी । प्रभु मूरति देखी तिन तैसी ।।'[4] मानसिकतासँ उद्भूत देखि पड़ैछ–

'तीन लोक के एहो छथि ठाकुर गौरी देवी जान ।।

(मि० म०, गीत सं० 908)

वित्तहीनता मानव जीवनक सबसँ दुखद स्थिति अछि । ई सर्वाधिक ग्लानिप्रद होइत छैक सासुरक सर-सम्बन्धी लग । ओहूमे खास कऽ जँ वित्तहीनताक कारण सासुरक परिजनक बीच उपेक्षा, भर्त्सना, निन्दा होइत छैक तँ सर्वथा असह्य भऽ उठैत छैक । मुदा से जमाए पक्षक हेतुएँ । सासुरबस्सू बेटी तँ सासुरक अपमानकेँ परिधान जकाँ लपेटने रहैत छथि । तथापि हुनक पतिक, खासकऽ वित्तहीन पतिक जँ सासुरमे हुनके नैहरक परिजन द्वारा उपेक्षा होइत छनि तँ अनन्त सहनशीलतासँ युक्त होइतो नारी-हृदय शेष-रोषसँ सम्पन्न भऽ जाइछ । तथापि नैहरमे माता-पिता, भ्राता आदिक विरुद्ध बजबासँ विवश ओ भीतरे भीतर कुहड़ि कऽ रहि जाइत छथि ।

विद्यापतिक एक गोट गीतमे गौरीक एहि परिस्थितिक अत्यन्त स्फुट चित्रण भेल अछि । शंकर जखन प्रथमे प्रथम सासुर गेलाह तँ हिनक वृद्धावस्था ओ वित्तहीनताक कारणेँ केओ हिनका प्रति साकांक्ष नहि भेल । स्वभावतः ई उपहासक पात्र बनल रहलाह । गौरी नैहरेमे छलीह । पतिक ई दयनीय दशा देखि ओ घाड़ झुकौने ठाढ़ि रहलीह मुदा माता-पिताकेँ ई द्योतित नहि कयल जे हुनके पति अयलथिन अछि–

प्रथमहि शंकर सासुर गेला । बिनु परिचय उपहास पड़ला ।।
पुछिओ ने पुछलके बैसल जहाँ । निरधन आदर के कर कहाँ ।।
हेमगिरि मंडप कौतुक बसी । हेरि हँसल सबे बुढ़ तपसी ।।
से सुनि गौरि रहलि सिर नाय । के कहत मा के तोहर जमाए ।

(प्राचीन गीत, पद सं० 15)

एहि गीतक माध्यमे विद्यापति गौरीक चरितमे लज्जा ओ शील, पतिनिष्ठा ओ नैहरक प्रति व्यामोहक द्वैध बीच संघर्षक यथार्थपरक चित्र उरेहलनि अछि । एकटा मैथिल कन्या अपन अकिञ्चन पतिक सासुर अयला पर सासुरक लोक द्वारा अवमानना कयला पर ओहिसँ उत्पन्न ग्लानिकेँ कोना माता-पिता ओ नैहरक सम्बन्धक आधार पर गीड़ि जाइछ आ मर्यादाक रक्षाक हेतु चूँइ तक नहि करैछ तकर ई अद्भुत उदाहरण अछि ।

पार्वतीक पतिनिष्ठाक चरम परिणति विद्यापतिक ओहन पद सभमे भेटैत अछि जाहिमे वैयक्तिक वा पारिवारिक कलहसँ रूसल शिवक वर्णन भेल अछि। एहन पदमे कवि पार्वतीकेँ स्वकीयाक सहज सहानुभूतिसँ अभिभूत चित्रित

कयलनि अछि । शिवक वेष, वसनादि तथा रुसबाक विविध परिस्थितिक परिकल्पनापूर्वक कवि पार्वतीक मनोमस्तिष्कक उद्वेलनकेँ चरम स्थिति धरि प्रक्षेपित कयलनि अछि ओ अप्रत्यक्ष रूपसँ हुनक सेवा, समर्पण ओ निष्ठाकेँ समुचित आयाम देलथिन अछि । द्रष्टव्य अछि–

–गौरी दौड़ी दौड़ी पुछथिन हे, मोरा भंगिया रूसल जाय ।
–मोरा बउरा देखल केहु कतहु जात । बसह चढ़ल विषपान खात ।।
–हम सौं रूसल महेशे । गौरि विकल मन करथि उदेशे ।।
–केहु देखल नगना । भिखिआ मङइते बुल अङने अङना ।।
–विकटजटाचय किछु न लोकभय हे उर फनिपति दिगवास ।।
कओने पथ भेटताह हे आगे माई । जाइत उमत हमार ।।

एहि प्रकारक गीतमे पार्वतीक पारिवारिक जीवनक कलह-विरहमे मध्यवित्तीय ग्राम्या नारीक करुणाकेँ स्फुट अभिव्यक्ति भेटलैक अछि ।

पतिक वित्तहीनता जन्य खिन्नता

विद्यापतिक विभिन्न पदावलीमे पार्वतीकेँ पतिक वित्तहीनताक कारणेँ खिन्न चित्रित कयल गेलनि अछि । भिक्षाटन पर आश्रित शिवक प्रति गौरीक भाव एहि पदमे अत्यन्त मार्मिक स्वरूपमे उपस्थापित भेल अछि–

दुखे बोलय भवानी । जगत भिखारि मिलल हमे सामी ।।

कखनो कवि कोनो पुरबासीक मुहेँ कहबैत छथि–

पैंच उधार माङय गेलहुँ अङना । धनमे तँ धन भेटल भाङ्गघोटना ।।

कखनो गौरीक खिन्नता एहि रूपेँ प्रकट भेल अछि–

शिव शिव ओरे सगर सम्पत्तिमे भसम झोरी ।
की झाँखथि गौरी कौन परि जायत जनम मोरी ।।

एकटा गीतमे गौरीक मनोवेदनाक चरम परिणतिकेँ चित्रित करैत कवि शिवसँ विवाह होयबाक दैवी विडम्बनाक प्रति पार्वतीक आक्रोशकेँ अभिव्यंजित कयलनि अछि । गौरी सासुरमे छथि । घरमे सम्पत्तिक नाम पर केवल भसमक झोरी भेटैत छनि । भोजन वस्त्रक उपाय नहि छनि, पैंचो उधारक कोनो व्यवस्था नहि । बेटा भूखल छथिन । हुनका परबोधबाक कोनो उपाय नहि देखि पड़ैत छनि–

सकल सम्पत्ति मइ जोहि अइलाहु पावल भसम झोरी ।।
न घर संबर न पीठि अंबर ना मिल पैंच उधारे ।।
तनय वापुर भुखे वेआकुल किए मञे देव अहारे ।।

गौरीकेँ चिन्ता छनि जे शिव स्वयं तँ विषो खा कऽ पड़ल रहताह, हुनक शेष तँ हवे पीबि कऽ गुजर कऽ लेत मुदा हमरालोकनिक कोन उपाय हैत–

वासुकि जीउति पवन पीउति हरे जीउबि विष खाइ ।
सेवक स्वामि दुहू भल मीलल हमर कोन उपाइ ।।

अन्तमे कवि गौरीक सन्तापमे हुनका द्वारा दैवी विडम्बनाक एहि स्थितिमे पूर्वजन्म कृत पापकेँ हेतु कहौलनि अछि–

पेट पचकल गाल चोटकल पाकल भौँहेरि गोछी ।
ताहि बुढ़ा हाथ ओ विहि देलहु ते मञे पापिनि धोंछी ॥

एहि तरहेँ महाकवि पार्वतीक मनोव्यथामे सामान्य वित्तहीन परिवारक नारीक भाग्यबादी प्रवृत्ति तथा पराश्रितिक उद्घाटन कयलनि अछि । मुदा एक दिस जँ शिव अपना हेतु अकिञ्चन छथि तँ दोसराक हेतु अपरिमित दाता छथि । गौरीकेँ हुनक उदारताक प्रति कनेको क्षोभ नहि छनि मुदा अपन पारिवारिक दायित्वक प्रति सेहो ओ पतिकेँ सामान्य नारी जकाँ साकांक्ष करबाक यत्न करैत देखाओल गेलीह अछि–

जोगिआ हमर जगत सुखदायक, दुख ककरो नहि देल ।
ताहि जोगिआ के भांग पिआकए, धथुर पिआए धन लेल ॥

पार्वतीक साचिव्य

विद्यापतिक किछु पदावलीमे गौरीक सचिव स्वरूपक अत्यन्त उत्कृष्ट वर्णन भेल अछि । शिवक भिक्षाटनक वृत्ति हुनका पसिन्न नहि छनि । ओहिसँ आत्मसम्मान नष्ट होइत छैक तथा सामाजिक उपहासक कारण बनऽ पड़ैत छैक। पतिक आत्मसम्मानकेँ स्खलित होइत के नारी सहि सकैत छथि ? पार्वतीयो निरन्तर हुनका उद्यमी बनबाक मंत्रणा-प्रेरणा दैत रहैत छथिन । एकटा पदमे शिवकेँ कृषि कर्मक हेतु उपदेश दैत गौरीक साचिव्य अत्यन्त उत्कृष्ट रूपेँ अभिव्यक्त भेल अछि–

बेरि बेरि अरे शिव मोञे तोञे बोलञो किरिसि करिय मन लाइ ।
बिनु संवर हर भिखिअ पए माङिअ गुन गौरव दुर जाय ॥

गौरीक स्नेहशील पत्नीहृदयमे शिवक व्यसनी स्वभावक परिष्कारक प्रति सचेष्टताक वर्णनमे विद्यापति कतोक पदमे हुनक 'करणेषु मंत्री' स्वरूपकेँ अत्यन्त उत्कर्ष धरि उत्थापित कयलनि अछि । एक बेर शिव भाङक निसाँमे धुत्त छथि आ बसहा परसँ खसि पड़ैत छथि । बसहा पड़ा जाइत छनि, हाड़माल छिड़िया कऽ हेरा जाइत छनि, डमरू फूटि जाइत छनि, भस्म उड़िया जाइत छनि। गौरीकेँ शिवक ई हालति देखि करुणा उमड़ि पड़ैत छनि आ ओ शिवकेँ व्यसनसँ दूर होयबाक कान्तासम्मित उपदेश दैत चित्रित होइत छथि–

बुढ़हु वयस हर वेसन न छाड़ले की फल वसह धवाइ ।
भाग भेल शिव चोट ने लागल के जान की होइति आइ ॥
बसहा पड़ायल के जान कतय गेल हाड़माल की भेल ।
फुटि गेल डमरू भसम छिड़िआएल अपथे सम्पत्ति दुर गेल ॥

हमर हँटल हर तोँह नहि मानह अपन हठ वेवहारे ।
सगरो जगत सबहु कञे सूनिअ घरनि बोल नहि टारे ॥

एतऽ पतिक प्रति गौरीक सहज स्नेह ओ तरलताकेँ कवि 'भाग भेल शिव चोट ने लागल के जान की होइति आइ' तथा साचिव्यकेँ 'सगरो जगत सबहु कञे सूनिअ घरनि बोल नहि टारे' क विश्वजनीन वाक्य द्वारा प्रकट कयलनि अछि। 'पथे सम्पत्ति दुर गेल' कहायकेँ कवि व्यसनी पतिक कारणेँ नष्ट होइत परिवारक दुर्दशाक विरुद्ध जनचेतनाकेँ उभारलनि अछि ।

पारिवारिक कलह

शिव-पार्वतीक पारिवारिक जीवनक कलहक वर्णन सेहो विद्यापतिक शैव पदावलीक विशिष्ट उपजीव्य अछि । एहि कलह वर्णन पर टिप्पणी करैत डा० रामदेवझा समुचिते कहलनि अछि– 'सामाजिक सन्दर्भमे ई कलह वर्णन सभ तत्कालीन मैथिल समाजक अन्तःपुरक अश्रुत कथा कहैत अछि । असूर्यम्पर्श्या नारीक अन्तश्चित्रकेँ उरेहैत अछि जे सब युगमे समाजक परोक्षेमे बनैत रहलैक अछि । सामाजिक वा वैयक्तिक जीवनक ओहि कलहक वर्णन अछि जकर ने केओ श्रोता होइत अछि ने मध्यस्थ ।

एहि प्रकरणमे देखब जे विद्यापति पार्वतीकेँ शान्त, संयत, सन्तुलित, व्यवस्थित गृहिणीक रूपमे एवं शिवकेँ वृद्ध, भिक्षुक, हठी, व्यसनी एवं कलहप्रिय रूपमे चित्रित कयने छथि । (द्रष्टव्य, मै० शै० सा० पृ० 61)

एहि प्रकारक पदावलीमे पार्वतीक संयम ओ पतिव्रतक चरम उत्थापन भेल अछि । कतहु हुनका प्रतिवाद करैत नहि देखल जाइछ तथापि अनेक पदमे ओ नारीक सहज नैहर-प्रेमक कारणेँ नैहर पड़ा जयबाक धमकी दैत चित्रित भेलीह अछि आ नैहरकेँ उकटला पर कचकचाइत विन्यस्त भेलीह अछि ।

एहि तरहेँ विद्यापतिक पार्वती पराशक्ति जगन्माता, पूर्वरागानुगा कन्या ओ एकनिष्ठ पत्नीक स्वरूपमे अभिव्यंजित भेलीह अछि । दाम्पत्य जीवनक कलह-विरह, वित्तहीन परिवारक नारीक मानसिकता ओ सामान्य नारीक सहचरी-अनुचरीक स्वरूपकेँ कवि अपन पदावलीक तीक्ष्ण अभिव्यंजनाक मूलमे रखलनि अछि ।

लीला विलास

शिव पार्वतीक दाम्पत्य रति ओ स्वकीयाक माध्यमे शृंगारलीला आदिक हेतु पर्याप्त परिवेशक अछैतो कवि जेना एहि दिससँ अनुन्मुख रहलाह । यद्यपि हिनका लग कुमारसंभवमक आदर्श छलनि तथापि शिव-पार्वतीक शृंगार वर्णनकाल जेना कवि पर पार्वतीक पराशक्तिस्वरूपक, शिवक परब्रह्म स्वरूपक भावेक वर्चस्व रहलनि, रघुवंशक मंगलाचरण 'वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थ प्रतिपत्तये।

जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ //'क भावविन्यास माता-पिताक शृंगारलीला वर्णनसँ मोड़ैत रहलनि । तेँ हिनक पदावली साहित्यमे शिव-पार्वतीक प्रणयी जीवनक स्फुट अभिव्यक्ति नहिञे जकाँ भेल अछि । तथापि रस शृंगारक प्रतिष्ठापक कविक लेखनी अत्यन्त संयत रहि कतोक ठाम रतिक संकेत दैत देखि पड़ैछ । यथा–

प्रियदर्शनजन्य कामदशा

–जखने हेरलि हरे तीनिहु नयने । ताहि अवसर गौरि पीड़लि मदने ॥

–बीधि करैत हर ओरे घूमि खसू । ससरि खसल फनि सिरि गौरि हसु ॥

मानापनोदनक दान उपायक अवलम्बन

–चान भङाय देब चूड़ा । सुरसरि नीर समारब जूड़ा ॥

–भुखला भाङ देअओ विस सानि । चढ़हुक बसहा देबउ पलानि ॥

सत्त्वज अलंकार 'हसित'

–गौरि मुख हास उदय जनि भेल । हर मन भेल चान उगि गेल ॥

नृत्य विलास

–राखल गौरा के मान नाचि देखाओल हे ॥

पार्वतीक मातृरूपक उदात्त अभिव्यक्ति महाकविक शैव पदावलीमे नहिञे भऽ सकल अछि, यद्यपि सन्ततिक वर्त्तमान ओ भविष्यक प्रति चिन्ताधाराक सहज लोकस्वरूप कतोक पदमे ताकल जा सकैछ ।

एतावता विद्यापतिक हरगौरी पदावलीमे पार्वतीक दिव्य स्वरूपक अनुरक्षण ओ लोकस्वरूपक अनुगायन भेल अछि । लोकस्वरूपमे पार्वती निरीह किंवा मर्यादित मैथिल कन्या तथा निम्नवित्तीय परिवारक आदर्श पत्नीक रूपमे वर्णित भेलीह अछि । कवि हिनक चरितमे *'कार्येषु दासी, करणेषु मंत्री, भाज्येषु माता, शयनेषु रम्भा'* क पत्नीचरितक प्रथम दुइ भागक प्रति अत्यन्त साकांक्ष रहलाह अछि । पार्वतीसँ कवि वाल्मीकिक एहि उपदेशवाक्यकेँ अक्षरशः परिपालन कराय हिनकामे पौराणिक भारतीय आदर्श नारीचरितक पुनःर्व्यवस्थापन ओ पुनःप्रस्तुति कयलनि अछि–

दुःशील कामवृत्तो वा धनैर्वा परिवर्जितः ।

स्त्रीणामार्यस्वभावानां परमं दैवतं पतिः ॥

(वाल्मीकीय रामायण 2/117/24)



सुमनजीक मुक्तककाव्यमे नारी

भारतीय जीवन-दर्शनमे नारीकेँ पुरुषक पुरुषार्थप्रवर्त्तिनी शक्तिक प्रतीक मानल गेल अछि । नारी पूजनक परम्परा एहि संस्कृतिक विशिष्टता रहल अछि । नारी ओ पुरुषक सहअस्तित्वमे वाक् ओ अर्थक सहभाव कल्पित अछि आ एही सहअस्तित्वमे भारतीय सामाजिक जीवन मूर्त्त भेल अछि । वस्तुतः मानवक सृष्टि, स्थिति ओ पालनमे नारीक योगदान सर्वथा श्लाघनीय अछि । ओकर सहज सुलभ सौन्दर्य, आत्मत्याग ओ मानवताक हेतु बलिदानी प्रवृत्ति पुरुषक पौरुषकेँ आन्दोलित-हिन्दोलित करैत रहल अछि । नारी ओ पुरुषक पारस्परिक सहयोगहिमे मानव-जीवनक सुख ओ मंगलकामना साधित अछि । नारीक बिना पुरुषक कल्पना आ पुरुषक बिना नारीक अस्तित्वक कोनो आधार नहि । माता, पत्नी, प्रिया, बहिन, पुत्री आदि विभिन्न रूपमे नारी मानव जीवनकेँ अनुप्राणित करैत रहल अछि ।

साहित्यकेँ समाजक दर्पण कहल गेल अछि । एहिमे सामाजिक जीवनक यथार्थ कल्पनाक आवरणक संग प्रतिबिम्बित होइत अछि । सत्यकेँ शिव रूपमे उपस्थित करबाक हेतु सुन्दरताक रंग-टीप करब साहित्यक प्रधान लक्षण अछि । मानव-जीवनक यथार्थ आकांक्षा ओ वासनाक प्रत्यक्ष वा परोक्ष कल्पना साहित्यक उपजीव्य होइत अछि ।

स्वभावतः मानवजीवनक अभिन्न अंग नारीक बहुविध रूपक वर्णन साहित्यमे आदिकालहिसँ होइत रहल अछि । मानवक समस्त क्रियाकलाप, मनन-चिन्तन, लेखन-सर्जनक प्रेरणास्रोत नारी काव्यकलाक अनिवार्य अंगक रूपमे स्वीकृत रहल अछि । प्रसिद्ध विद्वान मेयरक ई उक्ति यथार्थक सर्वथा निकट अछि जे 'कृषक ओ नागरिकक अभावमे काव्यक निर्माण संभव अछि मुदा नारीकेँ हटबिते ओकर जीवन्तता नष्ट भऽ जाइत छैक ।' कमनीयता, कोमलता ओ करुणाक प्रतिमूर्त्ति तथा सेवा, स्नेह ओ त्यागक प्रतिमा नारीक रूपलावण्य ओ असीमित गुण सब दिनसँ काव्यकलाक हेतु प्रेरणा ओ आकर्षणक विन्दु रहल अछि ।

सुमनजीक मुक्तक काव्यमे नारीक बहुविध रूपक चित्रण भेल अछि । अपन समस्त रूपमे नारीत्वक गरिमामंडित परिवेश कविक लेखनीक चमत्कारसँ महिमामंडित भऽ उठल अछि । हिनक काव्यमे चित्रित नारी-स्वरूपक चारि

गोट कोटि अछि–*पौराणिक स्वरूप, प्रकृतिमे आरोपित स्वरूप, काव्यशास्त्रीय स्वरूप आे लौकिक स्वरूप ।*

पौराणिक स्वरूप

पौराणिक स्वरूपमे नारीकेँ आदिशक्ति कहल गेल छनि । सृष्टिक आदिमे यैह दू भागमे विभक्त भऽ पुरुष ओ नारीक सृष्टि करैत छथि । विश्वक धारण, सर्जन, पालन ओ विनाशक यैह कारणभूता छथि । पुरुषरूपमे ब्रह्मक सर्वाधिक निष्क्रिय भाव प्रकट होइत छनि । संसारमे शक्तिरूपा नारिये मायामोह अथवा प्रेमरज्जुसँ बान्हि संसारक समस्त गतिविधिक कारण बनैत छथि । सुमनजीक अंकावलीमे नारीशक्तिक एहि पौराणिक स्वरूपकेँ यथावत ग्रहण कयल गेल अछि–

विधि अवैध हरि हारि हटथि शिव शवहि सुनिश्चित ।
यदि न सृष्टि पालन लय हित पुनि शक्ति समन्वित ।
इच्छा क्रिया ज्ञानरूपा जननी जग जाया ।
काली लक्ष्मी सरस्वती, त्रिगुणात्मिक माया ।

पराशक्तिक विविध रूपक उल्लेख पौराणिक ग्रन्थ सभमे भेल अछि : काली, तारा, षोडसी, भुवनेश्वरी, छिन्नमस्ता, त्रिपुरसुन्दरी, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी, कमला आदि विभिन्न अभिधानमे दसो महाविद्याक रूपमे पराशक्ति स्वरूपा नारीक बाह्यसौन्दर्य ओ अन्तःप्रवृतिक उल्लेख भेल अछि । परा शक्तिक प्रति श्रद्धाभावसँ अभिभूत कवि आनन्दलहरी, चण्डी-चर्य्या, सौन्दर्य-लहरी, शक्तिस्तवक आदि ग्रन्थमे विभिन्न शक्ति स्तोत्रक अनुवाद कयलनि । *अंकावलीमे* सेहो दसो महाविद्याक स्वरूपक वर्णन परम्परिते रूपक भेल अछि । पराशक्तिक धूमावती अभिधानक ध्यान पौराणिक साहित्यमे निम्न रूपेँ भेटैत अछि–

विवर्णा चञ्चला दुष्टा दीर्घा च मलिनाम्बरा
विमुक्तकुन्तला रुक्षा विधवा विरलद्विजा
काकध्वज रथारूढ़ा विलम्बित पयोधरा
शूर्प्प हस्तातिरुक्षाक्षा धूतहस्ता वरान्विता
प्रवृद्धघोषा तु भृशङ्कुटिला कुटिलेक्षणा
क्षुत्पिपासार्दिता नित्यम्भयदा कलहास्पदा

एही ध्यानसँ भावग्रहण कऽ नारीशक्तिक गृहस्वामिनी रूपक वर्णन कविक धूमावती कवितामे भेल अछि । एहि रूपमे नारी अपन वैयक्तिक आशा-आकांक्षासँ निरपेक्ष सतत् गृहकार्यमे अपस्याँत देखाओल गेलीह अछि । एहि रूपकेँ ने वस्त्रक स्वच्छताक ध्यान छैक, ने संसारमे होइत दैनन्दिन परिवर्त्तनक ज्ञान । एकर कार्यक्षेत्र शय्यागृहसँ भनसाघर धरिक छोट सन

परिधिमे संकुचित छैक, मुदा सदिखन हाथमे बाढ़नि-सूप लेने परिवारक योगक्षेममे लागलि रहैत अछि–

मलिन वसन घर द्वारि बहारथि, बाढ़नि हाथहि नित्य
जेना कोना आयलि छथि वेतन-भोगिनि कोनहु भृत्य
सूप हाथ किछु किछु सदिखन फटकैत अन्न भरिपूर
बिच बिच गुन-गुन सोहर-लगनी गबइत बिनु धुनि सूर
शय्यागृहसँ भनसाघर जनिका रुचि बढ़ल विशेष
जे पड़ोसिनिक बात पुछै छथि खबरि न देश-विदेश
ज्ञान जनिक बच्चा जच्चा धरि ध्यानो घरे कुटुम्ब
अक्षर जनिक गोसाञि-नाओ धरि पोथी पतरा लम्ब

शक्तिक एहि रूपक लाथेँ कवि चमत्कारपूर्ण कल्पनाक द्वारा मैथिल नारीक संकुचित कार्यक्षेत्र, अल्प ज्ञान, संयमित जीवन ओ परिवारक प्रति कल्याण-भावनाकेँ अभिव्यंजित कयलनि अछि । नारीक एहि स्वरूपमे जनकल्याणक भाव अनुगुम्फित अछि । कविक नवोन्मेषशालिनी प्रतिभा एहि पद्यमे अत्यन्त स्फुट भेल अछि । पौराणिक पञ्चकन्या–अहल्या, द्रौपदी, तारा कुन्ती ओ मन्दोदरीक चरित्र परम्परित रूपेँ हिनक काव्यमे गृहीत भेल अछि ।

प्रकृतिमे आरोपित स्वरूप

प्रकृतिमे नारीक आरोप मानवक सौन्दर्य-चेतनाक प्रतिफल थिक । सृष्टिक आदिकालहिसँ मानव-मनक सौन्दर्य-चेतना जाग्रत रहल अछि । प्राकृतिक सौन्दर्य मानव-मनकेँ विमुग्ध कऽ ओकर भावनाकेँ अभिभूत करैत रहलैक अछि । सौन्दर्य-साधनसँ मानव-मनक क्लान्ति विस्मृत ओ ओहिमे असीम शान्ति परिव्याप्त होइत रहलैक अछि । प्रकृतिक मोहिनीरूपमे मानव सूक्ष्म-सौन्दर्यक अन्वेषण करैत रहल अछि । विद्युल्लताक छटा, पूर्णिमाक चान, मनोरम वसन्त, मेघक श्यामलता, तटिनीक प्रवहमानता, पिकक स्वरकाकली आ एहने विभिन्न नैसर्गिक उपादान सभ मानवहृदयकेँ निरंतर झकझोरैत रहलैक अछि । प्रकृतिक एहि विभिन्न उपादानकेँ साधर्म्य निरूपणक आधारपर नारीमे आरोपित कऽ कविलोकनि नारी-भावनाक परोक्ष चित्रण करैत रहलाह अछि ।

सुमनजीक प्रकृति काव्य मध्य हिनक **'प्रकृति शतक'** आ **'साओन भादव'** ग्रंथ उल्लेखनीय अछि । *'प्रकृति शतक'* मे प्रकृतिक विभिन्न उपादानमे नारीक उत्तेजक अंग, परिधान किंवा अन्तश्चेतनाक आरोप भेल अछि । वर्षाक इन्द्रधनुषक वक्रतामे नारीक भौँहक कुटिलता, मेघक श्यामलतामे नारीक केशक मनोहरता, बिजलौकामे नारीक गौरवर्णक द्युति, किसलयमे नारीक अधरक सुकोमलता, लत्तीमे नारीक छरहर वदनक सुघड़ता, कोइलीक

ध्वनिमे नारीक सुमधुर स्वरक रसमयता, चन्द्रमामे नारीक मुखक आह्लादकता, फूलक समूहमे नारीक विकसित उरोजक कमनीयता, पल्लवमे नारीक चरणक सुकुमारता, तरेगनमे नारीक विभिन्न आभूषणक चाकचिक्य आदिक आरोप द्वारा प्रकृति-सुन्दरीक विभिन्न वेष, वयस ओ अवस्थाक वर्णन भेल अछि। द्रष्टव्य अछि इजोरिया दाइक हाव, भाव, हेला ओ शोभा–

गोरि नारि मुख चान छवि नभ आङन बिच आइ
पहिरि आभरण नखत कत सजलि इजोरिया दाइ

युवती लताक कान्ति, दीप्ति, प्रगल्भता ओ विच्छित्ति एहि पदमे अत्यन्त रमणीयतापूर्वक अभिव्यञ्जित भेल अछि–

आनखशिख कुसुमाभरण पल्लव पट परिधान
लता युवति मन मत वरण तरुण तरुक सविधान

वसन्तऋतु आ अवनीमे रमणीक आरोप कऽ कवि प्रकृतिमे नारीक सौष्ठवक दर्शन करा 'जतऽ ने जाय रवि ततऽ जाय कवि' आ 'कविः मनीषी परिभूः स्वयंभूः' कें चरितार्थ कऽ देलनि अछि–

तन लतिका सुम गुच्छ उर किसलय अधर प्रमान
अंग चंपके पिक वचन मधु ऋतु रमनि निदान
गिरि उरोज परिसर उदर पुलिन जघन वन केश
सिन्धु वसन पुर ग्राम सुख अवनी रमनी वेश

प्राकृतिक सौन्दर्यक व्याजेँ नारीसौन्दर्यक गायन कविक प्रकृति-काव्यक लक्ष्य बुझना जाइत अछि। नारीक बिम्बक अभावमे हिनक प्रकृतिकाव्य पूर्णताकेँ नहि प्राप्त कयलक अछि। सौन्दर्यक द्रष्टा ओ स्रष्टा कवि द्वारा एकमात्र आलम्बन साओन-भादवमे नारीक विभिन्न रूपकेँ प्रतिबिम्बित कयल गेल अछि। कखनो प्रकृतिप्रिया चिरसोहागिनीक रूपमे प्रस्तुत भेलीह अछि तँ कखनो चिरवियोगिनी, हास्यमयी, इन्द्रजालिनी, विषादमयी, चिरवत्सला ओ चिरन्तन दम्पतीक रूपमे। एहि समस्त रूपमे नारी प्रकृतिक विभिन्न स्वरूप उद्घाटित भेल अछि।

प्रकृतिमे नारीक विभिन्न वयसक आरोपक दृष्टिएँ हिनक शरद कविता अत्यन्त सफल भेल अछि। एहिमे वयःसन्धिक देहरिपर ठाढ़ि शरद-किशोरी सरसिजक व्याजेँ अपन यौवनक सरस सुगन्धिमे दिग-दिगन्तकेँ व्याप्त कयने देखि पड़ैत छथि। प्रकृति सुन्दरीक प्रेम समस्त चराचर जगतकेँ उन्मत्त कयने अछि। एहि अति-व्याप्त प्रेमक प्रभावेँ सुप्त पुरुषोत्तम सेहो शयनक त्याग कयलनि–

प्रेम स्वातिक विन्दु याचक जगत चातक भेल।
जनिक प्रेमक वश पुरुष पुरातनहु उठि गेल॥

प्रकृतिमे आरोपित नारीक व्यक्तित्वमे सौन्दर्यदर्शनेटा अभिप्रेत अछि से नहि, नारीक अन्तःप्रवृत्ति सेहो कविक प्रकृतिकाव्यमे अत्यन्त स्फुट भेल अछि। वृद्धा शरदमे नारीक वात्सल्य, वयसक गरिमा ओ सन्ततिक हेतु योगक्षेमक प्रवृत्ति अभिव्यञ्जित भेल अछि–

हन्त हेमन्तक पवनसँ यदपि कम्पित गात
भेलि वृद्धा शरद धवलित काश केश निपात
किन्तु तखनहुँ अन्नपूर्णा बाध अञ्चल बान्हि
शस्य सन्तति हेतु जोगबथि शरद जननी आनि

चिरवत्सला प्रकृति जननीक विविध उपादान द्वारा विश्व-शिशुक परिपालनक प्रवृत्तिक अभिव्यञ्जनामे नारीक मातृत्वक गरिमा उद्घाटित भेल अछि–

शीत रौदसँ रक्षा पाबओ ने अभाव जल अन्नक दाबओ
खेलओ नित कन्दुक कदम्बसँ मुदित मयूर संग भय नाचओ
मेघक अंचल छायामे हो पोषित वत्स ममत्व नित्य नव
चिरवत्सला प्रकृति जननी केर स्नेहाञ्चल ई साओन-भादव

एतावता सुमनजीक प्रकृतिमे आरोपित नारीस्वरूपमे नारीक बाह्यसौन्दर्य ओ अन्तःप्रवृतिक परोक्ष गायन भेल अछि। हिनक प्रकृतिमे आरोपित नारी-स्वरूपमे कतहु उद्दाम वासना ओ मांसलताक गन्ध नहि अछि। नारी-सौन्दर्यक प्रति सहज चेतनाक आह्लाद हिनक प्रकृतिमे आरोपित नारी स्वरूपक अभिव्यञ्जनामे लक्षित भेल अछि। प्रकृतिमे आरोपित नारीसौन्दर्यक वर्णनमे शालीनता कविक सहज चेतना, समदृष्टि ओ स्वस्थ मनोभावक परिचायक अछि। एहिमे नारी जीवनक आन्तरिक उल्लासक अभिव्यञ्जना जतबे आह्लादक अछि ओकर अन्तर्वेदना ओतबे मर्मभेदी। नारी-हृदयक सुखात्मक ओ दुःखात्मक दुहू पक्षक उद्घाटन कविक प्रकृति-काव्यमे भेल अछि। सरिताक विश्व वेदनाविगलित जीवन मे नारीक पातिव्रत्य, आत्मवेदना, संयम ओ त्यागक आदर्शक आरोप भेल अछि। गंगामे मातृत्वक आरोप कऽ नारीक वात्सल्यक अत्यन्त सहज अभिव्यक्ति भेल अछि–

किन्तु विदित विश्वास ई, जननी हृदयावर्जना
जड़सुत क्रन्दन सुनि यथा, तथा न चतुरक कल्पना

नारीक प्रेयसी-रूपकेँ काव्यमे परकीया कहल जाइत छैक ओ लोकजीवनमे परपरिगृहीता। एकर प्रेममे स्वकीया पत्नीक प्रेमक अपेक्षा अत्यन्त दुर्लभता रहैत छैक। स्वकीयाक प्रति प्रेमक उपभोग अत्यन्त सुलभ रहबाक कारणेँ प्रेम सूक्ष्म स्वरूपमे प्रकट नहि भऽ पबैछ, जखन कि परकीयाक प्रति प्रेम दुर्लभताक कारणेँ बेसी मूल्यवान ओ सूक्ष्म भऽ जाइत छैक। यैह कारण थिक जे काव्यमे परपरिगृहीताक प्रेमक बहुविध रूपक व्यापक विश्लेषण

होइत रहल अछि । एहि काव्यरूढ़िक अनुपालनमे सुमनजी प्रकृतिमे आरोपित नारीक प्रेयसी ओ लौकिक जीवनक मानवी प्रिया स्वरूपक युगपत् ओ तुलनात्मक वर्णन **'प्रिया ओ प्रेयसी'** शीर्षक कवितामे कयलनि । एहि कवितामे प्रेयसीक प्रेमक प्रति अत्यन्त आसक्ति ओ उन्मुखता प्रकट भेल अछि । प्रेयसीकेँ सहचरीक प्रतिष्ठा दऽ एक दिस जँ सामाजिक अवमूल्यन कँ स्वीकारल गेल अछि तँ प्रियाकेँ अनुचरी मात्रक अभिधान दऽ पत्नीत्वक सीमाकेँ संकुचित कऽ देल गेल अछि–

ओ प्रिया रुचि अनुचरी तोँ प्रकृति-प्रेयसि सहचरी
ओकर परिणय उपायन लय तोहर नित प्रेमक वशी
ओ प्रिया तोँ प्रेयसी

मर्यादागर्भित काव्यक रचयिता सुमनजी प्रकृतिक अलौकिक स्वरूप मात्रमे प्रेयसीक आरोप कऽ प्रेमक मर्यादित स्वरूपकेँ उपस्थापित करबामे दत्तचित्त भेलाह अछि आ अपन प्रकृति-प्रेमक विह्वलताकेँ अभिव्यक्त कयलनि अछि । प्रेयसीयोक प्रति प्रेमकेँ कवि सामाजिक परिवेश ओ गरिमा दऽ श्रेयसीक प्रेमक उत्कृष्टताकेँ अत्यन्त मनोहर स्वरूपमे विज्ञापित कयलनि अछि ।

काव्यशास्त्रीय स्वरूप

नारीक काव्यशास्त्रीय स्वरूपक अभिव्यजना सुमनजीक **ललना लहरी** ओ *शृंगारहार* ग्रन्थमे स्फुट भेल अछि । काव्यशास्त्रमे नारीक विश्लेषण नायिका-भेद-निरूपणक क्रममे भेल अछि । एहिमे शृंगाररसक आलम्बन ओ उद्दीपन विभावक रूपमे नारीक विवेचन-विश्लेषण होइत रहल अछि । सामुद्रिक शास्त्र ओ कामशास्त्रसँ प्रभावित रहबाक कारणेँ प्रायः समस्त लक्षण ग्रंथमे नख-शिख सौन्दर्य, प्रकृति, युवावस्था, प्रेमीजीवनक अवस्था, मनोदशा आदिक आधारपर नारीक वर्गीकरण होइत रहल अछि । नारीक यत्नज, अयत्नज ओ सत्वज अलंकार, शत शत सहस मनोरथ, विविधतापूर्ण अनुरागचेष्टा, कामदशा, तिल तिल नूतन सौन्दर्य ओ प्रेमक विवेचन काव्यशास्त्रक उपजीव्य रहल अछि ।

सामुद्रिक शास्त्र ओ कामशास्त्रमे नारीक वर्ण, गंध, स्वर, गति, लावण्य, पैर, आंगुर, नह, चरण, जानु, उरु, कटि, नितम्ब, वस्ति, नाभि, उदर, त्रिवली, वक्षस्थल, उरोज, हँसली, स्कन्ध, हाथ, ग्रीवा, चिबुक, कपोल, मुख, अधर, दाँत, जीह, हास्य, नाक, नेत्र, भौंह, कान, ललाट, कपोल, केश आदि अंगक सूक्ष्मातिसूक्ष्म लक्षण नारीक विभिन्न प्रकारक अनुरूप भिन्न-भिन्न कहल गेल अछि । कामशास्त्रमे मध्यदेश, मालवा, सिंध, पंजाब, गुजरात, केरल, मद्रास, बंगाल, उत्कल, कोशल आदि प्रदेशक नारीक प्रवृत्ति ओ

कामाचरणक विषयमे सेहो विचार कयल गेल अछि ।

एहि शास्त्रसभमे वर्णित नारी-सौन्दर्य ओ अंग-प्रत्यंगक लक्षणादि ततेक लोकप्रिय भेल जे कविलोकनि यथावत् एकरा काव्यविषयक उपकरणक रूपमे गृहीत करैत रहलाह अछि । राजशेखरक काव्यमीमांसामे पौरस्त्य, उदीच्य ओ दाक्षिणात्य देशक नारीक वर्ण-निर्धारण पर्यन्तकेँ काव्यशास्त्रक विषयक रूपमे देखल गेल अछि ।

कामशास्त्र ओ काव्यशास्त्रसँ प्रभावित कवि *'ललना-लहरी'* मे मैथिल, बंग, असम, उड़िया, आन्ध्री, द्राविड़ी, केरली, मराठी, गुजराती, पंजाबिनी, कश्मीरी, राजस्थानी, मागधी, भोजपुरी, ब्रजबाला, कन्नौजी, देहलवी, काशिका, उज्जयिनी, पारसी, यवनी, फिरंगिनी, पार्वती, वनवासिनी प्रभृति विभिन्न प्रदेशक नारीक सौन्दर्य, रुचि-अभिरुचि ओ कामाचरणक लक्षण प्रस्तुत कयलनि अछि । नागरी, ग्रामीणा, छात्री, नेत्री, अभिनेत्री, श्रमिकबालिका, वनबालिका आदि विभिन्न वर्गक नारीक लावण्य ओ परिवेश कविक लेखनीक शृंगार पौलक अछि । रसशास्त्रक स्वकीया, परकीया ओ वेशिनी नायिकाक लक्षण निरूपणक संगहि वेष-वयसक आधारपर कुमारि, नवोढ़ा, सधवा, विधवा आदि नारी-स्वरूपक मनोभावक अभिव्यक्ति सेहो *ललनालहरी*मे भेल अछि । एहिमे देश-भेदक आधारपर नारीक स्वरूपक वर्णनमे कविक विशद् ज्ञान, यायावरी वृत्ति ओ नारी-सौन्दर्यक प्रति एकान्त निष्ठा प्रतिपादित भेल अछि ।

एहि ग्रन्थमे रसशास्त्रक वैदर्भी, गौड़ी, पाञ्चाली ओ लाटी वृत्तिक व्याख्या कवि तत्तद्देशीय नारीक सौन्दर्य, गति ओ रसमयताक आधारपर कयलनि अछि । रसशास्त्रक अनुसार ओज व्यंजक कठिन वर्णसँ बनल समासबहुला उद्भट बन्धकेँ गौड़ी रीति कहल जाइछ । एहि रीतिमे अनुप्रास ओ यमक अलंकारक आधिक्य होइत छैक । सुमनजी सौन्दर्यगर्विता नायिकामे ओजक कल्पना तथा बन्धमे वृत्यानुप्रास ओ यमकक प्रयोग द्वारा गौड़ी नारि ओ गौड़ी रीति दूहूक समानान्तर व्याख्या कयलनि अछि–

गौड़ अंग गुन गौरवित पद समस्त मस्तीक
ओज भरलि-उद्दीपिका गौड़ी गिरा प्रतीक

मुदा नारी-सौन्दर्यसँ अभिभूत कवि एहि पदकेँ रीतिक अनुरूप महाप्राण वर्णक संयोजन ओ समासबहुलताक समावेशसँ बचौलनि अछि जे हुनक ओजपूर्णो नारी छविमे मृदुलता ओ कोमलताक परिकल्पनाकेँ उद्भासित करैछ ।

*शृंगारहार*मे सामाजिक जीवनमे स्थानक आधारपर स्वकीया, परकीया ओ सामान्या तथा प्रणयी जीवनमे नायकक संग सम्बन्धक आधारपर वासकसज्जा, खंडिता, प्रोषितपतिका, प्रवत्स्यत्पतिका, आगतपतिका तथा अभिसारिका नायिकाक मनोभाव ओ अनुरागचेष्टाक विवरणपूर्वक नायिका भेदक निरूपण

भेल अछि । एहिमे अभिसारिका नायिकाक तीन गोट भेद–शुक्लाभिसारिका, दिवसाभिसारिका ओ पुरुषवेशाभिसारिका; गर्विता नायिकाक दूइ भेद-प्रेमगर्विता ओ सौन्दर्यगर्विता; वयक अनुसार नायिकाक दूइ गोट भेद–नवोढ़ा ओ प्रौढ़ा तथा रतिरहस्यक पद्मिनी, हस्तिनी ओ चित्रिणी नायिकाक सेहो उल्लेख अछि ।

वस्तुतः शृंगारहारमे शृंगाररसक अंगोपांगक समग्र तँ नहि मुदा पुष्कल वर्णन भेटैत अछि । एहि ग्रन्थमे सादृश्यमूलक अलंकारक प्रयोग द्वारा चिकुर, सीमन्त, मुख, नेत्र, भृकुटि, कंठहार, उरोज, जघन, त्रिवली, श्रोणी, पैर आदि नारी सौन्दर्यक विविध उपादानक परम्परित स्वरूपक वर्णन भेल अछि । वयः सन्धिक हाव, प्रथम दर्शनक भाव, सद्यःस्नाताक कान्ति, संयोग यो वियोगक विविध उद्दीपन, प्रेमक स्वरूप आदिक वर्णनसँ शृंगार रसक समग्रतामे विवेचन एहि ग्रन्थक लक्ष्य बुझना जाइत अछि । शृंगाररसक अभिव्यञ्जनाक हेतु नारीक विविध अंगोपांग ओ भेद-प्रभेदक वर्णनमे नारीक स्वरूप रीतिपरक कलाविलासक उपादानक रूपमे प्रयुक्त भेल अछि ।

अर्चनामे संकलित वर्णमयी कवितामे कविक वाणीविलासक पराकाष्ठा दृष्टिगोचर होइत अछि । एहिमे व्याकरण ओ काव्यक नीर-क्षीर संयोजन नारीक लावण्यवर्णन द्वारा स्फुट भेल अछि । नारीक अंग, स्वर, गीत, आभरणमे विभिन्न वर्णक प्रतिबिम्ब अभिव्यञ्जित भेल अछि । स्पर्शवर्णक परिचय दैत कविक उक्ति अछि–

कुटिल अलकक वक्र रेखासँ टवर्गक कल्पना
कर-चरण-तल-पल्लवहिसँ चारु वर्ण स्पर्शना

स्पर्श वर्णमे कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग ओ पवर्ग अबैत अछि, से अभिव्यक्त करबाक हेतु नारीक विभिन्न अंगमे ओहि वर्गकेँ आरोपित कयल गेल अछि । एहिमे 'ट' वर्णक कुटिलतामे नारीक अलकक कुटिलताक आरोप अत्यन्त चमत्कारक अछि ।

वस्तुतः उक्तिवैचित्र्य ओ सहृदयरंजनताक दृष्टिऍ हिनक शृंगार-सम्पुटित कविता सभकेँ पढ़ला उत्तर ई लक्षित होइत अछि जे–

सा कविता सा वनिता यस्याः श्रवणेन स्पर्शनेन च
कविहृदयं पतिहृदयं सरलं तरलं च सत्वरं भवति

शृंगार रसक कवितामे नारीक आरोप कविक ओहि काव्यरूढ़िक प्रति चैतन्यकेँ द्योतित करैत अछि जाहिमे काव्यानन्दक सृष्टिक हेतु नारीत्वक परिवेश अनिवार्य मानल गेल अछि । तेँ ई कहल जा सकैछ जे नारीक काव्यशास्त्रीय रूपक अभिव्यञ्जनामे कवि अनुराग ओ शृंगार, चुम्बन ओ आलिंगन, रति ओ विलास, रोमांच ओ स्वेद, स्वकीया ओ परकीयाक रीतिकालीन कविक रूपमे प्रतिष्ठित होइत छथि । हिनक काव्यशास्त्रीय नारी-परिकल्पनामे नख-शिखक प्रमुखता अछि । नारीक शरीरक अंग रूढ़

सौन्दर्यसँ युक्त अछि । गुरु नितम्ब, क्षीण कटि, पीन पयोधर, कपोल, सुन्दर-सुडौल बाँहि, सघन जाँघ, लटुरिया कोमल केश, अर्द्धनिमीलित नेत्र, द्युतिमान सीमन्त, चकचक दाँत आदि समस्त सौन्दर्य-दर्शन परम्परागत अछि जाहिमे मौलिकता ओ नवीनता नगण्ये जकाँ अछि । नारी-सौन्दर्यक समस्त छाया पुरान ओ जर्जर अछि । रीति, वृत्ति, छन्द, अलंकार, भाषा, शैली आदिक चमत्कारमे सर्वत्र पुरातनपंथित्व दृष्टिगोचर होइत अछि ।

मुदा, रीतिक प्रति आसक्त रहितहुँ कवि नारीक स्वरूपक नवोन्मेषक प्रति सेहो सचेष्ट भेलाह अछि । *ललना-लहरीमे* पारिवारिक सम्बन्धक आधार पर माता, बहिन, कुलवधू, पितामही, मातामही, पीसी, मौसी, सासु-पुतहु, ननदि-भाउजि ओ शृंगारहारमे पढ़ुआक वधूक लक्षण-निरूपणमे कवि परम्परासँ हटि नारी-स्वरूपक गरिमामय पक्षक उद्घाटन रीतिमुक्त भऽ कयलनि अछि तथा नारी-चित्रणमे नव दृष्टिकोणक परिचय देलनि अछि ।

लौकिक स्वरूप

लौकिक जगतमे सम्बन्धक आधारपर नारीक मुख्यतः चारिगोट स्वरूप भेटैत अछि–कन्या, पत्नी, प्रेयसी ओ माता । सुमनजीक काव्यमे नारीक एहि समस्त रूपकेँ उपजीव्य कहल गेल अछि । 'कविताक आह्वान'मे माइक ममता, प्रेयसीक नयन संकेत, आगतपतिकाक आशा, कन्याक विदाइ ओ विधवाक अश्रुकेँ काव्यक उपजीव्यक रूपमे चित्रित कयल गेल अछि । एहिसँ *'काव्य ओ नारी'* विषयक कविक दृष्टिकोण अभिव्यक्त भेल अछि ।

काव्यमे कन्याक दूइ गोट रूप सामान्यतः मान्य अछि । शृंगाररसक आलम्बनक रूपमे कन्या परकीया नायिकाक एक गोट प्रभेद होइत अछि तथा वात्सल्य रसक आलम्बन भेलापर ओ माता-पिताक स्नेहक सिद्धि ओ साध्य होइत अछि । पारिवारिक जीवनमे कन्याक परवर्ती रूप माता-पिताक स्नेह ओ वात्सल्य, सहृदयता ओ कोमलता, आनन्द ओ उत्साहक केन्द्र होइत अछि । कन्याक एहि स्वरूपकेँ कवि सहज अभिव्यक्ति देलनि अछि–

घर परिसार चुह-चुह करय चंचल सहज स्वभाव
पिता धन्य ! कन्या कुलक दीप-सिखा जे पाव

कन्या-जीवनक सम्पूर्ण काल नैहरमे बीतैत छैक । पछाति कन्या परकीया भऽ अपन मातृभूमिकेँ छोड़ि दैत अछि । तथापि जीवन भरि ओकर नैहरक प्रति व्यामोह, स्नेह, लगाव ओ ममत्व नहि छूटैत छैक । मैथिली वन्दनामे नारी-जीवनक एहि सुकोमल तत्त्वकेँ कवि व्यञ्जनाक माध्यमे प्रस्तुत कयलनि अछि–

अपना खोंछिक अन्न-कण पोछि नयनसँ अश्रु कण
खसा देलहुँ नैहरक दिस सजल शस्य श्यामल कत न

शैशवक बाद नारीक जीवनमे एहन बेर अबैत छैक जखन ओ अपन समष्टिकेँ पुरुषायत्त कय पुरुषहिमे एकाकार भऽ जाय चाहैछ । एकर कारण होइत छैक किशोरावस्थाक अन्त ओ युवावस्थाक आरंभक वय:सन्धिक वेलामे नारीमे किछु विशिष्ट प्रकृत गुण ओ अनुराग चेष्टा सभहिक जागरण । एहि गुण ओ अनुराग चेष्टा सभहिक वशीभूता नारी अपन समस्त भावात्मक अनुराग, आत्मिक आनन्द, मानसिक उल्लास, मृदुल कल्पना, स्वर्णिम स्वप्न ओ संचित सम्पत्ति ककरो चरणमे उझीलि देबाक हेतु आग्रही देखल जाइत अछि । नारीक ई रूप ओकर प्रेयसी रूप होइत छैक ।

नारीक एहि रूपमे सहज मादकता होइत छैक जे सहजहिँ पुरुषकेँ अपना दिस आकृष्ट कऽ लैत छैक । नारी ओ पुरुषक एहि आकर्षणकेँ प्रेमक संज्ञा देल गेल अछि । ई प्रेम ततबा व्यापक ओ मधुर विषय थिक जे काल ओ देशसँ निरपेक्ष कविभावनामे एकर चित्रण-अनुकीर्त्तन होइत रहल अछि ।

ई प्रेम वस्तुत: दया, वात्सल्य, सहृदयता, क्षमा, कोमलता, त्याग, सेवा, श्रद्धा आदि विभिन्न उदात्त भावनाक सम्मिश्रण होइत अछि । वासनारहित विशुद्ध, आदर्श ओ वास्तविक प्रेमसँ भरलि नारीक प्रेयसी रूपक अभावमे जीवनक कल्पनो संभव नहि अछि । प्रेयसी रहित पुरुषक जीवन नीरस ओ निरर्थक भऽ जाइत छैक । एही भावनाकेँ कवि *ललनालहरीक* तट प्रशस्तिमे अभिव्यक्त करैत कहलनि अछि—

बिनु सुरभिक चन्दन जेना बिनु किरणेँ जनु इन्दु
ललना बिनु जीवन जेना लहरि इन्दु बिनु सिन्धु

भारतीय संस्कृतिमे नारीक पत्नीरूप अत्यन्त गरिमामय छैक । एही स्वरूपकेँ साभाजिक जीवनमे प्रेमक उपभोग करबाक अधिकार देल गेलैक अछि । पति-पत्नीक सम्बन्धकेँ सर्वाधिक स्पृहणीय ओ आदर्श मानल गेल अछि । समस्त सभ्य समाजमे एहि सम्बन्धकेँ वैवाहिक अनुबन्ध द्वारा स्थायित्व प्रदान कयल गेल अछि । सुखी ओ परितृप्त गृहजीवनकेँ समस्त सुखक मूल तथा त्रिवर्गक साधक कहल गेल अछि । सन्तुष्ट गार्हस्थ्य मानवक जीवन-यात्राकेँ आनन्दक चरमोत्कर्ष धरि पहुँचा दैत छैक ।

भारतीय धर्मग्रन्थ सबहिक आधारपर पत्नीक अभावमे पुरुष अपूर्ण होइत अछि । पत्नीये द्वारा ओकर अर्द्धांगक पूर्णता होइत छैक । मुदा पत्नीकेँ वासना ओ विलासमात्रक प्रतीक नहि, अपितु सत्परामर्शदात्री, सुख-दुखक सहभागिनी, सदसत् केर विवेचिका, सभ अवस्थामे अनुचरी, हृदयक विश्रामस्थल, सेवाकालक दासी तथा क्रीड़ा विनोदक सहचरी कहल गेल अछि । ओ प्रेमिका अछि, सहचरी अछि, अनुचरी अछि, अर्द्धांगिनी अछि, गृहलक्ष्मी अछि । सुमनजीक काव्यमे नारीक पत्नीरूप परम्पराप्रसिद्ध रूपेँ अभिव्यक्त भेल अछि—

सखी सहचरी सचिव शुचि रति रुचि गृह परिबंध
भुक्ति मुक्ति एकल विहित अर्द्धांगिनि अनुबंध

एतावता कवि नारीकेँ प्रेयसी रूपमात्रमे नहि देखलनि अछि अपितु ओकर ओहि रूपक प्रति सेहो भावुक छथि जे घर परिवारक वातावरणमे विकसित होइत अछि ।

सुमनजीकेँ नारीक चित्रांकनमे सर्वाधिक सफलता भेटलनि अछि । हिनक नारीचित्र भावुक अछि आ स्नेह करब जनैत अछि मुदा ओकर प्रेममे वासनाक उद्दाम प्रवाह नहि छैक अपितु ओ त्याग ओ बलिदानक उच्चतम शिखर धरि पहुँचि पुरुषक प्रेरणास्तम्भक काज करैत अछि । हिनक नारीभावनामे नारी सौन्दर्यमूर्ति, स्नेहमूर्ति, अनुरागमूर्ति, त्यागमूर्ति, भावमूर्ति ओ विवेकमूर्ति अछि, जे सांसारिक संघर्षमे पौरुषक मार्गकेँ प्रशस्त करैत अछि ।

जखन कवि राष्ट्रीय भावनासँ आप्लावित होइत छथि तँ पुरुषक चैतन्यकेँ जाग्रत करबाक हेतु नारीक शक्तिस्वरूपक आवाहन करैत छथि । समाज सुधारक भावनासँ प्रेरित कविहृदयमे नारीक अबलारूप सबला ओ प्रेयसीरूप वीरांगनामे परिणत देखि पड़ैत अछि । अपन एहि रूपमे नारीक कोमलता ओ सुकुमारता, शक्ति, साहस, वीरता, तेज, ओज, स्वाभिमान ओ गर्वसँ सम्पुटित भऽ विवेक, त्याग ओ कर्मण्यताक प्रतीक बनि ओकर यौवन ओ कामकेँ वीरत्वक प्रखरतामे आच्छन्न कयने देखि पड़ैछ । **'नव पुरान नव इतिहास'** शीर्षक कवितामे कवि जखन ओजगुणक आह्वान करैत छथि तँ शक्तिस्वरूपा नारीकेँ सेहो पुरुषक चैतन्यकेँ प्रस्फुटित करयबाक हेतु आगाँ आबऽ कहैत छथिन—

आइ गौरी बनथु श्यामा शिव जखन शव बनल भूतल
योगमाया सजग जगबथु शेषशायी पुरुष सूतल
रक्तबीजक रक्त अणु परमाणु चाटथु क्रूर काली
शारदा विज्ञान वैभव अन्नपूर्णा शस्यशाली

जखन कखनहुँ कवि ओजक प्रसंगक वर्णन कयलनि तखन नारी-शक्तिकेँ पुरुषक धर्मपथक बाधक रूपमे स्वीकार नहि कयलनि । देशक युवा-शक्तिकेँ माधुर्यसँ ओज दिस बढ़बाक हेतु आह्वान करैत कवि कहलनि अछि—

देवयानी कच कलापक आइ जादू कच उपर नहि
साधना संजीवनी केर लगन लागल मनहि जखनहि
आइ पार्थक चित्रपट नहि खचित सुरबालाक छवि घन
पाशुपत व्रत जखन संकल्पित न भय कल्पित क्षणहु मन

नारीत्वक चरमोत्कर्ष ओकर मातृत्वमे छैक । नारीक सहज ममत्व, स्नेह वात्सल्य ओ सेवाभाव आदि उदात्त गुण अपन चरम स्थितिमे ओकर मातृरूपहिमे भेटैत छैक । ममताक मंदाकिनी, स्नेहक अक्षय राशि, प्रेम,

त्याग, तपस्या, करुणा, सेवा, धैर्य ओ सहनशीलताक साकार प्रतिमा माता सव दिनसँ आदर ओ पूजाक पात्री रहलि छथि । मातृत्वमे देवतुल्यताक कल्पना कयल गेल अछि । माताक पदकेँ सहस्रो पितृपदसँ उच्च गरिमा देल गेल अछि । एकरा स्वर्गहुसँ वरिष्ठ कहल गेल अछि । आचार्य सुमनजीक काव्यमे वात्सल्यक प्रतीक ओ सन्ततिक आश्रय माताक चारुतापूर्ण चित्रण भेल अछि–

मायहिसँ ममता उपज बहय सिनेहक सोत
सर्ग स्वर्ग अपवर्ग सुख जनिकहि कोर इजोत

सन्तानक प्रेम माताक हृदयकेँ उद्वेलित कयने रहैत छैक । जीवनक समस्त अवस्थामे सन्ततिक सुखमे माताकेँ असीम आनन्द होइत छैक । ओकर अल्पो क्लेश माताक हृदयमे काँट जकाँ कचकैत रहैत छैक । ताहूमे जखन ओकर निर्दोष सन्तति जागतिक प्रपञ्चसँ वञ्चित होइत अछि तँ कोन माय अपन आक्रोशसँ धरतीतलकेँ दलमलित नहि कऽ देत ? *मैथिली-वन्दना*मे माताक एहि आक्रोशकेँ जे स्वर देल गेल अछि, से सनातनसँ मातृत्वक सहज प्रवृत्तिक द्योतक अछि–

पतिक बात नहि राखि पिता घर सती जरलि छथि
उतरि शिवक सिरसँ गंगा समुचिते गललि छथि
माधव संग न जाय राधिका विरह बरलि छथि
काली हर उर चरण राखि जी दाबि दगलि छथि
किए बनलि वनवासिनी पति-पद-रेणु सुता हमर
ज्वालामुखी न थीक ई ज्वलित प्रश्न धरणीक उर

यद्यपि एहि पद्यमे प्रकृतिमे आरोपित पराशक्ति स्वरूपा दिव्यादिव्य नारीक स्वरूपक मातृत्व उद्घाटित भेल अछि, मुदा ई समष्टि रूपमे माताक वात्सल्येक उद्घाटन करैत अछि ।

एतावता सुमनजीक काव्यमे अपन विभिन्न लौकिक रूपमे नारी रति ओ प्रीति, सख्य ओ दास्य, स्नेह ओ वात्सल्यक समेकित गुणवत्तासँ महिमान्वित छथि ।

समष्टिमे विचार कयला उत्तर सुमनजीक मुक्तक काव्यमे अभिव्यञ्जित नारी-परिकल्पनामे परम्परा ओ युगप्रवृत्ति दूहूक सम्यक् समायोजन दृष्टिगोचर होइत अछि । प्राचीनताक प्रति अनुरक्त ओ नवीनताक प्रति उत्सुक सुमनजीक हेतु ई स्वभाविके कहल जाय ।

तथापि, सुमनजीक नारी-चित्रांकनक सम्पूर्णतामे परिचय हिनक खण्डकाव्य **'उत्तरा'** ओ **'दत्त-वती'** महाकाव्य तथा अन्य रचनावलीमे नारी-चरित्रक विश्लेषणक बादे संभव, मुदा से प्रस्तुत अध्ययनक सीमामे नहि राखल गेल अछि ।



अमरजी ओ हुनक मैथिली पत्रकारिताक इतिहास

आधुनिक मैथिली साहित्यमे हास्य-व्यंग्यक कविक रूपमे प्रख्यात पण्डित *श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'* मिथिला-मैथिल-मैथिली आन्दोलनक प्रहरी तथा विशिष्ट विद्वान छथि । हिनकासँ मैथिलीक कविता, कथा, निबन्ध, उपन्यास, नाटक ओ आलोचनाक क्षेत्र आलोकित होइत रहल अछि । साहित्यसर्जन ओ साहित्यकार-निर्माणसँ ई निरन्तर जुड़ल रहलाह अछि ।

हिनक जन्म मधुबनी जिलाक खोजपुर गाममे भेलनि । हिनक जन्म तिथि थिक ज्येष्ठ कृष्ण पड़िव, मुदा आलेखक अनुसार 2 मार्च 1925 ई० । हिनक पिता पं० मुक्तिनाथमिश्र प्रख्यात वैयाकरण छलाह । परिवेशक अनुकूल श्रीअमरजी संस्कृत पढ़लनि आ व्याकरणाचार्य परीक्षोत्तीर्ण भऽ किछु दिन राज स्कूल आ मुकुन्दी चौधरी हाइ स्कूल, दरभंगा मे अध्यापन कयलनि । पछाति 11 अगस्त 1947 ई० कें महारानी लक्ष्मीवती एकेडमी, लहेरियासरायमे सहायक शिक्षकक पद पर नियुक्त भेलाह आ ओही पदसँ 31 मार्च 1983 ई० कें अवकाश-ग्रहण कयलनि । शिक्षण-वृत्तिमे रहैत अनेक वर्षक अनन्तर ई मैट्रिक परीक्षा सेहो उत्तीर्ण कयलनि जे हिनक पाश्चात्य शिक्षाक प्रति उन्मुखताक द्योतक थिक । 34 वर्षक दीर्घ शिक्षण-अवधि मे श्रीअमरजी मैथिली छात्रक एक गोट विशाल वाहिनीक निर्माण कयलनि जकर परिणामस्वरूप मैथिली आन्दोलनक आधुनिक धारा प्रबल भेल । सम्प्रति ई मिश्रटोला, दरभंगामे स्थायी रूपेँ निवास करैत मैथिलीक चिन्तन आ साहित्य-साधनामे संलग्न छथि ।

मैथिलीक प्रचार-प्रसारक हेतु श्रीअमरजीक प्रयत्न बहुमुखी रहल । *'नवरत्न गोष्ठी'*क संस्थापन कऽ मैथिली साहित्यकारलोकनिकेँ एक मंच पर अनलनि, आ एहि संस्थासँ दर्जनो पोथीक प्रकाशन कराय मैथिली साहित्यकेँ समृद्ध कयलनि । *मैथिली साहित्य परिषद्*क प्रचार मंत्री ओ प्रधान मन्त्रीक पद पर काज करैत ई मैथिली भाषा-आन्दोलनक अग्रणी नेताक दायित्वक निर्वाह करैत रहलाह । *'विद्यापति गोष्ठी'* लहेरियासरायक मंत्रीक रूपमे हिन्दी साहित्य सेवी मैथिली रचनाकार सभकेँ एक मंच पर आनि हुनकालोकनिकेँ मैथिलीयो दिस प्रवृत्त कराओल । मैथिलीक रंगमंच आ रजतपट दूनू ठाम अपन प्रतिभाक चमत्कार देखओलनि । प्रसिद्ध मैथिली सिनेमा 'ममता गाबय

गीत' मे संवाद-सम्मार्जकक रूपमे तथा व्यंग्यसंम्राट् हरिमोहनझाक 'कन्यादान' उपन्यास पर आधारित मैथिली फिल्म 'कन्यादान' मे ई भाषा-निर्देशकक रूपमे काज कयलनि । एहि सिनेमामे लालककाक विशिष्ट भूमिकामे सेहो ई भाग लेलनि । विभिन्न पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन-सम्पादन मे ई निरन्तर संलग्न रहलाह । सुमनजीक शब्दमे-''बूझि पड़ैछ, मैथिलीक नवीन कालखंडमे कवीश्वर चन्द्रक प्रतिभा-प्रसाद, अपन विद्वान पिता पण्डित मुक्तिनाथमिश्रजीक मुखर पाण्डित्य, गुरु पण्डित त्रिलोकनाथमिश्रजीक व्यंग्य-रंग, अपन वरिष्ठ शिक्षक अभिभावक श्रीझिंगुरकुमरजीक कर्त्तव्यनिष्ठाक समवेत ज्योति एहि नमछड़-छड़हर, श्याम-अभिराम, प्रतिभा-सनाथ चन्द्रनाथक अमर कलेवरमे अखण्ड रूपेँ उद्योतित अछि ।'' (आशा-दिशा)

मैथिली साहित्यमे श्रीअमरजीक अवदान बहुआयामी अछि । तथापि हिनक परिचिति हास्य-व्यंग्यक महान कविक रूपमे रहल अछि । हिनक आठ गोट काव्यसंग्रह प्रकाशित अछि, जाहिमे '**अमर संगीत**' हिन्दीमे आ शेष मैथिलीमे अछि ।

गुदगुदी (1946 ई०) मे चौदह गोट कविता अछि । अधिकांश कविता अत्यन्त लोकप्रिय भेल । एकर एकाधिक संस्करण बहरायल । हास्यरससँ ओतप्रोत किछु कवितासभ अछि-'*अल्हुआष्टक*', '*कलिकलि*', *मोंछ*' आदि । किछु कवितामे समाजक विभिन्न वर्ग यथा ओकील, सम्पादक, प्रोफेसर, अध्यापक, मंत्री आदि पर व्यंग्य कयल गेल अछि । मन्त्रीक चरित्रकेँ उजागर करैत कवि कहलनि अछि-

हम मन्त्री छी । हम एक पैघ षड़यन्त्री छी ॥
फल टटका दी । बड़का बड़का केँ अँटका दी ॥
चन्दासँ जेबी भरि, संस्थाकेँ फाँसी पर हम लटका दी ॥

युगचक्र (1952 ई०) मे नओ गोट कविता अछि । एहिमे स्वातंत्र्योत्तर राजनीतिक परिवर्तनक परिप्रेक्ष्यमे उत्पन्न विकृति पर आक्षेप कयल गेल अछि । हास्य ओ व्यंग्यक अपूर्व निदर्शनक संगहि एहि संकलनक विभिन्न कवितामे युगजीवनक अवक्षेप संतुलित रूपेँ प्रदर्शित भेल अछि । सशक्त ओ गंभीर व्यंग्य द्वारा कवि सामाजिक ओ राजनीतिक जीवनमे व्याप्त स्वार्थपरता, लोलुपता, भ्रष्टाचार आदि विकृति पर तीक्ष्ण प्रहार कयलनि अछि । कविक राजनीतिक चेतना आ राष्ट्रीय भावना एहिमे स्फुट भेल अछि । एहि काव्यसंग्रहक विशेषता ई रहल अछि जे ई साधारण आ प्रबुद्ध दुहू वर्गक पाठकक आकर्षणक केन्द्र बनल आ सामाजिक तथा राजनीतिक कुरीतिक उन्मूलनमे सहायक भेल ।

ऋतुप्रिया (1963) मे बारहो मासक प्रकृतिक चित्रणसँ सम्बद्ध सत्रह गोट कविता संकलित अछि । एकर प्रणयनमे कविकेँ कालिदासक ऋतुसंहारसँ प्रेरणा भेटल होइन से प्रतिभासित होइत अछि । ई पूर्णतः प्रकृतिकाव्य थिक । कविपरम्परामे छओ ऋतुक वर्णनक जे रूढ़ि भेटैत अछि, एहिमे ताहिसँ किंचित् भिन्न मौलिक ओ यथार्थपरक दृष्टि अछि । मिथिलाक लोकपक्ष ओ व्यवहारपक्षक यथार्थपरक बिम्बक अभिव्यंजना हिनक एहि प्रकृतिकाव्यकेँ विलक्षण बना देलक अछि । पूस मासक वर्णनक क्रममे महाजनी वृत्ति पर काकु करैत कवि लोकजीवनमे व्याप्त शोषणवृत्ति पर आक्षेप कयलनि अछि-

मनहि महाजन जोड़ि रहल छथि ।
तरि तिलकोड़ा तोड़ि रहल छथि ।
नरक जाय हित अपने हाथे ।
बड़का खत्ता कोड़ि रहल छथि ।
लेब सबैया उतरत ड्योढ़ा बौआ मुँहमे टूस ।
पलटि पुनि पहुँचल पापी पूस ॥

उनटा पाल (1972) मे युगचक्रक नओ गोट कविताक अतिरिक्त पन्द्रह गोट आर कविता अछि । एहिमे राजनीतिक, सामाजिक, नैतिक ओ सांस्कृतिक जगतमे व्याप्त विकृति पर तीक्ष्ण व्यंग्य कयल गेल अछि । एहिमे हिनक व्यंजनाशक्तिक चरमोत्कर्ष देखि पड़ैछ । व्याज-प्रशंसा ओ व्याज-निन्दाक शैलीमे कवि स्वातंत्र्योत्तर भारतक विविध क्षेत्रमे होइत परिवर्त्तनजन्य विकृति सभ पर तीव्र आघात कयलनि अछि । वस्तुस्थितिकेँ यथावत् राखि कवि ओकरा हास्यक साधन बनौलनि अछि, मुदा अन्ततः एहि हास्यमिश्रित व्यंग्यक प्रभाव मर्माहत करऽवला सिद्ध होइछ । उदाहरणार्थ, युवावर्गक नैतिक पतन, पाश्चात्य सभ्यता ओ संस्कृति दिस झुकाव एवं गुण्डागर्दीक प्रवृत्तिकेँ अभिव्यक्त करैत कहल गेल अछि-

लुच्चा सभकेँ पड़ल प्रयोजन
मौगी सभ मर्दाना चाही, गाम-गाममे थाना चाही
पूर्ण बिलैती बाना चाही, रुचिगर फिल्मी गाना चाही

आशा-दिशा (1975) मे कविक पैंतालीस गोट गंभीर कविता अछि । एहिमे किछु राष्ट्रीय भावनासँ तथा किछु सामाजिक जीवन-दर्शनसँ सम्बद्ध अछि । गुदगुदीक मुक्त हास्य, युगचक्र जो उनटापालक तीक्ष्ण व्यंग्य, ऋतुप्रियाक सहज प्राकृतिक सौन्दर्य, एहि सभसँ किञ्चित भिन्न एहि संग्रहमे चिन्तनक गांभीर्य, वैचारिक प्रौढ़ता ओ जीवनक प्रति आस्थाक नव बिम्बक संगहि मानव मूल्यक संरक्षण-संस्थापन प्रतिभासित भेल अछि । यथा, '*मनुसन्तान*' मे मानवमूल्यक संस्थापन द्रष्टव्य अछि-

नव चिन्तन नव भावभूमि पर नव-नव सृष्टि विधान
करय नित नूतन मनु-सन्तान

एहिना *'मैथिलीक उद्धार'* शीर्षकमे विद्यापति-पर्वक आडम्बर पर आक्षेप करैत मातृभाषाक रक्षाक हेतु उद्बोधन कयल गेल अछि–

जँ नाचि काछि, भरि तानि मधुर ई पर्व मना सुति रहब फेर ।
तँ बीतल वर्षक वर्ष व्यर्थ आ उनहल जायत असल बेर ॥
रामक समान न्यायी राजा आ धयल मैथिली वनक शरण ।
लव-कुश कँ देबय पड़ल छलनि न्यायेक हेतु रण-आमन्त्रण ॥

विविध गीत (1988) मे कविक अठारह गोट गीतिकाव्य संकलित अछि । एहिमे अधिकांश पारम्परिक लोकशैलीक गीत अछि । यथा–महेशवाणी, लगनी, डहकन, उदासी प्रभृति । *'नृत्य-गीत'*, *'स्वागत-गीत' 'युगल गीत'*, *विडम्बना-गीत'*, ओ *'गजल'* नव प्रकृतिक अछि । लोकशैलीक प्रमुखता होइतो एहि गीत सभमे युगानुकूल परिवर्तनक स्वर मुखरित अछि । 'नव नचारी' मे कविक युगदृष्टि ओ राजनीतिक व्यंग्यक एक गोट बानगी द्रष्टव्य अछि–

शिव ई बाना छोडू औ ।
बेचू बूढ़ बड़द लय ट्रैक्टर पड़ती तोडू औ ।
सक्रिय रहि कय राजनीतिमे जनसम्पर्क बढ़ाउ ।
अपने भाषण खूब करू जनताकेँ काज अढ़ाउ ।
पुरनका धारा मोडू औ ॥

ठाँहि-पठाँहि (2001) अमरजीक 68 गोट कविताक संग्रह थिक । एकर अधिकांश कविता गंभीर प्रकृतिक सामाजिक-राजनीतिक व्यंग्यपरक अछि । किछु कविता आत्मबोधपरक ओ उद्बोधनात्मक प्रकृतिक अछि । स्वातंत्र्योत्तर लोकजीवन ओ राष्ट्रजीवनमे व्याप्त विद्रूपताक प्रति कविक चिन्तन विभिन्न कवितामे अभिव्यंजना पओलक अछि । *'दुइ चित्र'* आ 'चाही आइ एहन रघुनन्दन' कथाकाव्य, जोगीड़ा शैलीक तीन गोट कविता, देवेन्द्रनाथझा ओ शंकरमिश्रक पुण्य स्मृति तर्पण तथा चारि गोट बालकवितासँ सम्पुष्ट एहि संग्रहक सर्वाधिक विशिष्टता ई थिक जे पारम्परिक छन्द-बन्धक प्रति प्रतिबद्ध अमरजीक 16 गोट अतुकान्तो कविता एहिमे संगृहीत देखि पड़ैत अछि । पोथीक आरंभहिमे कविवर सीतारामझा आ यात्रीजीक पुण्यस्मरणमे रचित क्रमशः एक-एक गोट रचना मैथिलीसाहित्यक एहि दूनू पुरोधा लोकनिक प्रति कविक भावपूर्ण श्रद्धानिवेदन अछि ।

अमर संगीत (1977) अमरजीक हिन्दी काव्यसंग्रह थिक । ई मैथिलीक संगहि हिन्दीअहुमे उच्चकोटिक काव्य रचना करैत रहलाह अछि जकर पाठ

राज्य ओ राष्ट्रस्तरीय कविसम्मेलन मंचसँ होइत रहल अछि तथा प्रकाशन राष्ट्रीय ओ अन्तर्राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकामे होइत रहल अछि । पोद्दार रामावतार 'अरुण'क देखाउँसमे अमरजी पन्द्रहे वर्षक अवस्थामे चन्द्र पद्यावली नामक अठपेजी हिन्दी काव्यपुस्तिका प्रकाशित करौने छलाह । विद्यापति गोष्ठी, लहेरियासरायक तत्त्वावधानमे प्रस्तुत भूदान आन्दोलन पर केन्द्रित भूमिदान यज्ञ नामक अठपेजी काव्य पुस्तिकामे सुधांशुशेखरचौधरी, नागार्जुन, अमरेन्द्र ओ मस्तक संग हिनक एक गोट हिन्दी गीत प्रकाशित अछि जकर किछु पाँती हिनक राष्ट्रीय चेतनाकेँ साकार करैछ यथा–

आ सके स्वदेश में नवीन चेतना पुनः ।
ला सके मनुष्य में नवीन प्रेरणा पुनः ।
एक व्याधि रोम रोम में घुसी दरिद्रता ।
भूमिदान रोग का सही निदान हो सके ।

हिनक ई चेतना हिनका द्वारा रचित अनेकानेक शेर ओ शायरीमे अभिव्यक्त होइत रहल अछि आ राष्ट्रभाषा कविसम्मेलनहुमे हिनका जगजियार बनौने रहल अछि । हिनक अप्रकाशित पोथासँ उतारल एक गोट शेरक पाँती द्रष्टव्य–

वतन के नाम पर मरना इसी को मौत कहते हैं ।
जहाँ पर मात होकर मौत भी बेमौत मर जाती ॥

अमर संगीत कविक एही कड़ीक कविता सभक संग्रह थिक । एहिमे तैंतालीस गोट हिन्दी कविता संगृहीत अछि जे हिन्दी क्षेत्रमे हिनक रचनात्मक सक्रियतासँ साक्षात् करबैत अछि । सहजता, सरलता, स्पष्टता, प्रखर राष्ट्रवादिता, जनोन्मुखता, ग्रामचेतना तथा प्रकृतिक संग सम्बद्धताक कारणेँ अमर संगीतक कविता सभ श्रेष्ठ कोटिक कवि कर्म थिक । उदाहरणक हेतु *'सपूतों का सपना'* शीर्षकक किछु पाँती द्रष्टव्य–

आज देश स्वाधीन हो गया, इसका नव निर्माण चाहिये ।
दुःख दारिद्य विवशता से जग की जनता को त्राण चाहिये ॥

एहि प्रकारेँ मैथिलि ओ हिन्दी काव्यजगत श्रीअमरजीक कृतिसँ सम्पुष्ट होइत रहल अछि । मैथिली हास्य-व्यंग्यक क्षेत्रमे तँ हिनक अवदान सर्वोपरि अछि । एहि क्षेत्रकेँ अनुप्राणित करबामे कविवर सीतारामझा ओ हरिमोहनझा हिनक अग्रणी रहलथिन अछि । कविवर सीतारामझाक हास्यरचनामे यथार्थपरक चित्रणक चारुता ओ शब्द-सामर्थ्यक अनुपम योगदान अछि । हरिमोहनझा मैथिली साहित्य जगतमे व्यंग्यसम्राटक रूपमे ख्यात छथि, मुदा हिनक व्यंग्यक क्षेत्र पुरातन पंथहिक आलोचना धरि सीमित रहल । श्रीअमरजी एहन हास्य-व्यंग्यकारक रूपमे प्रतिष्ठित भेलाह जे स्वातंत्र्योत्तर भारतक जनजीवनमे

होइत राजनीतिक, सामाजिक ओ सांस्कृतिक परिवर्तनक विकृतिकेँ निरखि-परखि ओकर कालुष्यकेँ परिष्कृत करबाक हेतु कविकर्म कयलनि। हिनक व्यंग्य आधुनिक लोकचेतनाक उद्वाहक सिद्ध भेल अछि ।

काव्यक क्षेत्रमे अमरजीक एकटा विशिष्ट अवदान थिक एगारह गोट पद्यकथा । एहिमे किछु विभिन्न मुक्तककाव्य-संग्रह सभमे छिटफुट प्रकाशित अछि, किछु पत्रपत्रिकेमे विकीर्ण अछि । *'राष्ट्रनिर्माता'* आ *'चाही आइ एहन रघुनन्दन'* पद्यकथा विशेष लोकप्रिय भेल अछिं । राष्ट्रनिर्माणक हेतु सर्वथा समर्पित शिक्षक वर्गक दैन्य कुशलताक संग 'राष्ट्रनिर्माता' पद्यकथामे अभिव्यक्त भेल अछि । 'चाही आइ एहन रघुनन्दन'मे दहेज प्रथाक कोढ़सँ समाजकेँ मुक्त करयबाक हेतु युवाशक्तिक आह्वान अछि । *'चडुचन'* मे जतऽ बाढ़िसँ संत्रस्त मिथिलाक चौठीचान पाबनिक उल्लासक वर्णन भेल अछि ओतहि *'दूइ चित्र'* मे सामन्त आ श्रमिक वर्गक मानसिकताक अन्तर उपस्थापित कयल गेल अछि । हिनक पद्यकथामे जतेक कथातत्त्वक चमत्कार दृष्टिगोचर होइछ ततेक वर्णन-चातुर्यक नहि । घटनाक विशृंखलता ओ वैविध्यसँ बेसी कवि एहि विधामे जीवनक यथार्थकेँ प्रतिबिम्बित करबामे दत्तचित्त देखि पड़ैत छथि ।

उपन्यासक क्षेत्रमे श्रीअमरजीक दुइ गोट अवदान छनि–**वीर कन्या** (1950) ओ **बिदागरी** (1963) ।

वीर कन्या जासूसी उपन्यास थिक । नायिका प्रधान एहि उपन्यासक घटनाक वैचित्र्य ओ औत्सुक्यक संरक्षण, मैथिलीक प्रारंभिक उपन्यासकलाकेँ दृष्टिमे रखैत, विशिष्ट कोटिक मानल जा सकैत अछि । *बिदागरी* सामाजिक उपन्यास थिक । ई हरिमोहनझाक कन्यादानसँ उठल क्रान्तिक प्रभावान्वितिसँ व्युत्पन्न बुझना जाइछ । एहिमे दहेज प्रथाक उन्मूलनकेँ केन्द्रमे राखि कन्याक पिताक कर्त्तव्यच्युतिजन्य सामाजिक यथार्थपरक घटनाक सर्जन कयल गेल अछि ।

कथाक क्षेत्रमे श्रीअमरजीक पुस्तकाकार संग्रह अछि **जलसमाधि** (1972) । एहिमे नओ गोट कथा अछि । एकर अतिरिक्तो हिनक शताधिक कथासभ विभिन्न पत्रिकामे विकीर्ण अछि । हिनक कथाक मूलमे 'कथायां सरसं वस्तु गद्यैरेव विनिर्मितम्'क साक्षात्कार होइत अछि । भावक प्रधानता ओ भाषाक प्राञ्जलता हिनक कथासाहित्यक विशिष्टता अछि। शब्दचित्रक माध्यमे कथाक प्रस्तुतीकरणक विलक्षण मनोरंजक क्षमता *'कन्तू भाइक क'*, *'भूखन भाइक चुटुक्का'* आदिमे स्फुट भेल अछि ।

नाट्य-साहित्य सेहो श्रीअमरजीक प्रतिभासँ श्रीसम्पन्न भेल अछि । **समाधान** (1955) हिनक तीन गोट एकांकीक संकलन थिक । पत्र

पत्रिकामे विकीर्ण ओ प्रकाशित रचना सभकेँ मिलाय हिनक एकांकीक कुल संख्या एगारह होइत अछि । मुख्यत: सामाजिक समस्या पर आधारित हिनक एकांकी सभ हास्य-व्यंग्यक स्वाभाविक पुट ओ निरलंकृत सहज भाषा प्रयोगक कारणेँ रंगमंचीय दृष्टिञे विशेष सफल रहल अछि । एहिमे भेटत बदलैत युगीन परिवेशक चित्रांकन ओ सामाजिक, शैक्षणिक, राजनीतिक जगतमे व्याप्त विसंगति सभ पर आघात । सुधारवादी प्रवृत्ति सेहो सर्वथा सचर देखल जाइछ । साहित्यक माध्यमे सामाजिक आन्दोलन हिनक एहि विधामे प्रखर अछि । हिनक प्रमुख एकांकी अछि-*'निरक्षरता निवारक पाठशाला, 'ननदियो के ननदि,' 'ब्रह्मस्थान', 'टोपी'* आदि ।

अमरजीक प्रकाशित कृतिमे **त्रिफला** (1948) विभिन्न विधाक संग्रह थिक । एहिमे एक गोट कथा– *'समाजक मुँह'*, एक गोट पद्यकथा- *'दुइ चित्र'* तथा एक गोट एकांकी-*'निरक्षरता निवारक पाठशाला'* संकलित अछि, जे हिनक बहुविधा-रुचिक प्रतिनिधित्व करैछ ।

मैथिली साहित्यकेँ श्रीअमरजीक आनो बहुत अवदान भेटल छैक । समसामयिक समस्या सभ पर हिनक निबन्धसभ पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित होइत रहल अछि । मैथिलीक यात्रा ओ संस्मरण साहित्यकेँ सेहो ई सम्पुष्ट करैत रहलाह अछि । **मैथिली मुहावरा ओ लोकोक्तिक** विशिष्ट संकलन ओ अर्थनिरूपण कएलनि अछि । साहित्य अकादेमीक 'भारतीय साहित्यक निर्माता' शृखलामे **बंकिमचन्द्र** (1980) ओ **हरिनारायण आप्टे** (1985)क मैथिली अनुवाद कयलनि अछि । राजशेखर बसु (परशुराम) क बंगला गल्प संग्रहक ई **परशुरामक बीछल बेरायल कथा** (1995) शीर्षकसँ अनुवाद कयने छथि जाहि पर हिनका साहित्य अकादेमीक अनुवाद पुरस्कार सेहो भेटल छनि । कतोक ग्रन्थक संकलन-सम्पादन सेहो कयलनि अछि । यथा, **पद्यप्रसून** (1954), **विद्यापतिके देशमें** (1955), **लोचन** (1960), **चाणक्य** (1962), **प्रतिनिधि एकांकी** (1967), **विद्यापति सूक्ति-तरंगिणी** (1970), **विद्यापति नीति तरंगिणी** (1973), **विजयशंख** (1965), **स्वातंत्र्य स्वर** (1994), **कथाकिसलय** ((1999) **साहित्यालोक, मैथिली नवीन साहित्य सुमन, मैथिली पाठावली, कवितासंग्रह, कविवर जीवनझा रचनावली, ललित नारायण मिश्र स्मृति ग्रन्थ, श्रीसुमन साहित्य सौरभ** आदि । पत्र-पत्रिकाक स्तम्भ लेखनमे हिनक विशिष्ट भूमिका रहल अछि । बम्बइ प्रवाससँ सम्बद्ध हिनक 'फिल्मी डायरी'क किछु अंश सेहो महत्त्वपूर्ण अछि ।

आलोचना साहित्यक विकासमे हिनक योगदान विभिन्न आलोचनात्मक निबन्धसभमे दृष्टिगोचर होइछ । यथा–*'जटाजटिनक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि', 'मैथिली साहित्य पर रामायणक प्रभाव'* आदि । *'गंगा-वन्दनाक परम्पराम*

सुमन जी' ओ '*एकांकी : वर्तमान दशक*' हिनक आलोचना विधाक गरिमापूर्ण कृति सभ थिक। हिनक आलोचनात्मक साहित्यमे सात गोट कृति ग्रन्थाकार प्रकाशित अछि :-

मैथिली आन्दोलन : एक सर्वेक्षण (1962)मे मैथिली भाषामे साहित्यक हेतु विभिन्न कालखण्डमे चलैत जनान्दोलनक तथ्यात्मक विवरण प्रस्तुत कयल गेल अछि। मैथिली साहित्य परिषदक इतिहास (1969) मे आधुनिक मैथिली भाषा ओ साहित्यक विकासमे एहि संस्थाक योगदानक विवरण अछि। एहिमे शोधग्रन्थात्मक शैलीमे मैथिली साहित्य परिषदक उद्देश्य, मैथिली भाषा, लिपि, साहित्य ओ संस्कृतिक संरक्षण-संवर्द्धनक दिशामे ओकर प्रयत्नक आकलन कयल गेल अछि। **मैथिल महासभाक संक्षिप्त इतिहास** (1999) एहि संस्थाक चरित्र ओ उपलब्धिक विवरणिका थिक। **म० म० मुरलीधरझा** (1980), **काशीकान्त मिश्र 'मधुप'** (1994) तथा **दीनानाथपाठक 'बन्धु'** (1999) एहि महामनीषीलोकनिक जीवनी ओ कृतित्वक परिचय अछि। **मैथिली पत्रकारिताक इतिहास** (19८1) नामानुरूपे मैथिली पत्रकारिताक ऐतिहासिक सर्वेक्षण थिक।

श्रीअमरजी मैथिली पत्रपत्रिकामे प्रारंभहिसँ लागल रहलाह अछि। 26 जनवरी 1950 सँ लहेरियासरायसँ प्रकाशित **'पंचायती राज'** नामक हिन्दी पत्रक ई सहायक सम्पादक छलाह। एहि पत्रमे बतहू मिश्र-बलभद्रपुर नाम सँ *'चुम्मन चौधरीक चिट्ठी'* शीर्षक व्यंग्य-स्तंभ लिखैत छलाह। 9 अक्टूबर 1955 सँ 26 दिसम्बर 1955 धरि तथा पुनश्च 1981-83 मे प्रकाशित मैथिलीक प्रथम दैनिक **स्वदेशक** सम्पादकमण्डलमे रहैत श्रीअमरजी *हमरो किछु कहऽ दिअऽ, हमरा सूनू, कैलू कमतीक कुही', पुन्नी पाठकक पसाठ,' 'खोखाइ सिंहक खखास', चेलारामक चौल, 'उचितरामक उचिती* आदि व्यंग्य-स्तंभक लेखन करैत छलाह। एहि माध्यमे मैथिली भाषाकेँ संकीर्ण वर्गीय दृष्टिसँ हटाय व्यापक जनाधार देबाक प्रयास कयलनि। लहेरियासरायसँ प्रकाशित **निर्माण** हिन्दी साप्ताहिकक ई 1954 ई० मे सम्पादक बनाओल गेलाह तथा एहि पत्रमे कतोक पृष्ठ मैथिलीक हेतु आवंटित कराय एकर माध्यमे मैथिली साहित्य-सर्जनाकेँ प्रोत्साहन देलनि। 1950-51 मे ई **वैदेही** पाक्षिक, पछाति मासिकक सम्पादन कार्य कयने छलाह। एहि अवधिमे सातमसँ चौबीसम अंक धरि हिनक सम्पादकत्वमे प्रकाशित भेल। 1954 ई० मे एहि पत्रिकाक ई पुनः सम्पादक बनलाह, मुदा नीतिगत मतभेदक कारणेँ शीघ्रे पदत्याग कऽ देल। पुनश्च अप्रैल 1964 सँ जून 1968 धरि एहि पत्रिकाक मासिक स्वरूपक प्रधान सम्पादक रहैत पत्रक गरिमाकेँ ऊर्ध्वमुखी बनौने रहलाह। एहि पत्रमे ई धर्मधकेलानन्दक

छद्‌मनाम सँ '*गोनूझाक चौपाड़ि*' शीर्षक व्यंग्य-स्तंभ लिखैत छलाह। 1960 मे दरभंगासँ प्रकाशित मैथिली मासिक **इजोतक**, जकर केवल तीन गोट अंक प्रकाशित भऽ सकल, ई सम्पादक मण्डलमे छलाह। एहि पत्रक माध्यमे मैथिलीमे तात्कालिक आवश्यकताक अनुरूप समीक्षात्मक निबन्ध ओ आलोचना साहित्यकेँ चमकओलनि। 1962 मे **मैथिली साहित्य परिषद पत्रिकाक** एकमात्र प्रकाशित अंकक ई कार्यकारी सम्पादक छलाह। मैथिलीक समाचार साप्ताहिक **जनक** (1964-65) ओ विद्यालयीय पत्रिका **चेतनासँ** जुड़ल अमरजी छात्रजीवनहुमे हस्तलिखित पत्रिकाक संचालन म० र० महाविद्यालय दरभंगामे कयने छलाह। मैथिलीक सर्वथा दीर्घजीवी पत्र **मिथिला मिहिरमे** श्रीअमरजी *धर्मधकेलानन्दजीक बलधिंगरो* शीर्षक स्तम्भमे 255 गोट व्यंग्य लेख लिखलनि। विभिन्न पत्रपत्रिकामे हिनक रचना-सहयोग निरन्तर देखि पड़ैछ। एहि तरहेँ श्रीअमरजी पत्रकारिताकेँ प्रमुख प्रवृत्तिक रूपमे अपनौने छलाह तथा आरंभहिसँ एकर श्वेत-श्याम पक्षसँ अवगत छलाह। पत्रिका प्रकाशनक समस्त पक्षकेँ ई निकटसँ देखने-परखने छलाह, ओहि क्षेत्रमे भेल विभिन्न प्रयोग ओ तकर परिणामक उपभोक्ता रहि चुकल छलाह। स्वभावतः हिनक ई नैपुण्य मैथिली पत्रकारिताक इतिहास लेखनक सभ पक्ष पर सुनियोजित, क्रमबद्ध ओ वैज्ञानिक विश्लेषणक हेतु हिनका सुयोग्य पात्र सिद्ध कयलक जे हिनक विवेच्य ग्रन्थ **मैथिली पत्रकारिताक इतिहासक** अवलोकन सँ प्रत्यक्ष अछि। पत्रकारितामे हिनक व्याप्तिकेँ सुमनजी एहि ग्रन्थक प्रणयनसँ 32 वर्ष पूर्वहि आकलित कऽ देने छलथिन-'कौलिकतेँ वैयाकरण, वृत्तिएँ शिक्षक, रुचिएँ कवि ओ साधने पत्रकार तथा परिमार्जित शैलीक लेखक-अमरजीक परिचय एक वाक्यमे येह देल जा सकैछ।' (**वीर कन्या**)

मैथिली पत्रकारिताक इतिहास श्रीअमरजीक सर्वाधिक प्रशस्त आलोचनात्मक ग्रंथ सिद्ध भेल अछि। एहि ग्रन्थ पर 1983 ई०क साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ ई सम्मानित कयल गेलाह। ई ग्रन्थ हिनक प्राञ्जल गद्यशैली, अनुशीलनक प्रवृत्ति, समालोचनाक क्षमता, प्रस्तुतीकरणक कौशल तथा तथ्यानुसंधानक प्रबल पिपासाकेँ उजागर करैत अछि। एहिमे 1905 ई० सँ आरम्भ कए 1979 धरिक 75 वर्षक मैथिली पत्रकारिताक इतिहासक सर्वांगपूर्ण विवेचन भेल अछि। हिनक ई विवेचन मैथिली पत्रकारिताक उच्चावच्च पथक निदर्शनक संगहि समाज ओ साहित्य पर एकर प्रभावक आकलन थिक।

मैथिली पत्रकारिताक आरम्भ मिथिलासँ सुदूर जयपुरसँ 1905 मे **मैथिल हित साधनक** प्रकाशनक संग भेल। क्रमशः मिथिलासँ ओ मैथिल प्रवासक विभिन्न क्षेत्रसँ उक्त अवधि धरि विभिन्न आकृति ओ प्रकृतिक लगभग 87

गोट पत्र-पत्रिकाक उत्थान ओ पतन भेल। एहि समस्त पत्र-पत्रिकाक प्राप्त सामग्रीक आधार पर विवेचन ग्रन्थकारक उद्देश्य रहल अछि।

मैथिली पत्रकारिता समाजक जड़त्वकेँ तोड़बामे, राजनीतिक ओ सामाजिक गतिविधिकेँ तीव्र करबामे तथा मैथिली साहित्यक विकासकेँ गति प्रदान करबामे कोना सहायक होइत रहल, से एहि ग्रन्थसँ परिलक्षित होइछ। मैथिली पत्रकारिता जगतमे भेल विभिन्न प्रयोग ओ तकर परिणामक आकलन करैत ग्रन्थकार एकर भविष्य ओ अपेक्षाक प्रति जनचेतनाकेँ उद्‌बुद्ध करबाक प्रयत्न सेहो कयलनि अछि। मैथिली पत्र-पत्रिका कोना समाजक अवहेलनाक शिकार होइत रहल, मैथिली पत्रकारिताक अभावसँ समाज ओ साहित्यक विकास पर की प्रतिकूल प्रभाव पड़लैक, से आजुक सन्दर्भमे एहि ग्रन्थमे विवेचित भेल अछि। दुर्लभ ओ अलभ्य पत्र-पत्रिकाक संदर्भ निर्देश द्वारा लेखक प्रमुख रचनाकारक नामावली, रचनाक शीर्षक, विषयवस्तुक परिचय ओ वर्तनीक स्थिति आदिक सेहो निवेश कऽ देलनि अछि।

ग्रन्थारम्भमे पत्रकारिताक सैद्धान्तिक पक्षक विवेचन, समाज जीवन पर पत्र-पत्रिकाक प्रभाव,स्वस्थ पत्र-पत्रिकाक प्रकाशक ओ सम्पादकक उत्तरदायित्व, पत्रकारिताक आरम्भ, 'भारतीय भाषा ओ पत्रकारिता, शीर्षक अन्तर्गत कयल गेल अछि। एहि पक्षक समापन 'मैथिली पत्र-पत्रिका : विवरण ओ विवेचन' शीर्षक द्वारा भेल अछि जाहिमे विषयक सीमा-निर्धारण करैत 1905 सँ 1979 धरि प्रकाशित ओ विवेच्य कुल 87 गोट पत्र-पत्रिकाक नाम अक्षरानुक्रमसँ देल गेल अछि। विद्यापति पर्वक अवसर पर प्रकाशित वार्षिक स्मारिका आ विभिन्न कालखण्डमे प्रकाशित हस्तलिखित पत्रिकाकेँ विषयक सीमासँ बाहर राखल गेल अछि। एही क्रममे लेखक कालखण्डक आधार पर विवेचनक पृथक् दृष्टिकोणक संकेतो दऽ देलनि अछि।

मुख्य ग्रन्थ नओ खण्डमे अछि। ई खण्डविभाजन पत्रिकाक प्रकाशन-अवधिक आधार पर क्रमशः दैनिक, मासिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, द्वैमासिक, त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक ओ अनिश्चितकालीन पत्र-पत्रिका शीर्षकक अन्तर्गत कयल गेल अछि। 'नेपालसँ प्रकाशित किछु पत्र-पत्रिका'केँ फराके खण्ड आवंटित अछि। अन्तमे उपसंहार दऽ विषयक समापन कयल गेल अछि। तदुत्तर तीन गोट परिशिष्ट देल गेल अछि–(क) विद्यासिन्धु रचित मिथिलाक्षरक आकारक शब्द चित्र, (ख) 1954 आ मैथिली, (ग) 'मिथिलांक' मे प्रकाशित रचना ओ लेखक-सूची।

मैथिली दैनिक **स्वदेशक** प्रकाशन एहि भाषाक पत्रकारितामे एक गोट क्रान्ति छल। वरेण्य आचार्य सुमनजीक आत्मबल, वैयक्तिक अर्थव्यवस्था ओ सीमित साधन पर आधारित ई प्रयोग यद्यपि मैथिली पत्रकारिताक क्षेत्रमे विद्युत स्फुलिंग जकाँ अवतरित भेल आ विलीन भऽ गेल तथापि ई मैथिली

पत्रकारिताक हेतु एक गोट विशिष्ट मार्गदर्शकक रूपमे अमिट भऽ गेल। एकर प्रकाशनक उद्देश्यपर आधारित दुइ गोट सम्पादकीयक अविकल उद्धरण, निम्नवर्गीय भाषाक प्रयोगसँ सम्बद्ध स्तंभक उदाहरण तथा तत्कालीन राजनीतिक-सामाजिक आन्दोलनक प्रति एहि पत्रक जागरूकताक विश्लेषण द्वारा श्रीअमरजी मैथिली पत्रकारिता आन्दोलनक विशिष्ट सामग्रीकेँ सुरक्षित कऽ देलनि अछि।

मासिक पत्र-पत्रिका खण्डमे **मैथिल हितसाधन, मिथिलामोद, मिथिला दर्शन** ओ **वैदेहीक** सविशेष विश्लेषण कयल गेल अछि। **हितसाधनक** विवेचनमे ओकर नामक सार्थकता, जनसामान्यमे शिक्षा-प्रचारक हेतु ओकर प्रयत्न तथा इतिहास, भूगोल, व्याकरण, गणित, ज्यौतिष आदि विविध विषयक पोथीक प्रकाशनक उल्लेख करैत ओकर उद्देश्य ओ भाषा-शैली निरूपित कयल गेल अछि। **ततःपर मिथिला मोद** द्वारा हिन्दीक बहिष्कार तथा **मिथिला मिहिर** केँ एहि हेतु उत्प्रेरित करब, राजतन्त्रक ओहि युगमे मिथिलाक प्रजाक सुख-सुविधा, संरक्षण-संवर्द्धन, शिक्षण-प्रशिक्षण हेतु तत्कालीन प्रशासक वर्गक ध्यान आकृष्ट करब, मैथिली भाषा-विकासक हेतु व्यापक मैथिल समुदायक संघटन करब, मैथिली वर्त्तनीकेँ नियामक आधार प्रदान करब, मैथिली लिपिक रक्षाक हेतु समाजक ध्यान आकृष्ट करब, सामाजिक व्यवहारमे होइत आडम्बरजन्य विसंगतिक प्रति जनचेतना जगायब, पाश्चात्य शिक्षाक प्रचार-प्रसारसँ होइत नैतिक पतनक प्रति जनसमुदायकेँ सावधान करब, विश्वविद्यालय शिक्षामे मैथिलीकेँ स्थान देआयब, मातृभाषाक माध्यमसँ शिक्षा व्यवस्थाक हेतु आन्दोलनकेँ गति प्रदान करब, मैथिली आन्दोलनक विविध पक्षकेँ प्रोत्साहित करब आदि विविध विषय पर प्रामाणिक विवेचन प्रस्तुत कयल गेल अछि। **मिथिलामोद** मासिकक विश्लेषणक क्रममे लेखक एकर प्रगतिगामिता, मैथिलीक अस्तित्वरक्षाक प्रति सन्नद्धता तथा स्त्रीशिक्षाक प्रति प्रतिबद्धताक उल्लेख करैत एकर उन्मुक्त भाषा-शैली ओ ग्राहकलोकनिक अदूरदर्शिताक उल्लेख कयलनि अछि।

मिथिला दर्शनक विवेचनमे ग्रन्थकार एकर राजनीतिक जागरूकता तथा कथा ओ नाट्य साहित्यक विकासमे एकर विशिष्ट योगदानक उल्लेख कयलनि अछि। **वैदेहीक** विश्लेषणमे भाषा आन्दोलनक विविध चरण ओ मैथिली साहित्यक विविध विधाकेँ सम्पुष्ट करबामे तथा नवलेखनकेँ प्रश्रय देबामे एकर योगदानक मूल्यांकन कयल गेल अछि। तदतिरिक्त एहि खण्डमे विवेच्य विविध मासिक पत्र सभक भाषा ओ साहित्यक विकासमे योगदान तथा ओकरा सभक उद्देश्य, कार्यप्रणाली, उद्देश्य-प्राप्तिमे व्यवधान आदिक विश्लेषण भेल अछि।

साप्ताहिक पत्र-पत्रिका खण्डक अन्तर्गत **मिथिला मिहिरक** विवेचनमे लेखक सर्वाधिक सचेष्ट देखि पड़ैत छथि । एकर प्रकाशनावधिकेँ चारि खण्डमे विभाजित कऽ प्रत्येक खण्डक उपलब्धिक विश्लेषण कयल गेल अछि । खास कऽ सुमनजीक सम्पादनकालमे ओ 1960 क बाद एकर पुन: प्रकाशनसँ मैथिली साहित्यक विविध विधाक व्यापक विकासमे एकर योगदानक आकलन विस्तारसँ भेल अछि । संगहि ग्रन्थकार एकर सामन्तवादी चाटूक्तिक विवशता तथा मैथिलीक प्रतिघातक हेतु अन्य तत्त्व सभकेँ सेहो इंगित कऽ देलनि अछि । अन्यान्य कोटिक पत्रपत्रिकाक विश्लेषणमे ग्रन्थकार ओकर उद्देश्य, योगदान, प्रकृति, रचना, स्थिति ओ असफलताक कारण सभक सोदाहरण तथ्यपरक उपस्थापन कयलनि अछि । 'नेपाल सँ प्रकाशित किछु पत्र-पत्रिका' खण्डक अन्तर्गत **फूलपात, मैथिली** तथा **अर्चना** पर दृष्टिपात कयल गेल अछि ।

पत्रिका सबहिक विवेचनक क्रममे ग्रन्थकार प्राप्त सामग्रीक गंभीर अनुशीलन कऽ उपयुक्त निष्कर्ष धरि पहुँचलाह अछि । लेखक अपन कथनक पुष्टिमे बहुधा तत्तत् पत्रिका ओ वरेण्य इतिहासकारलोकनिक सन्दर्भ दऽ तथ्यकेँ प्रामाणिक रूपेँ पुनरभिलिखित कयलनि अछि । इतिहासकारलोकनिक बीच जाहि कोनो पत्र-पत्रिकाक प्रति कोनो भ्रान्त धारणा छलनि, तकर निराकरणक हेतु लेखक सचेष्ट देखल जाइत छथि । खास कऽ अनेक पत्रिकाक विषयमे प्रथम प्रकाशन तिथि ओ सम्पादकक प्रसंग उत्पन्न मतवैभिन्यकेँ समाप्त कऽ प्रामाणिक तथ्य प्रस्तुत करबामे ई ग्रन्थ सफल भेल अछि । उदाहरणस्वरूप, डा०जयकान्तमिश्र ओ दुर्गानाथझा 'श्रीश'क इतिहासमे **मैथिल हितसाधनक** सम्पादक चन्द्रदत्तझाकेँ कहबाक भ्रान्ति, **मिथिला मोदक** प्रथम प्रकाशन वर्ष 1905 क स्थान पर 1906 मानबाक भ्रान्ति, मोदक पुन:प्रकाशनमे डा.काञ्चीनाथझा'किरण' केँ सम्पादक कहबाक भ्रान्ति, **मिथिला मिहिरक** प्रथम प्रकाशन वर्ष 1909 क स्थान पर 1908 कहबाक भ्रान्ति जे पसरल छल तकरा लेखक प्रमाणपुरस्सर निराकृत कऽ देलनि अछि ।

प्रत्येक पत्रपत्रिकाक वृहत् विवेचन कऽ ग्रन्थकार अन्तमे ओहि पर सार रूपमे अपन निष्कर्ष प्रस्तुत कयलनि अछि जे हुनक तत्त्वग्राहिताकेँ प्रमाणित करैत अछि । किछु मनोरंजको उदाहरण अछि । **चाङ्गुर** पत्रिकाक सम्बन्धमे ग्रन्थकार कहैत छथि–''चाङुरक सम्पादक छलाह जटायु आ सम्पादकीयक हेतु शीर्षक राखल गेल छल 'नोछाड़' । एही दू शब्दमे एकर सम्पूर्ण जीवनदर्शन स्वयं अनुमेय अछि ।'' एहिना **ऊक** पत्रिकाक सन्दर्भमे ग्रन्थकारक कथन अछि–''एकर नामे एकर चरित्रकेँ उजागर करैत अछि । ऊक लऽ कऽ चलनिहार समाजकेँ कतेक प्रकाश दऽ सकैत अछि, से स्वयं ऊह्य थिक ।''

यद्यपि एहि ग्रन्थमे पत्रपत्रिकाक विवेचन ओकर आवधिकताक आधार पर भेल अछि, तथापि लेखक तिथिक्रम दिस सेहो निरन्तर सचेष्ट देखि पड़ैत छथि । प्राय: एही तथ्यकेँ ध्यानमे राखि प्रत्येक खण्डमे विवेचित पत्रपत्रिकाक अनुक्रम प्रकाशनवर्षक अनुगमन करैत देखि पड़ैत अछि । तथापि पत्रपत्रिकाक विवेचन कालखण्डक अनुक्रमे सेहो नीक जकाँ भऽ सकैत छल से ग्रन्थकार अनुभव कयलनि अछि आ तेँ विवेचनक क्रममे मैथिली पत्रकारिताक चरणविभाजनक सेहो संकेत दैत गेलाह अछि । ग्रन्थकारक मतमे मैथिली पत्रकारिताक इतिहासक तीन गोट कालखण्ड अछि–1905 मे **मैथिली हित साधनक** उदयसँ 1929 धरि, 1929 मे **मिथिलाक** उदयसँ 1960 मे **मिथिला मिहिरक** पुन:प्रकाशन धरि तथा 1960 सँ अद्यपर्यन्त ।

तथापि एहि ग्रन्थक सर्वांगपूर्णता कतोक अर्थमे बाधितो देखि पड़ैछ । ग्रन्थकारकेँ सभ पत्र-पत्रिकाक सभ अंक उपलब्ध नहि भऽ सकलनि, तेँ ओकर अनुशीलन-विश्लेषणक अभाव रहि गेल । एहना स्थितिमे उपलब्धे सामग्रीक आधार पर विवेचन अथवा पूर्वमतहिक प्रस्तुति धरि ग्रन्थकार अपनाकेँ सीमित कऽ विवशता जना देलनि अछि ।

ग्रन्थान्तमे लेखक उपसंहारक अन्तर्गत मैथिली साहित्यमे आधुनिक युगक पदार्पणक संगहि पत्रकारिताक उदयकेँ एकर विकास-मार्गक विशिष्ट सोपान कहलनि अछि । आधुनिक मैथिली साहित्यक आधारशिलाक रूपमे पत्रकारिताकेँ प्रतिष्ठापित करैत लेखक ई स्पष्ट कयलनि अछि जे एहि आन्दोलनक अभावमे मैथिली हिन्दीक गर्भमे ओहिना समाहित भऽ जाइत जेना राजस्थानी, अवधी, ब्रजभाषा आदि आन-आन क्षेत्रीय भाषा । पत्रकारिता यद्यपि मैथिलीकेँ ओ अधिकार नहि देया सकलैक जकर ई पात्र छल तथापि भाषाक अस्तित्व रक्षामे आ साहित्यक विकासमे एकर अमूल्य योगदान छैक ।

मैथिली पत्रकारिताक त्रुटिकेँ इंगित करैत लेखक एकर एकांगीचरित्रक उपहास कयलनि अछि । एकर असफलताक मूलमे स्थित वर्गीय दृष्टिकोण ओ मैथिल महासभाक संकीर्ण नीति पर आघात करैत ग्रन्थकार मैथिली पत्रक व्यापक प्रसारक व्याघातक सभ पर घोर आक्रोश प्रकट कयलनि अछि। मैथिली भाषाक ब्राह्मण ओ कर्णकायस्थ धरि सीमित होयब तथा पत्रकारिताक द्वारा एकरा व्यापक आयाम देबाक किछु प्रयासक प्रति अन्य पत्र द्वारा विरोध आदिक तत्त्व दिस लेखक इंगित कयलनि अछि । अन्तत: दैनिक पत्रक आवश्यकता पर बल दैत ओ मैथिली आन्दोलनक सुविधाभोगी जड़

समाजकेँ सचेत होयबाक अनुदेश दैत ग्रन्थकार राजनीतिकलोकनिकेँ मैथिलीक अधिकार रक्षाक हेतु विवश करबाक जनसमूहक प्रयासक आह्वान कयलनि अछि ।

एहि तरहेँ कहल जा सकैछ जे एहि ग्रन्थमे मैथिली पत्रकारिताकेँ समग्रतामे देखबाक प्रयास भेल अछि आ ई मैथिली पत्रकारिताक क्रमबद्ध इतिहास प्रस्तुत करैत अछि । मुदा कतिपय विद्वान एहि ग्रन्थक नामकरणक प्रति असहमति व्यक्त कयलनि अछि । श्रीगौरीकान्तझा (**प्रकर, दीपावली अंक, 1984, 8/42, राणाप्रताप बाग, दिल्ली**) कहलनि अछि जे ''एहि ग्रन्थमे मैथिली भाषा ओ साहित्यक एकटा कालावधिक इतिहासकेँ अन्तर्भुक्त कयल गेल अछि । एहि ग्रन्थकेँ मैथिली पत्र-पत्रिकाक सामान्य विवरणे कहब अधिक उपयुक्त अछि ।'' मुदा श्रीझाक आपत्ति सर्वथा भ्रमपूर्ण ओ एकपक्षीय दृष्टिक सूचक अछि । हिनक टिप्पणी समग्रतामे ग्रन्थक अध्ययनक आधार पर नहि, अपितु विहंगदृष्ट्या केवल विषयसूचीक आधार पर प्रस्तुत अभिमत अछि जे ग्रन्थक अन्तर्वस्तुकेँ देखला उत्तर उचित नहि बूझि पड़ैछ ।

श्रीराजमोहनझा ***(आरंभ, त्रैमासिक, अंक 1, नवम्बर 1982 पृ. 82-86)*** कहलनि अछि जे ''एकटा एहने शब्द अछि पत्रकारिता जकर मैथिलीमे एखन धरि दुरुपयोगे होइत रहल अछि । दैनिक पत्र जे कि पत्रकारिताक मुख्य स्तम्भ होइत अछि, मैथिलीमे भेवे ने कयल । तखन पत्रकारिताक इतिहास की ? पोथीक नाम ठीके भ्रमाह अछि । एकर नाम मैथिली पत्रिकाक इतिहास भऽ सकैत छल ।'' श्रीझाक आपत्ति अव्याप्तिदोषसँ सीदित बुझना जाइछ । हिनक आपत्ति पत्रिका, पत्र ओ पत्रकारिताक अर्थविश्लेषणमे निहित अछि । पत्रकारिताक हिनक परिभाषा संकुचित बुझना जाइछ । पहिने पत्र-पत्रिका आ पत्रकार तखने ने पत्रकारिता । जँ दैनिके पत्रक संचालक पत्रकार आ दैनिके पत्रक संचालन पत्रकारिता तँ पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी कोन दैनिक पत्र चलाय पत्रकार कहौलनि ? मैथिलीक माध्यमे जे निरन्तर शताधिक पत्र-पत्रिकाक उत्थान ओ पतन होइत रहल अछि आ प्रत्येक पत्रकेँ कोनो ने कोनो रूपमे सामाजिक ओ साहित्यिक गतिविधिकेँ आलोड़ित करबाक श्रेय प्राप्त छैक, से पत्रकारिता नहि तँ आर की थिक ?

वास्तवमे श्रीअमरजीक मैथिली पत्रकारिता इतिहास ओ हिनक अन्यान्य अवदान हिनका आधुनिक मैथिलीक महान विभूतिक रूपमे प्रतिष्ठित करैत अछि ।



मैथिली कथा साहित्यमे वर्णन, संवाद ओ भाषा

आजुक युगमे जीवनक जटिलताकेँ अभिव्यक्ति देबामे कथा सर्वाधिक लोकप्रिय साहित्यिक विधा सावित भेल अछि । मैथिली कथा साहित्य आधुनिक मैथिली साहित्यक सर्वाधिक सशक्त, जीवन्त, सुविकसित ओ समृद्ध विधा थिक । गुणात्मकता ओ परिमाणात्मकता दूहू दृष्टिऐं मैथिली साहित्यक ई विधा समकालीन भारतीय साहित्यमे विशिष्ट स्थान रखैत अछि ।

कथाक तत्त्व

कथावस्तु, चरित्रचित्रण, कथोपकथन, देशकाल तथा वातावरण, वर्णन-शैली तथा उद्देश्य एहि छवो प्रमुख तत्त्वक विन्यस्त स्वरूप कथाकेँ सम्पूर्णता प्रदान करैत अछि । वस्तु आ चरित्र जँ कथाक आधार थिक तँ उद्देश्य ओकर परिणति । तथापि कथाक स्थूल आधारकेँ चरम परिणति धरि कुशलतापूर्वक पहुँचयबाक हेतु जाहि उपादान सभक सर्वाधिक योगदान रहैछ से थिक कथोपकथन, देशकाल तथा वातावरण ओ वर्णन-शैली । यैह तीन तत्त्व कथामे औत्सुक्य, क्षिप्रता, चमत्कृति, तीव्रता, घनत्व, कुतूहल, संशय, रमणीयता, सहजता, आकर्षण, क्रमबद्धता, अनुभूतिप्रवणता ओ सुसंघटनाक नियामक भऽ कथामे लोकग्राह्यताक आधारभूमि तैयार करैत अछि । कथोपकथनहिकेँ संवाद, देशकाल तथा वातावरणहिकेँ वर्णन तथा वर्णन शैलीएकेँ भाषा अभिधान देल गेल अछि ।

वर्णन, संवाद ओ भाषाक महत्त्व

शाश्वत साहित्यक निर्माणमे जहिना मानव मनक चिरन्तन ओ सार्वकालिक भावनाक आश्रय लेब अवश्यंभावी होइछ, तहिना उत्कृष्ट कथाक प्रणयनक हेतु मनोवैज्ञानिक व्यापकता अनिवार्य अछि । ताहूमे चिरन्तन भावनाक अभिव्यक्तियो उच्चतम स्तरक तथा उत्कृष्टतम शैलीक द्वारा कयनहि कथाकेँ उत्तम कोटि संभव भऽ सकैत छैक । वस्तुक क्रमविहीनता, चरित्रक अस्पष्टता ओ अस्वाभाविकता, कथोपकथनक अप्राकृतिकता, परिवेशकेँ घटनाक अनुकूल बनाबयवला वर्णनविन्यासक अभाव, आकर्षण ओ प्रभावसँ शून्य आदि-अन्त, चरमोत्कर्ष विन्दु पर कथाकेँ पहुँचयबासँ पूर्वहि रहस्योद्घाटन,

अत्यधिक कल्पनाशीलता तथा प्रभावहीन भाषाक अनुगुम्फन कथाकें नीरस आ कलारहित बना दैत छैक । आधुनिक कथामे वस्तु, चरित्र आ उद्देश्यसँ बेसी महत्त्वपूर्ण ओकर वर्णन, संवाद ओ भाषा भऽ गेलैक अछि । ई तीनू तत्व कथाक साधन थिक, साध्य नहि । एहि तीनूक सुसंघटनेसँ वस्तु, चरित्र आ उद्देश्य परिपक्व भऽ अभिव्यंजित होइछ तथा पाठकीय संवेदनाकेँ उद्वेलित-उद्बोधित कऽ दैछ । वस्तुतः कथा वर्णनविन्यास, संवादयोजना ओ भाषाक द्वारा प्रक्षेपित भऽ चरमोत्कर्ष धरिक यात्रा करैत अछि ।

मैथिली कथाक विकास-यात्रा

मैथिली कथासाहित्य अनेक उच्चावच्च पथकेँ पार करैत आधुनिक स्थितिमे पहुँचल अछि । मुद्रण सुविधासँ पूर्व मैथिलीमे कथाक जे स्वरूप लोककंठमेँ सुरक्षित-संरक्षित आबि रहल छल, ताहिमे वस्तु मात्र प्रधान होइत छल । कोनो घटनाक चित्रण द्वारा लोकरंजने धरि एकर सीमा छल । मुद्रण सुविधाक बाद मैथिली कथासाहित्य अपन जाहि स्वरूपमे अवतरित भेल, से थिक आख्यान ओ आख्यायिकाक स्वरूप । आख्यान ओ आख्यायिका संस्कृत परम्परासँ गृहीत छल । आधुनिक मैथिली साहित्यक जनक चन्दाझा *पुरुष परीक्षाक* मैथिली अनुवाद प्रस्तुत कयलनि आ तकरे अनुसरणमे मित्र-लाभ, हितोपदेश, महाभारतक कतिपय पर्व, शिवराज-विजय, कादम्बरी तथा संस्कृत वाङ्मयक अनेक आख्यान-उपाख्यानक अनुवाद किंवा पुनःलेखन भेल। एहि उपाख्यान सभमे वर्णनक विशदता ओ स्थूलता मूल उपाख्यानक सर्वथा निकट छल, वस्तु, चरित्र ओ उद्देश्यक स्थिति सेहो तदनुकूले छल । एहि प्रकारक रचनामे कथाकारलोकनिक मूल उद्देश्य छल मैथिली साहित्यक समृद्धि, लोकानुरंजन तथा नैतिकतापूर्ण वैचारिक अभिव्यक्ति । अपन एहि स्वरूपमे मैथिली कथा साहित्य आधुनिक कथा साहित्यक पृष्ठभूमिक काज कयलक । बीसम शताब्दीक दू दशक धरि मैथिली कथा साहित्य आख्यान-आख्यायिकाक युगसँ आगू नहि बढ़ि सकल ।

परवर्तीकालमे मैथिली कथा साहित्यमे मौलिक परिवर्तन भेलैक । एहि परिवर्तनक पाछाँ कारण छल पाश्चात्य कथाविधासँ मैथिली कथाकारलोकनिक परोक्ष परिचय । ई परोक्ष परिचय बङलामे रचित कथा-उपन्यासक माध्यमे भेल । बङला भाषासाहित्यसँ मैथिली कथाकारलोकनिकेँ घनिष्ठ परिचय छलनि । मैथिली कथा साहित्यमे एहि परिवर्तनक सूत्र एकर कतोक प्रारंभिक कथा सभमे भेटैत अछि ।

एहि कथासभक अवलोकनसँ स्पष्ट अछि जे एहि पर आख्यान शैलीक प्रभाव अछि, वस्तुक प्रधानता अछि, समाज-सुधारक प्रवृत्ति अछि, मिथिलाक लोकजगतमे व्याप्त रीति-नीति, धर्म-संस्कृति, रूढ़ि-परम्पराक सहज समावेश

अछि । डॉ. रामदेवझा जनार्दनझा, 'जनसीदन' रचित **'ताराक वैधव्य'** केँ मैथिलीक आद्यकथा प्रमाणित कयलनि अछि । ई कथा आधुनिक कथाक समस्त गुणसँ परिपूर्ण अछि । सुगठित कथानक, चरित्र-चित्रणमे वैशिष्ट्य, सन्तुलित सम्वाद, वातावरण ओ परिवेशक रोचकता, प्राञ्जल भाषाशैली आदिक सम्यक् सन्निवेशक संगहि एहि कथाकेँ प्रयोगधर्मी आधुनिक कथाक अत्यन्त निकट मानबाक कारण अछि एहिमे अभिव्यक्त नारी अत्याचारक प्रति स्पष्ट आ विरोधी दृष्टिकोण ।

वस्तुतः जनसीदनजीक पश्चात् प्रयोगधर्मी कथारचना मैथिलीक लेल नव नहि रहल । सामाजिक कुरीतिकेँ दूर करबाक मानसिकतासँ रचित कथा क्रमशः मनोवैज्ञानिक विश्लेषणक प्रवृत्ति दिस उन्मुख होइत गेल । सामाजिक यथार्थक चित्रणसँ होइत-गुजरैत कथा साहित्य व्यक्तिगत जीवनक अन्तः संघर्ष धरि प्रवेश कऽ गेल ।

मैथिली कथाक क्षेत्रमे भुवनजी, कुमार गंगानन्दसिंह, हरिमोहनझा, काञ्चीनाथझा'किरण', प्रबोधनारायणचौधरी, नगेन्द्रकुमार, उपेन्द्रनाथझा'व्यास', मनमोहनझा, योगानन्दझा, उमानाथझा, सुधांशुशेखरचौधरी, गोविन्दझा सदृश महारथी-अतिरथीलोकनिक आविर्भाव भेलनि, जनिकालोकनिक काजकेँ ललित, मायानन्दमिश्र, राजकमलचौधरी, सोमदेव, रामदेवझा, हंसराज, रमानन्दरेणु, लीली रे, धूमकेतु, राजमोहनझा, प्रभास कुमार चौधरी, उषाकिरण खाँ, जीवकान्त, गंगेश गुञ्जन, सुभाषचन्द्रयादव आदि आगू बढ़ौलनि आ तकरे अगिला कड़ीक रूपमे विभूतिआनन्द, मनमोहनझा, शेफालिकावर्मा, नीताझा, विभारानी, नीरजारेणु, अशोक, शिवशंकरश्रीनिवास, प्रदीपबिहारी, तारानन्दवियोगी, देवशंकरनवीन, केदारकानन, चन्द्रेश, रमेश, राजारामप्रसाद, आशामिश्र आदि साम्प्रतिक मैथिली कथासाहित्यक सबल संवाहक बनल छथि ।

विगत आठ नौ दशकक अन्तरालमे मैथिली कथा साहित्यमे बहुआयामी विस्तार भेलैक अछि । कथाक विषय, संप्रेषणक शिल्प, वर्णन-विन्यासक कला आदिमे अभूतपूर्व परिवर्तन भेलैक अछि । मैथिली कथा अपन देश-कोस, माटि-पानिक संग ओतप्रोत रहितो राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय ओ विश्व मानसक निरन्तर संवेदनशील ओ संघर्षी व्यक्तित्वसँ रसग्रहण करैत रहल अछि । कथाक एहि अपरिमित विस्तारमे वर्णन, संवाद ओ भाषाक स्वरूपमे सेहो क्रमिक परिवर्त्तन होइत रहलैक अछि ।

मैथिली कथासाहित्यमे वर्णन

मैथिली कथासाहित्यमे वर्णनसँ तात्पर्य्य अछि एहिमे घटित घटना, पात्र, परिवेश आदिक समुत्थापन । कथामे पूर्णता ओ स्वाभाविकता अनुगुम्फित करबाक हेतु वर्णनक आवश्यकता होइत छैक । ई कथाप्रवाहमे सहायक होइत

अछि तथा पात्रक संग घटनाक्रमकेँ शृंखलाबद्ध तथा आकर्षक बनबैत छैक। पात्रक वेषभूषा, स्वभाव ओ चरित्र, घटनाक स्थान, परिवेश ओ काल आदिक वर्णनसँ कथामे सहजताक समावेश होइत छैक। कथाक सीमा विस्तार लघु होयबाक कारणेँ यद्यपि एहिमे वर्णनक हेतु पर्याप्त अवकाश नहि रहैत छैक, तथापि सुसंगत ओ छोट, पात्र ओ घटनाक अनुकूल वर्णन कथाक अभिव्यंजनाक क्षमताकेँ बढ़ा दैत छैक।

वर्णन-वैशद्य

मैथिली कथा अपन आरंभिक कालहिसँ वर्णन-विन्यासमे निष्णात मनीषीलोकनिक कृतिक परिचय दैत रहल अछि। यद्यपि प्रारंभिक कथा सभमे वर्णन-वैशद्यकेँ कथाक कलापक्ष मानि ओकरा आकर्षक बनयबाक हेतु कृत्रिम ओ काल्पनिक चित्र उरेहल जाइत छल। एहि चित्रणक समय कथाकार अपन ललित गद्यक चमत्कार केँ ततेक संपुष्ट करऽ लगैत छलाह जाहिसँ पात्र ओ घटना तत्त्वसँ हुनक निरपेक्षता भासित होमऽ लगैत छल, जेना-''*आषाढ़ मासक अमावास्याक घोर अन्धकार राति अछि। हाथ-हाथ नहि सुझै अछि। मेघसँ आकाश फाटय फाटय पर अछि। विद्युल्लता रहि रहि स्वप्नक साम्राज्य जकाँ अपन प्रकाश देखाय आलोप भय जाइत अछि। तकरा संगहि संग मेघ अपन धीर ध्वनिसँ धरतीकेँ कँपाय दै अछि। जे क्षण जे घड़ी पानि नहि बरिसल अछि सैह आश्चर्य। बसात कनेको नहि बहै अछि। गर्मीसँ सभक जी आकुल-व्याकुल छैक।*[1]

एहि तरहक वर्णन-वैशद्य क्रमशः मैथिली कथामे अनुपयोगी मानल जाय लागल अछि। आब कथाकारलोकनि गागरमे सागर भरबाक नीयतसँ ओतबे वर्णनकेँ प्रश्रय देमऽ लगलाह अछि जे पात्र, घटना किंवा परिवेशकेँ प्रस्फुटित करबाक लेल आवश्यक बूझल जाइत अछि।

पात्रक स्वभाव ओ स्वरूपक वर्णन

मैथिली कथासाहित्यमे पात्रक स्वभाव ओ स्वरूपक वर्णन द्वारा ओकर सम्पूर्ण व्यक्तित्वकेँ रूपायित करबाक संगहि ओकर चरित्रकेँ स्फुट कयल जाइत रहल अछि। एहि प्रकारक वर्णनसँ कथामे रोचकता ओ सहजताक सृष्टि होइत रहल अछि यथा–'*ओना आकर्षित नहियो होइतहुँ मुदा हुनक गौरवर्ण, बेस झमटगर टीक, श्रीखण्डक अर्द्धपुण्ड्र, सिन्दूरक ठोप आ सभसँ बेसी स्वजातिक मुखाकृति देखि कऽ अनेरे हुनका विषयमे जिज्ञासु होबऽ पड़ल।*[2] '*एकबोलियो तेहने छलाह। हुकुम तोड़लक की माथा फुटलैक।*[3] आदि।

पात्रक मनोवेग ओ परिस्थितिक वर्णन

पात्रक स्थूल स्वरूप, ओकर बाह्य विशेषताक वर्णनसँ पात्रक चरित्रक अंशमात्र उद्घाटित होइछ। ओकर क्रिया ओ मनोवेग तथा परिस्थितिक वर्णनसँ कथ्य अपन सम्पूर्ण घनत्वक संग उद्घाटित होइछ। साम्प्रतिक मैथिली कथामे पात्रक मनोविश्लेषणात्मक वर्णनक चमत्कार एकर विशिष्ट उपादान रहल अछि। यथा- '*मीशन कहैत देरी एतीकालसँ बिसरल रागिनीकेँ अपन डेरा आँखिक सोझाँ साकार भऽ उठलैक। छोट छोट तीन कोठलीवला डेरा। डेराक बहरीवला कोठलीमे लकबासँ मारल मात्र अर्द्धशरीरसँ जीवित तथा दम्माक तीव्र आक्रमणसँ लड़ैत अन्तिम भोग भोगैत जर्जर वृद्ध पिता आ निरंतर अपराधी भावनासँ ग्रस्त रहऽवला दूटा थाकल हाथ आ शून्य दृष्टि। जेना ओहि दृष्टिमे प्रचंड बिहाड़िक हाहाकार आबि कऽ बैसि गेल हो, जेना ओहि दृष्टिमे पतझड़क कोनो साँझक सभटा उदासी उतरि आयल हो, जेना क्षुब्ध समुद्रक आक्रोश औना रहल हो।*[4]

घटनाक वर्णन

कथामे पाठकीय संवेदनाक जागरण, औत्सुक्यक निर्वाह तथा मर्मवेधी परिणतिक सूत्र एकर घटनाक वर्णनमे रहैत अछि। कथानकमे जे कोनो घटना घटित होइत अछि, सबटा वर्णनेक द्वारा पाठकक समक्ष अबैत अछि। एकर आरंभ, आरोह-अवरोह, चरमोत्कर्ष तथा उद्देश्यहुकेँ वर्णनेक सहायतासँ अभिव्यक्त कयल जाइत अछि। प्रकृतिक सचेतन वर्णन द्वारा कथाकार घटनामे स्वाभाविकताक निवेश करैत छथि। घटनाक परिवेश, स्थान, कालखण्ड, ऋतु ओ दिनक समयविशेषक वर्णनकेँ मैथिली कथासाहित्यमे प्रचुर स्थान देल जाइत रहल अछि। मिथिलाक लोकजगतमे होइत सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनसँ मैथिली कथासाहित्य निरन्तर प्रभावित रहल अछि। स्वभावतः एहिमे ग्रामीण परिवेशक संगहि शहरी परिवेशक, ग्राम्य प्रकृतिक संगहि नगरीय विकृतिक सहज समावेश होइत रहल अछि। घटना घटबाक मौसम जाड़, वर्षा, गर्मी आदि तथा घटनाक समय प्रातः, दुपहर, संध्या, रात्रि आदिक वर्णनक जे आकर्षण प्रारंभिक मैथिली कथा सभमे देखि पड़ैछ, तकर आधुनिक कथामे अभाव बुझना जाइछ, तथापि कथ्य ओ घटनामे सहजताक समावेशक हेतु वर्णनक एहि उपादान सभक उपयोग मैथिली कथामे वञ्चित नहि रहल अछि। विशेषतः बाढ़िसँ प्रताड़ित मिथिलाक वर्णन मैथिली कथासाहित्यक विशिष्ट उपादान रहल अछि। साम्प्रतिक भारत ओ विदेशहुमे जे कोनो घटना घटैत अछि, मैथिली कथा ओहिसँ सहजहिँ प्रभावित देखि पड़ैछ। स्वभावतः मैथिली कथा ऐतिहासिक कालखण्डहुक निदर्शन देबामे सक्षम अछि। स्वतंत्रतासँ पूर्व जमींदारी व्यवस्थाक काल, स्वतंत्रता संग्रामक काल आ स्वातंत्र्योतर भारतक विभिन्न

चर्चित समय यथा आपात्काल, अयोध्या मंदिर विध्वंस काल आदिक वर्णन सेहो मैथिली कथासाहित्यमे समाहित होइत रहल अछि ।

एहि तरहेँ मैथिली कथासाहित्यमे घटनाक सांगोपांग वर्णनक विन्यास अत्यन्त सुष्ठु रहल अछि । घटनाक वर्णन मात्रसँ कोनो कथा कोना चरमोत्कर्ष धरि जा जूमैत अछि, तकर उदाहरण अछि '*किरतनिञा*'क ई पाँती सभ–'*एकटा भिखमंगनी मरिए गेलि तऽ ककर की बिगड़लैक । दोसर दिन साँझ खन किरतनिआ आ चन्नरदास पाकड़िक गाछतर मरलि बुढ़ियाक लहास लग गामक दयावान लोकक फेंकल पैसा गनऽ लागल तऽ पूर-पूर सवा तीन टका भेलैक । किरतनिञा बाजलि-'एह! तीन टाका मे तऽ हम दूनू आठ दिन ताड़ी पी लेब ।*'[5]

वर्ग संघर्ष आधुनिक मैथिली कथाक एक गोट विशिष्ट विषय रहल अछि । मुदा सरस ओ सटीक वर्णन-विन्यास द्वारा कथाक पूर्वाभास दऽ सियारामझा' सरस' *इन्किलाब-जिन्दाबाद* कथामे जे नाटकीय रोचकता उत्पन्न कयलनि अछि, से आधुनिक मैथिली कथाक हेतु सबल मार्गनिर्देश अछि–'*कोनो शहरमे न्यू कालोनी किएक आ कोना बनि जाइत छैक, ठीक तहिना कोनो गाम मे नवटोलिया उगैत छैक । कोनो क्षेत्र विशेषमे जखन हवा, पानि, खोराकी, आवास आदि अनिवार्य वस्तुक अभाव होमय लगैत छैक, चलबा लेल रस्ता आ जोतबा लेल भूमि कम पड़ऽ लगैत छैक तँ किछु लोकक मोन मे उचाट लगैत छैक, किछु लोककेँ झगड़ा, झंझटि-फसादक कारणेँ मोन उबिआए लगैत छैक आ तखन एक्के दुइए किछु लोक ओतऽसँ उपटि कऽ अनतऽ कतो फैलगरमे जा कऽ बास लैये । एहने टोल आरंभमे नवटोल, नवगाँव, नवघरिया, नवटोलिआ कहबैये आ कालक्रममे नवानी, नवनगर आ नवादा भए जाइए ।*'[6]

वस्तुतः कथामे वर्णन-विन्यास एकर कथानक, चरित्र तथा घटनाक पल्लवन कऽ कथ्यकेँ पूर्णता प्रदान करैत अछि, ओहिमे सरसता, रोचकता ओ औत्सुक्यक सर्जन कऽ कथाकेँ काव्यात्मकता धरि पहुँचबैत अछि । ई कथाक महत्त्वपूर्ण साधन थिक । कथाक क्षेत्र विस्तार विश्वमानवक अनन्त परिसर धरि होइत जयबाक संगहि वर्णनक सेहो अनन्त क्षेत्र-विस्तार भेल अछि । मुदा कथाक आयाम सीमित होयबाक कारण कथामे वर्णन-विन्यास ओतबे धरि ग्राह्य होइछ जे ओकर कथ्यक घनत्व ओ सुसंघटनकेँ मर्यादाक स्तर पर बनौने राखि सकय ।

मैथिली कथासाहित्यमे वर्णनकेँ यथोचित स्थान भेटैत रहल अछि । कथाक ई तत्त्व मैथिली कथासाहित्यमे स्थूलता ओ अस्वाभाविकतासँ सूक्ष्मता ओ स्वाभाविकता दिस अग्रसर अछि । यद्यपि वर्णन-वैशद्यकेँ मैथिली कथाकारलोकनि आधुनिक कालमे परम्परावादिताक प्रतीक बूझऽ लगलाह अछि, तथापि अनुकूल ओ आकर्षक वर्णन एखनहुँ यथेच्छ स्वीकृति पबैत रहल अछि ।

मैथिली कथासाहित्यमे संवाद

संवाद कथासाहित्यक एक गोट गौण तत्त्व अछि । एहिसँ कथामे रोचकता ओ सजीवताक समावेश होइत छैक । पात्रक चरित्र-चित्रणहुमे संवाद सहायक होइत अछि । संवादक द्वारा पात्रक दृष्टिकोण, आदर्श ओ उद्देश्यक परिचय होइत छैक । एहिसँ कथाक घटनामे गत्यात्मकता अबैत छैक तथा भाषा-शैलीक सेहो निर्माण होइत छैक । अनुकूल समय ओ परिस्थितिमे संवाद योजना कथाक कथ्यकेँ पूर्ण आलोकित कऽ दैछ । वस्तुतः ई कथाकारक तकनीक थिक जे वस्तुकेँ आगू बढ़बैछ, पात्रक संग कथारसिकक, सहज सम्पर्क बनबैछ आ अन्ततः ओकर अनूभूतिक सहज अभिव्यंजनामे सहायक होइछ । संवाद स्वाभाविक एवं स्थान, काल ओ पात्रक चरित्र, स्तर तथा परिस्थितिक अनुकूल भेला पर कथानक ओ चरित्रक बीच कड़ीक काज करैत छैक । एहिसँ कथामे उत्सुकता, जीवन्तता ओ प्रभावान्विति उत्पन्न होइत छैक ।

नाटकीय संवाद

मैथिली कथासाहित्यमे संवादयोजनाक सर्वाधिक प्रशस्त शैली अछि नाटकीय संवादक । एहि शैलीमे पात्रक नाम दऽ कथाकार उत्तर-प्रत्युतरक संयोजन कऽ कथ्यकेँ आगू बढ़बैत छथि । संवादक ई शैली मैथिली कथासाहित्यक आरंभिक कालहिसँ पूर्ण प्रचलित रहल अछि । एहि शैलीमे कथ्यक अग्रेषण, चरित्रक उद्घाटन ओ घटनाक उपस्थापन पात्रलोकनिक उत्तर-प्रत्युत्तरेक माध्यमसँ प्रस्तुत होइत जाइत अछि । उदाहरणक हेतु–

'*टेढ़न झा–कहाँ गेलहुँ अय ! कन्टिरबीक माय ।*

रेवती– की कहैत छी । यैह तँ छी ।

टेढ़न झा– की करै छी ।

रेवती – (**क्रुद्ध स्वरेँ**) *करब की कपार । अहींक देल गद्दी पर बैसल छलहुँ । हमरा दम्म लेबाक छुट्टी नहि, ताहि पर रहि रहि अहाँ पुछैत छी जे की करै छी । भाग जे बैसल ठाम नहि खाइ छी, नहि तँ आओर अहाँ तमासा लगबितहुँ ।*

टेढ़न झा–व्यर्थ एतेक कियैक चर्खी औंटैत छी । अरे, साझ साझ कहू जं अमुक कार्य करैत छलहुँ ।'[7]

नाटकीय संवाद योजना मैथिलीक आरंभिक कथा सभमे पूर्णरूपेँ ग्राह्य छल । संवादयोजनाक ई शैली हरिमोहनझाक कथा सभमे सर्वाधिक सक्षम स्वरूपमे अवतरित भेल । हिनक संवादक प्रत्येक शब्दमे पात्रक व्यक्तित्व ओ चरित्र, देशकाल ओ वातावरण, घटना तथा संप्रेष्य अन्तर्द्वन्द्वकेँ सहजहिँ स्फुट करबाक सामर्थ्य दृष्टिगोचर होइछ, यथा–

'*एक गोटे बजलाह–देशी भाइ छथि तँ की माथ पर उठा लिऔन्ह ? एहिमे*

जगह कहाँ छैक ?

हम कहलियैन्ह-देखू, अहाँलोकनि जँ अपन मोटरी नीचाँ राखि ली तँ इ तीनू गोटे खुशीसँ बैसि जा सकैत छथि ।

एक गोटे उत्तर देलन्हि-मोटरीमे खयबा-पिउबाक वस्तु छैक । नीचाँ कोना रहत ।'[८]

एहि छोट सन संवादमे पात्रक असहयोगी स्वभाव, रूढ़िग्रस्त चरित्र, असौकर्यक विरुद्ध दोसर पात्रक संघर्ष तथा संभाव्य विघटनक प्रति औत्सुक्य आदि अनेक तथ्य उद्घाटित भऽ जाइत अछि । संवादक ई शैली आबहु मैथिली कथा साहित्यमे सहज रूपेँ स्वीकृति पओने अछि । मुदा एहि शैली मे किञ्चित परिवर्त्तन भेलैक अछि ।

नामोल्लेख रहित संवाद

मैथिली कथा साहित्यक संवादयोजनामे जे किञ्चित परिवर्त्तन नाटकीय संवादक दृष्टिञे भेल अछि, से थिक पात्रक नामोल्लेख बिनु कयनहिँ मात्र संवादहिसँ पात्रक प्रतीति करयबाक संवाद शैली । यद्यपि ई अत्यन्त स्थूल परिवर्त्तन अछि मुदा आधुनिक कथाकार एही संवाद शैलीकेँ विशेष रूपेँ ग्रहण कयलनि अछि यथा–

– हमरा लेल एतेक किएक सोचैत छी अहाँ ?
– कहू भला ! तखन ककरा लेल सोची ?
– एहि परिवारक एकटा अस्तित्वक लेल ।
– की अस्तित्व संतानेसँ बाँचत ?
– केहन अपसुआर्थी छी अहाँ ।
– एहिमे अपसुआर्थीक कोन गप्प ?[९]

एहि शैलीमे संकेत चिह्नक प्रयोगे पात्रक प्रतिनिधिक रूपमे राखल जाइत अछि । कोनो कथाकार तँ संकेत चिह्नहुकेँ आवश्यक नहि बुझैत छथि आ कथ्यकेँ वार्त्तालापक क्रममे प्रस्तुत करैत चल जाइत छथि आ पाठक पूर्वापर सम्बन्धहिक आधार पर वार्त्तालापकारक परिचय प्राप्त करबामे सक्षम बनैत छथि ।

स्वाभाविक संवाद

मैथिली कथासाहित्यमे नाटकीय संवादक जे स्वरूप देखि पड़ैत अछि ताहिमे मूलतः दुइ प्रकारक संवादयोजना अछि । एक प्रकारक संवादयोजना नाट्यनिर्देशसँ रहित केवल वार्त्तालापेक पद्धतिमे रहैत अछि आ दोसर प्रकारक संवादयोजनामे नाट्यनिर्देशहुक युक्ति रहैत छैक, जाहिसँ कथ्यक प्रस्तुतिक

शैलीक अभिव्यक्ति द्वारा पात्रक चरित्र अथवा घटनाक स्वरूपकेँ अधिकाधिक चमत्कारक संग प्रस्तुत कयल जाइछ । जखन कथाकार वार्त्ताक मध्य केवल नाट्यनिर्देशहि दऽ काज नहि चलबैछ अपितु स्वयं उपस्थित भऽ वर्णन-विन्यास द्वारा कथ्य ओ घटनाकेँ आगू बढ़बैत चलैछ तऽ एहन संवाद अधिक ग्राह्य ओ स्वाभाविक होइत छैक । मैथिली कथासाहित्यमे संवादक ई शैली आधुनिक कालमे सर्वाधिक लोकप्रिय अछि । एहि शैलीमे दुइ गोट वा अधिक पात्रक मध्य वार्त्तालाप आयोजित होइत अछि, से नाटकीय संवाद जकाँ एकसुराहे नहि रहैछ तावत् यावत् वार्त्ता कोनो स्तर धरि नहि पहुँचि जाय, अपितु एहिमे कथाकार स्वयं उपस्थित भऽ अथवा घटनाक वर्णन कऽ मध्यवर्ती स्थितिसँ पाठककेँ परिचित करबैत चलैत छथि आ घटना तथा वार्त्ता क्रमशः आगू बढ़ैत चलैछ । एहि प्रकारक संवादयोजनासँ कथ्य बेसी स्पष्ट भऽ कथातत्त्वकेँ संबलित करैछ । यथा–

'हीरा महतो कहलखिन–*कका, बेहरी माङय आयल छियै हम सब गोसाँइ मरड के इलाज ले' ।*

महाजन हिनका दिस गँहीर नजरिये ताकलखिन आ मूड़ी हिलबय लगलाह जेना अधिकतर लोक बिसमिल्ला खाँक शहनाइ सुनैत काल हिलबैए ।'

महाजन बजलाह–कथी मांगए एलह हें ? *बेहरी माङए ? बेहरी तँ भगवानक दसगरदा पूजामे माँगल जाइ छै हो ।*

हीरा महतो जेना तैयारे छलाह । कहलखिन, '*कका, सबसँ पैघ पूजा छियै ककरो जान बचेनाइ । गोसाँइ मरड़ मरि रहल छथि, हम सब हुनका प्राण देबनि । अइ सँ बेसी पैघ पूजा और की हेतै ?'*[१०]

एहि तरहेँ मैथिली कथासाहित्यमे संवादयोजनाक विविध स्वरूप प्रचलित अछि । ई गौण तत्त्वक रूपमे मैथिली कथासाहित्यक अंगरूपमे विद्यमान अछि । एम्हर आबि कऽ किछु कथाकार किछु कथामे संवादकेँ ततेक प्रमुख रूपेँ स्थान दऽ रहल छथि जे एहन कथाकेँ संवाद-कथा कहब कोनो अतिशयोक्ति नहि । कथाक एहि प्रकारमे घटना, परिवेश, चरित्र, कथानक, उद्देश्य आदि समस्त तत्त्वक आधार संवादे देखि पड़ैछ ।

मैथिली कथासाहित्यमे भाषा

कथासाहित्यमे भाषा-शैलीक महत्त्व अपरिमित अछि । कथ्यकेँ सुन्दरतम शृंखलाबद्ध ओ चमत्कारपूर्ण ढंगसँ प्रस्तुत करबाक सामर्थ्य, पाठकक अनुरंजन, ओकर हृदयक संवेदनाक जागरण, सरलता, सुबोधता, सरसता, प्रवाहपूर्णता आदि नीक कथाक समस्त गुणक साधन कथाक भाषा होइत छैक । कथाक

माध्यमे गूढ़सँ गूढ़ भावना ओ सूक्ष्मातिसूक्ष्म अनुभूतिकेँ अभिव्यक्ति प्रदान कयल जाइत अछि । ई अभिव्यंजना कथाक भाषा ओ ओकरा नीक जकाँ सजयबाक भंगिमा पर निर्भर करैत छैक । भाषाक सजीवता ओ शक्तिमत्ता कथामे गति उत्पन्न करैत छैक । एकर धारावाहिकता औत्सुक्यक निर्वाहमे सहायक होइत छैक ।

कथामे भाषाक महत्त्व सर्वोपरि एहि हेतु भऽ जाइछ जे ई एकर समस्त तत्त्वक संवाहक होइत अछि । पात्र, घटना, संवाद, परिवेश ओ उद्देश्य सभक अभिव्यक्तिक साधन होइछ कथाक भाषा । तेँ एकर प्राञ्जलता ओ बोधगम्यता सम्पूर्णतामे कथाकेँ प्रभावित करैत छैक ।

संस्कृतनिष्ठ भाषा

मैथिली कथासाहित्यक प्रारंभिक कालमे भाषामे संस्कृतनिष्ठ शैलीक प्रयोग होइत छल । एकर कारण ई छल जे सामान्यतः मैथिली कथाकार पण्डित वर्गक लोक होइत छलाह आ अपन भाषिक क्षमताक निरूपणमे अधिकाधिक तत्सम शब्दावलीक प्रयोग करैत छलाह, यथा–*'नव दम्पति एक दोसराक व्रणकेँ स्पर्श करैत आनन्द प्रवाहित कयलन्हि । चिरज्ञात वियोगोपरांत परस्पर ई स्पर्श केहन साकार आदर्शक परिचायक छल । उभय दम्पतिक व्रण-व्यवस्थाक स्थानमे अटल हर्षक साम्राज्य अंकित भेल । पार्थिव शरीरद्वयसँ स्वर्गीय तेज चमकि उठल जाहि आलोकसँ अन्य मानव-हृदय आलोकित भेल ।'*[11]

एहि प्रकारक भाषा-प्रयोगसँ कथ्यप्रवाह कुंठित होइत छल । एहि प्रकारक गद्यक भाषामे पाठकीय आकर्षणक अभाव छलैक । अवश्ये समानतामूलक उपमा, रूपकादि अलंकारक कथाक भाषामे प्रयोग कऽ कथ्यकेँ सुसंगत, सुस्पष्ट ओ चमत्कारिक बनयबाक परम्परा संस्कृतनिष्ठ भाषा-प्रयोगहिक देन थिक जे परवर्ती कथासाहित्यहुमे गृहीत रहल अछि ।

शुद्ध साहित्यिक भाषा

परवर्तीकालमे मैथिली कथाकारलोकनि अपन भाषाक संप्रेषण क्षमताक प्रति प्रतिबद्ध होइत गेलाह । एहि प्रतिबद्धताक कारणेँ तत्सम विन्यास क्रमशः मैथिली कथासँ फराक होइत चल गेल आ लोकप्रचलित ठेठ शब्दावलीक प्रयोग द्वारा कथाकेँ सुसज्जित करबाक प्रवृत्ति जोर पकड़लक । हरिमोहनझाक कथाक भाषा एहि दृष्टिञे सर्वाधिक सक्षम रूपमे समक्ष आयल । हिनक सुच्चा मैथिलीक लोकप्रचलित शब्दावली ओ प्रस्तुतिक भंगिमा कथ्यप्रवाह, सहजता ओ व्यंग्यात्मकताकेँ कतोक गुणित कऽ देलक । लक्षणा ओ व्यंजना शब्दशक्तिसँ सम्पन्न हिनक भाषा पाठकक हृदयकेँ झकझोड़ि देबामे अत्यन्त निष्णात सिद्ध भेल । परिणामतः मैथिली कथाक प्रति जनसामान्यक आकर्षण

क्रमशः बढ़ैत गेल । हिनक व्यंजनामूलक ई सन्दर्भ लोकप्रचलित मैथिलीक सशक्त उदाहरण अछि जे 'साझी आश्रम' कथामे अनुगुम्फित अछि–*''कनेयाँ काकी केँ नवका शतरंजी छैन्ह । बड़ शौख, हम अपना बिछाओनक शतरंजी दिऔन्ह ? हाँ बाबू, हथौड़ीवालीक कम्बल जुनि छुबहुन । देखथुन्ह त हाथ तोड़ि देथुन्ह ? हे दाइ, हमर लोटा जुनि उठबैत जाह । हम अछिंजल अनने छी । हाँ, हाँ, ओ खड़ाम मझिला बौआक छैन्ह । कोढ़िया कहाँसँ आबि कऽ सभकेँ दुःख देलक । खेबाक बेर दू दूटा गजाधर सन सन पहुँचि गेल ।'*'[12]

हरिमोहन बाबूक कथामे जेना ग्रामीणा मैथिली अपन सहज स्वरूपमे अवतरित भेलीह । हिनक ई अवतारणा ततेक लोकानुरंजक भेल जे हिनक भाषा एक गोट पीढ़ीक कथाकारलोकनिक आदर्श बनि गेल ।

बोलचालक भाषा वा ग्राम्य भाषा

विकासक अगिला चरणमे मैथिली कथासाहित्यक भाषामे एकटा विशिष्ट परिवर्त्तन लक्षित होइत अछि । ई थिक कथामे जनसामान्यक बोलचालक भाषाक प्रयोग । ई प्रयोग दू स्तर पर देखि पड़ैत अछि । प्रथम स्तरमे एहि प्रकारक भाषाक प्रयोग कथामे सहजता अनबाक हेतु वर्गीय बोलीक प्रयोगक रूपमे भेल अछि । एहि प्रकारक प्रयोगसँ मैथिलीक ग्राम्य स्वरूपहुकेँ साहित्यमे स्थान भेटऽ लगलैक । ललितक *रमजानी कथामे* ग्राम्य भाषाक ई वर्गीय प्रयोग देखल जा सकैछ–

'जर हंठ भेलउ .... ऊँ ।

–हुँ........पानि ला आ घोड़ी कहाँ हउ ।

–दूरा मे न हइ बान्हल की ? न न हए....... छित्ते रहलइ अ । चरैत हतेँ अही सब मे ।' ....किछु क्षण चुप्प रहि पुछलकैक-रोटी पका दिअ ? .....
..खएबऽ' ?

–आँटा हउ ? देतउ बनिआ उधारी ?

–जाइ छिकिअई ।'[13]

ग्राम्य भाषाक ई वर्गीय प्रयोग पात्र ओ परिवेशकेँ अपन मौलिक रूपमे कथामे व्यक्त करबामे समर्थ सिद्ध भेल । परवर्त्तीकालमे यैह भाषा दलित लेखनक भाषाक रूपमे स्वीकार्य भऽ गेल आ बोलचालक भाषाक प्रयोगक दोसर स्तर समक्ष आयल । पहिने जे ग्राम्य बोली–अपन स्वीकृतिक खोजमे पात्रक कथोपकथनक रूपमे साहित्यिक भाषाक रूपमे गृहीत भेल, परवर्तीकालमे यैह भाषा साहित्यिक भाषाक रूपमे सेहो कथामे स्वीकार्य भऽ गेल आ एहन भाषा अथवा एहन भाषाक पुट आधुनिक कथासाहित्यक अनिवार्य अंग जकाँ गृहीत भऽ गेल । यथा–*'से आइ जमुनो के गेला तीन माससँ ऊपर भऽ गेलै ।*

एतै दिन बेटेक चिन्ता छलै । आब घरवला गेलै तऽ सेहो सैह । मन घोर भेल रहै छै । अहूमे पेट की मानल जाइ छै ।"[14]

क्षेत्रीय प्रयोग

हरिमोहन बाबू प्रयोगधर्मी कथाकार छलाह आ कथाक क्षेत्रमे खास कऽ ओकर भाषाक स्वरूपमे ई ततेक प्रयोग कऽ गेल छथि जे मैथिलीक आधुनिक कथासाहित्यकेँ निरन्तर अनुप्राणित करैत रहल अछि। कथाक भाषाकेँ पात्रोचित ओ परिवेशक अनुकूल साँचामे ढारि ई कथाक गढ़निकेँ, ओकर घनीभूत व्यंजनाकेँ पराकाष्ठा धरि पहुँचा दैत छलाह । हिनक एक गोट नव प्रयोग छल मैथिली कथामे क्षेत्रीय उच्चारणक प्रयोग । 'भदेसक नमूना शीर्षक कथामे ई पछिमाहा मैथिलीकेँ तेना भऽ कऽ समाहित कऽ लेने छथि जे इंगित करैछ जे यदि मैथिलीक समस्त स्थानीय ओ जातिगत स्वरूप सभकेँ साहित्यमे समेटि लेल जाय तँ ई भाषा अपन विराट स्वरूप क्षेत्र, जनबलकेँ प्रदर्शित कऽ कोनहु भारतीय भाषाक साहित्यसँ अपनाकेँ श्रेष्ठ सिद्ध कऽ सकैछ । उदाहरणक हेतु ई अनुच्छेद द्रष्टव्य–*"आब लोर चुएला से कौन फैदा ? हीयाँ खाउ, पिउ, मौज करू । चार चार गो भैं हैं । दही, दूध, घी खूब ठेल कऽ खाउ । एमरी खैनी बिकाएत तब निम्मन साड़ी महनार सं लेले आएब । अगर ऊख के चलती हो गेल तब गहनो बनबा देब । बोलू, कोन कोन चीज के खाहिस होइअऽ ।"*[15]

एहिना देवघरिया मैथिलीक प्रयोग डॉ० रामदेवझाक कथा 'बसातक दाम' मे भेल अछि । *'तबे मोन पड़लै जे मालिक के कोठली खुललऽ रहं छै, से हम्मे तोरऽ कोठलीमे आबी पंखाक बसातमे भरि दुपहरिया आराम करैत रहलियौं । हम्मे पैसा कइसन लेमौ । ... । आब ठढ़ा होत' छै, हम्मे जाइ छियौं ।"*[16]

एहिना क्षेत्रीय मैथिलीक प्रयोग दिस किछु आनो कथाकार सभ सचेष्ट भेलाह अछि जाहिमे प्रदीपबिहारीक नाम उल्लेखनीय अछि । एहन प्रयोग मैथिली भाषा-साहित्यक भंडार ओ परिसरकेँ संपुष्ट करबाक दृष्टिञे स्वागत योग्य अछि । एहिसँ सम्पूर्ण मैथिली क्षेत्रमे भाषिक ऐक्यक सत्यताकेँ बल भेटतैक ।

कृत्रिम भाषा

क्षेत्रीय ओ वर्गीय भाषा यावत् धरि मैथिली कथाक सहजता ओ व्यंग्यात्मकताक विज्ञापनक साधनक रूपमे व्यवहृत होइत रहल अछि, तावते धरि ई भाषा-साहित्यक उपकारक रहल अछि । साध्यक रूपमे गृहीत भेने एहन प्रयोग कृत्रिमतासँ युक्त भऽ अनाकर्षक तथा शास्त्रीयतासँ विहीन भऽ भाषिक विकृतिक कारकक रूपमे प्रगट भेल अछि ।

स्वातंत्र्योत्तर मैथिली कथाक एकटा विशिष्ट धारा रहल अछि सामाजिक यथार्थ ओ वर्ग संघर्षक चित्रण । एहि कोटिक कथामे निम्नवर्गीय दलित-शोषितक व्यथा, अभाव, विपन्नता ओ तद्जन्य मानसिकताक चित्रण प्रमुख रहल अछि। एहि चित्रणकेँ सूक्ष्म, गंभीर, मुदा सहज संप्रेषणीयतासँ युक्त रखबाक लेल कथाकारलोकनि गाम-देहातक सहज बोलीकेँ कथामे स्थान दैत रहलाह अछि। तथापि किछु कथाकार दलित लेखनक संग गाम देहातक भाषा-प्रयोगकेँ अनिवार्य बूझि एकरा अपन कथाकर्मक भंगिमाक रूपमे अङेजि लेने छथि । खास कऽ एहन कथाकार जे दलित वर्गक सहज सम्पर्कमे नहि छथि, ओकर भाषासँ सर्वथा अनजान छथि, वातानुकूलित कमरामे दलित जीवनक कल्पना करैत छथि आ कथामे दलितेक भाषाक प्रयोगक असफल प्रयास करैत छथि, एकटा कृत्रिम भाषाक प्रयोग मैथिली कथासाहित्यमे कऽ रहल छथि । ई भाषा गाम-देहातक वर्गीय मैथिली नहि थिक । ई थिक कथाकारक मानससँ गठित भाषा जकर कृत्रिमता कथाक सहजता ओ चमत्कारकेँ कुंठित कऽ दैत अछि । उदाहरणक हेतु ई अनुच्छेद द्रष्टव्य–*'बेटा,हम तऽ सगरो कुच्छ के भुला दीए चाहै हिकियै, मुदा के कं आउर ने आके खोधि खोधि के पूछऽ लागैत हय ।"*[17]

विजातीय भाषाप्रयोग

पात्र ओ परिवेशक अनुकूल भाषा-प्रयोगक दोसर अवस्था अछि कथामे विजातीय भाषाक प्रयोग । मैथिली कथामे हिन्दी, उर्दू, बङला, भोजपुरी, मगही, अङरेजी आदि विभिन्न भाषाक प्रयोग कथ्यक सौन्दर्य बढ़यबाक हेतु कयल जाइत रहल अछि । लोकप्रचलित पर्यायक अभावमे पात्रक परिवेशक अनुकूल भाषा-प्रयोग कथ्यकेँ सहज संप्रेषणीय बनबैत छैक । तँ लोक-प्रचलित पर्यायक अभावमे अथवा पात्र ओ घटनाक संग भाषिक तालमेलक हेतु अन्यो भाषाक शब्द, वाक्य, अनुच्छेद पर्यन्त मैथिली कथामे पूर्वहिसँ ग्राह्य रहल अछि । हरिमोहनझा घरजमाय कथामे एक गोट तथाकथित अपटूडेट पात्रासँ कहौने छथिन–*"की हे दीदी ! अपना हसबैंडक हाल त कहबे नहि कैलह ? खूब लभ करै छथुन्ह की नहि ? हमरा तऽ तेहन ओबीडियंट भेटल छथि जे की मजाल कोनो बात अपना मन सँ करताह । जं हमर आर्डर हेतैन्ह सैह करय पड़तैन्ह । एहिठामसँ कैलकटा जयबाक प्रोग्राम अछि । ओतए एक हफ्ता रहि खूब सिनेमा-थियेटर देखब। 'ट्राम वे' मे सैर करब । फैन्सी चीज सभ खरीदब ।"*[18]

एहिठाम पात्रक चरित्र ओ ओकर साक्षरताजन्य मनोभावकेँ अभिव्यक्त करबाक हेतु बहुशः अंग्रेजी शब्दावलीक प्रयोग भेल अछि, जे कथातत्त्व ओ

अभिव्यंजनाकेँ संवलित करैत अछि । एहि प्रकारक प्रयाग मैथिली कथासाहित्यमे सहज रूपेँ ग्राह्य अछि, प्रचलित अछि ।

एहिना इतर भाषाक पात्र ओ पात्रासँ कथामे विजातीय वाक्य-प्रयोग सेहो कराओल जाइत रहल अछि एवं आवश्यक रहने ओकर मैथिली रूपान्तर दऽ देल जाइत रहल अछि ।

मुदा एम्हर आबि कऽ किछु कथाकार संक्रमणक स्तर धरि विजातीय भाषाक प्रयोग करऽ लगलाह अछि । एहन कथाकारक कथामे विजातीय शब्द, वाक्य ओ अनुच्छेद आरोपित बुझना जाइत अछि । एहन प्रयोगसँ मैथिली तत्त्वसँ बेसी संक्रामके भाषाक तत्त्वक प्राधान्य भऽ गेने भाषिक स्तर पर मैथिलीक जीवन्तताकेँ क्षति पहुँचि रहल छैक तथा कथाकारक अपन भाषाक प्रति हीन भावनाक परिचय सेहो होइत छैक । तेँ एहन प्रयोग वांछनीय नहि कहल जा सकैछ । एहि कोटिक कथाक उदाहरण अछि-**बाड़ीक पटुआ,**[19] **कित्थे जाणां,**[20] **अभियुक्त**[21] आदि ।

भाषा विकृति

आधुनिक मैथिली कथासाहित्यमे किछु कथाकारक भाषा विकृतिक स्तर धरि संक्रमित भऽ गेलनि अछि । खास कऽ एहन कथाकार जे मिथिलाक भाषा ओ संस्कृतिक सम्पर्कमे नहि छथि, अपन भाषाक शब्दावली ओ वाक्य-विन्यासपर पूर्ण अधिकार नहि छनि, कथालेखनकेँ भाषा विकृतिक शिकार कऽ रहल छथि । हिनकालोकनिक कथाक भाषामे हिन्दीक अनपच शब्द ओ वाक्य विन्यासकेँ प्रश्रय देल जा रहल अछि यथा- *'छुछुनदर अनेरं चिचिआइत अछि । हम नाङरि नहि चीपितियै त ओ मरितय कोना । हम तय नहि क पौलहुँ । लोकसभ बकुचि गेल अछि । मनलायक वस्तुक फरमाइस करय लागल । ओ प्रश्नक बौछार करय लागलि छलैक । ओकरा बेरबेर चारू दिससँ साजिसक अभास होइत छलै ।'*[22]

आइ मैथिली कथाक परिधि अत्यन्त व्यापक भऽ गेल अछि । लोकजीवनक प्रीति, उत्साह, उदारता, करुणा, आक्रोश, संघर्ष, रूढ़ि, आचार, स्वातंत्र्योत्तर भारतक अर्थनीति ओ राजनीति, समाज व्यवस्था, न्याय, धर्म, उच्चवर्गक विलास, निम्नवर्गक दैन्य, मध्यवर्गक द्वन्द्व, कृषक मजदूरक चेतना, सरकारी कर्मचारीक चरित्र, सामाजिक ओ व्यक्तिगत जीवनमे व्याप्त फरेब, अनाचार, बेकारी, अशिक्षा, शोषण-उत्पीड़नक नित्य विकासमान प्रक्रिया, प्राकृतिक आपदाजन्य विवशता, वैज्ञानिक चमत्कारजन्य उल्लास आदि मानवकेँ प्रभावित करऽवला असंख्य तत्त्व कथाक माध्यमे रूपायित भऽ रहल अछि । मनोवैज्ञानिक विश्लेषण द्वारा कथ्यकेँ घनीभूत कऽ पाठकक हृदयकेँ आन्दोलित-हिन्दोलित करब आजुक कथाक मूल आधार थिक, तेँ मैथिली

कथामे मनोविश्लेषणकेँ क्रमशः अधिक प्रश्रय भेटि रहल छैक । मुदा कथ्यक स्पष्टता जे मैथिली कथासाहित्यक आदि-प्रवृत्ति रहल अछि, ताहिमे व्यक्तिक्रमो कतोक मनोविश्लेषणात्मक कथामे देखि पड़ैत अछि । अवश्ये कथाक भाषाकेँ लोकोक्ति ओ मोहावरासँ संपुटित, शाश्वत सत्यक निवेशसँ सुगठित करबाक प्रवृत्ति साम्प्रतिको मैथिली कथाक भाषामे सर्वथा ग्राह्य अछिए । अवश्ये आजुक मैथिली कथाक भाषा कथाकारक भाषासँ बेसी कथाक पात्रक भाषा, लोकजीवनक भाषासँ प्रभावित अछि ।

एतावता मैथिली कथासाहित्यमे वर्णन, संवाद ओ भाषाक स्वरूप नित्य विकासक पथ पर अग्रसर अछि आ ओकर समस्त तत्त्वक संवहन करैत मैथिली कथासाहित्यकेँ समस्त भारतीय कथा साहित्यक समानान्तर ठाढ़ रखबामे सक्षम अछि ।

सन्दर्भ-संकेत

1. जनार्दनझा 'जनसीदन'-डॉ. रामदेवझा, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 1998, पृ. 135
2. कथा संग्रह-सं. डॉ. अमरेशपाठक, मैथिली अकादमी, पटना, 1984, पृ. 28
3. मैथिली प्रसिद्ध कथा-भाग 1. सं. डॉ० बासुकीनाथझा, मैथिली अकादमी, पटना, 1984, पृ. 19
4. मैथिली कथाधारा-सं. कामाख्यादेवी, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 1982, पृ. 56
5. कृति राजकमलक-सं. प्रो. आनन्दमिश्र, मैथिली अकादमी, पटना, 1980, पृ. 20
6. भरि राति भोर-सं. प्रदीप बिहारी, चतुरंग प्रकाशन, बेगूसराय, 1998, पृ. 147
7. मैथिलीक आरंभिक कथा-सं. रमानन्दझा 'रमण', अधीत प्रकाशन, पटना-6, 1978, पृ. 34
8. एकादशी-हरिमोहनझा, जनसीदन प्रकाशन, कुमर वाजितपुर, वैशाली, 1984, पृ. 16
9. कथापरिधि-राजारामप्रसाद, अभिलाष प्रकाशन, बसुली निवास, कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा, 1997, पृ. 44
10. भरि राति भोर, पृ. 103
11. मैथिलीक आरंभिक कथा, पृ. 51
12. प्रणम्य देवता-हरिमोहनझा, जनसीदन प्रकाशन, कुमर वाजितपुर, वैशाली, पृ. 23
13. मैथिली प्रसिद्ध कथा भाग-2-सं. डॉ. बासुकीनाथझा, मैथिली अकादमी, पटना, 1984, पृ. 65
14. त्रिकोण-उर्वशी प्रकाशन, पटना, 1986, पृ. 65
15. प्रणम्य देवता, पृ. 129
16. धरती माता-डॉ. रामदेवझा, मिथिला रिसर्च सोसाइटी, लहेरियासराय, दरभंगा, 1985, पृ. 42
17. ओकर कानब-रमानन्दरेणु, वैदेही, अक्टूबर 1988
18. प्रणम्य देवता, पृ. 43
19. वैदेही, दिसम्बर 1988
20. आरंभ, पटना, 18
21. भारती मंडन प्रवेशांक
22. कोनो एकटा गाम-प्रो. मनमोहनझा, प्रोफेसर्स कॉलनी, सी.एम.कॉलेज, दरभंगा ।

◆◆◆

देशी शब्दक अवधारणा

तत्सम, तद्भव ओ गृहीत शब्द-सम्पदासँ इतर शब्दक हेतु देश्य, देशी, देशज, देशीमत आदि अभिधानक प्रयोग होइत रहल अछि । वस्तुतः देशज शब्दसँ तात्पर्य अज्ञात व्युत्पत्तिक शब्द अछि । एहन शब्द जकर स्रोत अथवा मूल निश्चित रूपसँ ज्ञात नहि अछि, देशी कहल जाइत अछि ।

दैनन्दिन प्रयोगमे एहन सहस्रो शब्द जनसामान्यमे प्रयुक्त देखल जाइत अछि जे ने तँ संस्कृत-स्रोतसँ यथावत् गृहीत अछि आ ने विकृतिक संगहि । ततःपर एहन शब्दक विदेशज-स्रोतोसँ गृहीत होयबाक कोनो सूत्र जँ नहि भेटि पबैत अछि तँ एहन शब्दकेँ वैयाकरणलोकनिक भाषामे देशी ओ सामान्य जनक भाषामे ठेठ शब्द कहल जाइत छैक । मैथिलीमे प्रचलित अघायल, उड़ीस, ओढ़ना, कोसिआ, कोइला, खाल, खलड़ा, खाली, गन्ह, गोबर, घघरा, घाट, चटुआ, चाउर, चास, चील्ह, चिल्लर, चोङा, छिनार, छाल, छाल्ही, झंखार, झूठ, ढकना, ताग, बुलबुल्ला, बेङ्ग, भूर, मौनी, हाली-हाली आदि किछु एहने शब्द थिक । भाषा ओ साहित्यक एहि महत्त्वपूर्ण सम्पदा दिस एखन धरि विद्वानलोकनिक सम्यक् ध्यान नहि पड़ल अछि । विभिन्न भाषाविद्लोकनि एहि शब्द-सम्पदाकेँ परम्परित रूपेँ परिभाषित मात्र कऽ संतुष्ट होइत गेलाह अछि । आचार्य रमानाथझा एकरा परिभाषित करैत कहलनि अछि जे *ई ने तँ संस्कृतसँ आयल अछि ने भाषान्तरेसँ किन्तु स्वतंत्र मिथिला देशक शब्द थिक* ।[1] श्री गोविन्दझा एकरा *अज्ञात व्युत्पत्तिक* कहि विराम लऽ लेलनि अछि ।[2]

जतऽ धरि देशी शब्दक अवधारणाक सम्बन्ध अछि, एहि शब्दक प्रयोग अत्यन्त प्राचीने कालसँ होइत रहल अछि । नाट्यशास्त्रमे आचार्य भरत देशी (देशीमत) शब्दक सर्वप्रथम प्रयोग कयने छथि । यद्यपि ओ एहि पर विस्तारपूर्वक विचार नहि कयने छथि तथापि एतबा तँ अवश्ये स्पष्ट अछि जे तथाकथित *देशीमत* शब्द समान (संस्कृतसम) तथा विभ्रष्ट (संस्कृतभव) शब्दसँ भिन्न प्रकारक होइत छल । अवश्ये एहन शब्द ने तँ संस्कृत भाषाक होइत छल ने संस्कृतसँ विकसित अथवा विकृते स्वरूपक ।[3]

काव्यादर्शमे आचार्य दण्डी देशी शब्दकेँ प्राकृतक एकटा प्रभेद कहने छथि ।[4] आचार्य दण्डीक परिभाषाक व्याख्या करैत श्रीरामचन्द्रमिश्र कहने छथि जे–'*संस्कृत ओहि भाषाक नाम थिक जकरा देवतालोकनि अपन व्यवहारमे उपयुक्त कयलनि तथा जे प्रकृत-प्रत्ययादि प्रदर्शन द्वारा यास्क प्रभृति निरूक्तकार तथा पाणिन्यादि आचार्य द्वारा साधित भेल ।*' *प्राकृत साधारण जन जकर व्यवहार करथि अथवा जे प्रकृत संस्कृतसँ उत्पन्न हो से प्राकृत थिक । ओ अनेक प्रकारक अछि-तद्भव, तत्सम ओ देशी । तद्भव शब्द ओ थिक जे संस्कृतसँ बनल मुदा पूर्णतः संस्कृते नहि रहि गेल । तत्सम ओ थिक जाहिमे आकार परिवर्तन नहि भेल होइक, मात्र विभक्तिच्युति होइक । देशी शब्द ओ थिक जकर मूल संस्कृत दुर्ज्ञेय हो जेना मौनी ।*[5]

आचार्य रूद्रट देशी शब्दकेँ परिभाषित करैत कहने छथि जे *जाहि शब्दक प्रकृति-प्रत्यय मूलक व्युत्पति नहि देखाओल जा सकय से देशी थिक* ।[6]

एतावता ई सिद्ध होइत अछि जे प्राकृते कालमे जनभाषामे एहन शब्दक बहुलतासँ प्रयोग होमऽ लागल छल जे संस्कृतसँ सर्वथा निरपेक्ष छल । तत्कालीन भाषाक एहने शब्दकेँ लक्ष्य कऽ साहित्यशास्त्रीलोकनि देशी अभिधान रखलनि आ भाषाक शब्दक वर्गीकरणक प्रक्रिया संभवतः ओही कालमे स्पष्ट रूपेँ शुरू भेल ।

शब्दक वर्गीकरणक एहि प्रक्रियाक परिणामस्वरूप देशी शब्द अपन समस्त साहित्यिक गरिमाक संग बारहम शताब्दीक हेमचन्द्रक *देशीनाममाला* नामक कोश-ग्रंथमे संगृहीत भेल । आचार्य हेमचन्द्रक ई ग्रन्थ देशी शब्दक अध्ययनक दृष्टिञे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मानल जाइत रहल अछि । हेमचन्द्र देशी शब्दक परिभाषा कयने छथि जे '*एहन शब्द जे शब्दशास्त्रक प्रकृति प्रत्ययादि लक्षणसँ निष्पन्न नहि होइछ, से देशी थिक यदि च ओकर निष्पत्ति संस्कृतसँ देखाइयो देल जाइक तथापि ओ ओहि अर्थमे संस्कृतकोशमे गृहीत नहि अछि, तैओ देशी कहाओत । मुदा जे शब्द संस्कृत-कोशमे स्वीकृत नहिओ अछि तथापि लाक्षणिक वा गौण प्रयोगक आधार पर प्रतिपादित अछि, से देशी नहि थिक* ।[7]

एतावता आचार्यक अवधारणामे संस्कृत-कोशमे देल अर्थसँ परिवर्त्तित अर्थवला प्रकृतिप्रत्ययसँ सिद्धो शब्दकेँ देशी बूझल गेल । ताहूमे ओहने शब्दकेँ ओ अपन कोशमे स्थान देलनि जे प्राकृत भाषामे अनादि कालसँ प्रयुक्त (प्रवृत्त) भऽ रहल छल । एकर कारण पर विचार करैत, आचार्य कहने छथि जे *देश-विशेषमे पृथक् अर्थमे रूढ़ शब्दक संख्या अनन्त छल आ ओकरा सभक विभिन्न अर्थक संकलन सर्वथा असम्भव छल* ।[8]

हिनके परिभाषासँ भावग्रहण कऽ श्रीचन्द्रप्रकाश त्यागी देशीकेँ ध्वन्यात्मक *प्रकृतिक आधार पर यथासमय निर्मित ओहन शब्द कहलनि अछि जे ने तँ*

संस्कृत कोश, गौणीलक्षणा वा प्रकृतिप्रत्ययादिसँ सिद्ध होइछ आ ने कोनो विदेशी स्रोतसँ गृहीत अछि ।[9]

आचार्य हेमचन्द्रक अवधारणा पर विचार करैत प्रसिद्ध भाषाशास्त्री आर॰ पिशल कहलनि अछि जे–'*देशी शब्दक अन्तर्गत ओ समस्त शब्द राखि देल गेल अछि जकर मूल वैयाकरणलोकनिक ज्ञान-परिधिमे संस्कृतमे नहि भेटैछ । संस्कृत भाषाक अपन-अपन ज्ञानक सीमाक भीतर अथवा शब्दक व्युत्पत्ति निकालबामे अपन अल्पाधिक्य चातुर्यक हिसाबेँ देशी शब्दक चुनाव मे नाना मुनिक नाना मत अछि । कोनो विद्वान एक शब्दकेँ देशी कहैत छथि तँ दोसर ओकरा तत्सम अथवा तद्भवक कोटिमे रखैत छथि । एहि तरहेँ देशी शब्दमे एहनो शब्द आबि गेल अछि जे स्पष्टतः संस्कृत-मूल धरि पहुँचि जाइत अछि किन्तु जकर संस्कृतमे कोनो ठीक-ठीक अनुरूप शब्द नहि भेटैत अछि । किछु एहन सामासिक ओ सन्धियुक्त शब्द सेहो राखि देल गेल जकर सब शब्द तँ पृथक्-पृथक् भेटैत अछि मुदा समस्त सामासिक वा सन्धियुक्त शब्द संस्कृतमे भेटिते नहि अछि । किछु एहनो शब्दकेँ देशी अभिधान दऽ देल गेलैक अछि जे ध्वनि नियमक विचित्रता देखबैत अछि ।*[10]

बीम्स महोदयक विचारेँ *देशज ओ शब्द थिक जकर व्युत्पत्ति संस्कृतसँ नहि भेल अछि आ तँ देशजकेँ प्राचीनतम निवासीलोकनिसँ गृहीत अथवा प्राक्संस्कृतकालमे आर्यलोकनि द्वारा अनुसंधित बूझल जाइछ ।*[11]

जी॰ ए॰ ग्रियर्सन देशी शब्दक परिकल्पनाकेँ भाषा सम्बन्धी संकुचित ज्ञानक परिणाम मानलनि अछि । अर्थात् तथाकथित देशी शब्द कोनो ने कोनो मूल शब्दहिक विकसित रूप थिक । अपन विवेचनमे ओ कहलनि अछि जे '*एहि कोटिमे ओ समस्त शब्द समेटि लेल गेल अछि जकरा संस्कृत मूलसँ व्युत्पन्न देखयबामे वैयाकरणलोकनि अक्षम सिद्ध भेलाह । एहि कोटिमे वैयाकरणलोकनिक अल्पज्ञताक कारणेँ सेहो अनेक शब्द संगृहीत भऽ गेल अछि । आधुनिक विद्वानलोकनि अधिकांश देशी शब्दक मूल संस्कृतमे ताकि सकैत छथि । किछु देशी शब्द मुण्डा ओ द्रविड़ भाषासँ सेहो गृहीत अछि । यद्यपि एहि कोटि मध्य अधिकांश शब्द प्रथम प्राकृतक विभिन्न उपभाषासँ व्युत्पन्न अछि जे ओ नहि थिक जाहिसँ शास्त्रीय संस्कृत अवक्रमित भेल । तँ देशज शब्द वस्तुतः तद्भवे थिक मुदा ओहि अर्थमे नहि जाहि अर्थमे भारतीय वैयाकरणलोकनि ओकर प्रयोग कयलनि अछि । हुनकालोकनिक दर्शनमे प्रथम प्राकृतक विभिन्न उपभाषाक विद्यमत्ता अकल्पित रहल । ई देशी शब्द सभ स्थानीय औपभाषिक स्वरूपक छल ।*[12]

डा॰ पूर्णसिंह डबास *हिन्दीमे प्रचलित ओहि अज्ञात व्युत्पत्तिमूलक*

शब्दकेँ देशज कहलनि अछि जकर निश्चित व्युत्पत्ति तँ अज्ञात अछि मुदा संभावनाक दृष्टिसँ जे लोक व्यवहारसँ अज्ञात अथवा ध्वनि अनुकरणक आधार पर निर्मित, अत्यधिक विकारक कारण संस्कृते शब्दक अनचीन्ह रूप, प्रारंभिक-प्राकृत अथवा संस्कृतेक संस्कृत तथा प्राकृत साहित्यमे अप्रयुक्त शब्द तथा आस्ट्रिक ओ द्रविड़ आदि आर्येतर भाषासँ गृहीत भऽ सकैछ ।[13]

डा॰ सुनीति कुमार चटर्जीक अनुसार देशी शब्द वास्तवमे जनसामान्य द्वारा आर्यभाषा ग्रहणसँ पूर्वक उपभाषा सबहिक अवशेष थिक । द्रविड़ एवं आन आर्येतर भाषाक शब्द जे वैदिके कालमे आर्यभाषामे गृहीत भऽ चुकल छल सेहो प्राचीन भारतीय आर्यभाषाक हेतु देशीए थिक । मध्य भारतीय आर्य – भाषाक आरम्भिक स्तरमे ई आर्येतरो शब्द-समूह आर्यभाषाक अविछिन्न शब्द भऽ गेल । प्राकृत कालमे आबि कऽ वैयाकरणलोकनिक ध्यान एहन शब्द पर गेलनि, खास कऽ एहि हेतु जे एहन शब्दक ने तँ कोनो समान वैदिके शब्द छल आ ने कोनो संस्कृते शब्द जाहिसँ ओकरा व्युत्पन्न बूझल जाइत । तँ वैयाकरणलोकनि एहन शब्दक हेतु देशी अर्थात् स्वदेशी अभिधानक मोहर लगा देलनि ।[14]

एही तथ्यसँ मिलैत जुलैत आचार्य पिशल सेहो कहलनि अछि जे एहि देशी शब्दमे क्रियावाचक शब्दक बहुलता अछि । एहन क्रियावाचक शब्द अर्थात् धातुक मूलरूप संस्कृतमे तँ नहि भेटैत अछि मुदा आधुनिक भारतीय आर्यभाषाक धातु एहिसँ पूरा मिलैत अछि । जेना कि देशी शब्दक नामेसँ स्पष्ट अछि एहन शब्द प्रादेशिक शब्दक वाचक रहल होयत आ बादमे सार्वदेशिक प्राकृतक रूपमे सम्मिलित कऽ लेल गेल होयत । एहन बहुतो शब्द प्राकृत अथवा अपभ्रंससँ संस्कृत कोश ओ धातुपाठमे गृहीत भय गेल । इहो संभव जे देशी शब्दमे आर्येतर शब्द सेहो आबि गेल होयत किन्तु बहुत अधिक शब्द मूल आर्यभाषा शब्दभंडारसँ गृहीत अछि जकरा व्यर्थहि संस्कृतमे ताकल जाइत अछि ।[15]

एतावता देशी शब्द पर प्राचीने कालसँ बड़ बेसी मन्थन होइत रहल अछि आ निष्कर्ष रूपेँ कहल जा सकैछ जे देशी शब्दक अवधारणा अत्यन्त अनिश्चित अछि । ई अवधारणा भाषाज्ञानक सीमा-सापेक्ष अछि आ कोनो शब्द अपन उद्गमक मूल स्रोतक अन्वेषणसँ पूर्व धरि देशीए थिक ।

सन्दर्भ-संकेत

1. मिथिला भाषा प्रकाश-श्रीरमानाथझा, ग्रन्थालय प्रकाशन, दरभंगा, चतुर्थ संस्करण, 1964, पृ॰ 17

2. उच्चतर मैथिली व्याकरण-पं० गोविन्दझा, मैथिली अकादमी, पटना, 1979, पृ. 24-25

3. नाट्यशास्त्र–भरत, 17/3

त्रिविधं तच्च विज्ञेयं नाट्ययोग समासतः ।
समान शब्द विभ्रष्ट देशीमतमथापि वा ॥

4. काव्यादर्श-दण्डी, 1/33

संस्कृत नाम देवी वागन्व्याखाता महर्षिभिः ।
तद्भवस्तत्समो देशीत्यनेकः प्राकृतः क्रमः ॥

5. हिन्दी काव्यादर्श, व्याख्याकार-आचार्य श्रीरामचन्द्रमिश्र, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी, 1972, पृ 31

6. काव्यप्रकाश-रुद्रट, 6/27

'प्रकृति प्रत्ययमूला व्युत्पत्तिर्नास्ति यस्य देशस्य'।

7. देशीनाममाला-हेमचन्द, सं. आर.. पिशल, पार्ट-1, गोवर्नमेन्ट सेन्ट्रल बुक डिपो, बम्बई, 1880, 1/3

जे लक्खणे ण सिद्धा ण प्रसिद्धा सक्कयाहिहाणेसु ।
ण य गउण लक्खणा सत्त संभवा ते इह निबद्धा ॥

8. तत्रैव, 1/4

देशविसेस पसिद्धीइ भण्णमाना अनन्तया हुन्ति ।
तम्हा अणाइ पाइअपयट्ट भाषा विसेसओ देसी ॥

9. देशी शब्दों का भाषावैज्ञानिक अध्ययन-डॉ०चन्द्रप्रकाश त्यागी, लिपि प्रकाशन, एफ 3/24, कृष्णनगर, दिल्ली-51, 1972, पृ० 31

10. प्राकृत भाषाओं का व्याकरण-रिजर्ड पिशल, अनु० डा० हेमचन्द जोशी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, 1958, पृ० 13-14

11. ए कम्परेटिभ ग्रामर ऑफ द माडर्न आर्यन लैंग्वेज ऑफ इण्डिया– जॉन बीम्स, मुन्सीराम मनोहरलाल, नई दिल्ली, 1970, इन्ट्रोडक्सन, पृ. 12.

12. लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया-जी० ए० ग्रियर्सन, भॉल्यूम - 1, पार्ट 1, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1967, इन्ट्रोडक्टरी, पृ० 127

13. हिन्दी में देशज शब्द–डॉ० पूर्णसिंह डबास, नालंदा प्रकाशन, नई दिल्ली–30,1980, पृ० 79

14. ऑरिजिन एण्ड डेभलपमेन्ट ऑफ बंगाली लैंग्वेज, द्वितीय संस्करण, पृ० 192

15. प्राकृत भाषाओं का व्याकरण, पृ० 14.



देशीनाममाला ओ मैथिली

देशी शब्दक अध्ययनक दृष्टिजे बारहम शताब्दीक वैयाकरण ओ बौद्ध सिद्धाचार्य हेमचन्द्रक प्राकृत व्याकरणक परिशिष्ट रूपमे संकलित देशी शब्दक अभूतपूर्व ओ नियामक संकलन 'देशीनाममाला' अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि । एहिमे तत्कालीन प्राकृतमे प्रयुक्त लगभग चारि हजार देशी शब्दक संकलन, व्याख्या ओ साहित्यिक प्रयोगक मनोरम विश्लेषण भेल अछि । एहिमे संकलित शब्दावलीक अध्ययन कयला उत्तर ई स्पष्ट होइत अछि जे तत्कालीन तथाकथित देशी शब्दमे अधिकांश साम्प्रतिको भारतीय आर्यभाषा सभमे अपन मूल रूपमे वा किञ्चित ध्वनि ओ अर्थ-परिवर्तनक संग प्रचलित अछि ।

देशीनाममालामे संकलित शताधिक शब्दक मैथिली समरूप शब्द भेटैत अछि । ई शब्द-समूह मैथिलीक भाषातात्त्विक पर्यवेक्षणक हेतु बहुमूल्य सामग्री थिक । तुलनात्मक अध्ययनक आधार पर अनेक भाषातात्त्विक विशिष्टता देशीनाममालाक शब्द ओ तकर समरूप मैथिली शब्दावलीमे दृष्टिगोचर होइत अछि । देशीनाममालामे संकलित किछु शब्द तँ मैथिलीमे एखनो अपन मूल रूपमे सुरक्षित-प्रचलित अछि, जेना–

देशीनाममालाक शब्द ओ अर्थ		मैथिली रूप ओ अर्थ	
उड्दि (1-98)	: अन्नविशेष	उड़ीद	: अन्नविशेष, माष, तेबखा
कीर (2-21)	: सुग्गा	कीर[1]	: (प्रा० मै०) : सुग्गा
झष (2-57)	: लघुमत्स	झख[2]	: छोट माछ
घघ्घर (2-107)	: जघनवस्त्र भेद	घघर	: जघनवस्त्र विशेष
धणी (5-62)	: भार्या	धनी[3]	: (प्रा० मै०) :भार्या, स्त्री
पूणी (6-56)	: तूललता	पूनी	: तूललता

मुदा अधिकांश शब्दमे ध्वनि ओ अर्थ परिवर्तनक विभिन्न आयाम परिलक्षित होइत अछि । ध्वनि परिवर्तनक विभिन्न दिशा परम्परिते स्वरूपक अछि, जेना–

आगम

असिअ (1-14)	: दात्र	हाँसू	: दात्र
आइप्पण (1-78)	: उत्सवमे घर सजयबाक हेतु प्रयुक्त पिष्टान्न	अरिपन	: घर सजयबाक हेतु सेनुर-पिठारसँ निर्मित आकृति

ओड्ढण (1-155)	: उत्तरीय	ओढ़ना	: उत्तरीय विशेष
कइलबइल्ल (2-25	: स्वच्छन्दचारी वृषभ	कैलाबैल	: उज्जर रंगक बड़द
कुसण (2-35)	: तीमन	कसौनी	: काँच आमसँ निर्मित व्यंजन विशेष
कोसय (2-47)	: लघु सरबा	कोसिया	: लघु सरबा
कलर (2-53)	: कङ्काल	कल्लर	: कङ्गाल
कणअ (2-56)	: वाण	कनिआरा[1]	(प्रा. मै.) : तीक्ष्ण
... .		कनकन करब	: तीव्रवेगी होयब
... .		कनकनायब	: वाण जकाँ चुभब
खद्ध (2-67)	: भुक्त	खाधुर	: अधिक खायवला
खलइअ (2-71	: रिक्त	खाली	: रिक्त
चट्टू (3-1)	: दारूहस्त	चटुआ	: काठक छोट पिढ़िया
चिल्ल (3-10)	: बच्चा	चिलका	: बच्चा
झंखर (3-54)	: शुष्क तरु	झंखार	: शुष्क तरु
रूअ (7-9)	: तूर	रूआ (रुइया)	: तूर

लोप

अजराउर (1-45)	: उष्ण	जराउर	: मकर संक्रान्तिक अवसर पर सद्यःपरिणीता पुत्रवधू ओ सद्यःपरिणीत जमायकेँ देय उष्ण वस्त्र
ओहाडणी (1-161)	: पिधानी	ओहाड़	: झाँपन
ओसा (1-164)	: निशाजल	ओस	: निशाजल
कोल्हुअ (2-65)	: इक्षुनिपीडनयन्त्र	कोल्हु	: इक्षु, तेलहनादि निपीडनयन्त्र
काहार (2-27)	: जलादिवाही कर्मकार	कहार	: शिविकावाही कर्मकार
कुरकुरिअ (2-42)	: रणरणक	कुरकुर	: खाद्य पदार्थक त्रोटण ध्वनि विशेष
कोहल्ली (2-46)	: तापिका	कोहला	: कंसारमे बालु धिपयबाक हेतु प्रयुक्त कोहा
खरहिअ (2-72)	: पौत्र	खरहू	: नेनाक समूह
गंधिअ (2-83)	: दुर्गन्ध	गन्ध[5]	: दुर्गन्ध
चिल्लिरी (3-11)	: मशक	चिल्लर	: मशक सदृश कीट विशेष

पक्खरा (6-10)	: तुरग कवच	पक्खर[6] :(प्रा० मै०)	: तुरग कवच
पेल्लिअ (6-57)	: पीडित	पेलब	: पीड़ापूर्वक समावेशन, ठेलब
बुलंबुला (6-97)	: बुदबुद	बुलबुल्ला	: बुदबुद
मेली (6-138)	: जनसंहति	मेला	: जनसंहति

विपर्यय

अहोरण (1-25)	: उत्तरीय	ओढ़न	: उत्तरीय विशेष
कुन्दीर (2-39)	: बिम्बाफल	कुन्दरी	: लताफल विशेष
छलिआ (3-24)	: विदग्ध	छइल्ल[7]	: विदग्ध

विकार

ध्वनि-परिवर्त्तनमे विकार दिशाक बहुआयामी स्वरूप देशीनाममालाक शब्दावली ओ समरूप मैथिली शब्दावलीक तुलनात्मक अध्ययनसँ दृष्टिगोचर होइछ जाहिमे किछु उदाहरणार्थ प्रस्तुत कयल जाइछ :

क्षतिपूरक दीर्घीकरण

खल्ला (2-66)	: चर्म	खाल	: चर्म
घट्ट (2-111)	: नदीतीर्थ	घाट	: नदीतीर्थ
णवक (4-46)	: घ्राण	नाक	: घ्राणेन्द्रिय
णत्थ (4-17)	: नासारज्जु	नाथ	: नासारज्जु
तग्ग (5-1)	: सूत	ताग	: सूत
पत्तल (6-14)	: कृश	पातर	: कृश
भल्लू (6-99)	: ऋक्ष	भालु	: ऋक्ष
हड्ड (8-59)	: अस्थि	हाड़	: अस्थि
छल्ली (6-24)	: त्वक्	छाल	: त्वक्

समीकरण

अग्घाण (1-19)	: तृप्त	अघायब	: तृप्त होयब
ओड्ढण (1-155)	: उत्तरीय	ओढ़न	: उत्तरीय
खत्त (2-66)	: खात	खत	: खात, खत्ता
झुट्ठ (3-58)	: अलीक	झूठ	: अलीक, मिथ्या
गंडीरी (2-82)	: इक्षुदण्ड	गेँड़ी	: इक्षुदण्ड

महाप्राणीकरण

कालिअ (2-58)	: कालान्तर	काल्हि	: एक दिवसान्तर
कुल्लड (2-63	: लघुभाण्ड	कुल्हड़	: लघुभाण्ड विशेष, कुल्हिआ
खड (2-67)	: तृण	खढ़	: तृणविशेष
गोच्छा (2-95)	: मञ्जरी	घौड़छा	: मञ्जरी समूह

चिल्ला (2-63)	: शकुनिपक्षी	चिल्हा	: शकुनिपक्षी, चिल्होड़ि
छल्ली (3-24)	: त्वक्	छाल्ही	: दूधक त्वक्
मूर्धन्यीकरण			
खड्डा (2-66)	: खानि	खद्धा	: खानि
अन्य विकार			
ड-ड़			
अंडअ (1-16)	: मत्स्य	आड़ा	: माछक अंडा
अड्डस (1-96)	: मत्कुण	उड़स	: मत्कुण
कडच्छु (2-7)	: अयोदर्वी	कड़छु	: अयोदर्वी
गड्डी (2-81)	: शकट	गाड़ी	: शकट
चूड (3-18)	: वलयावली	चूड़ी	: स्त्रीक हाथक हेतु काचवलय
झाड (3-57)	: गहन लता	झाड़	: गहन लता
झडी (3-53)	: निरन्तर वृष्टि	झड़ी	: निरन्तर वृष्टि
खडक्की (2-71)	: लघुद्वार	खिड़की	: वायु गमनागमनक द्वार
ल-र			
कव्वाल (2-52)	: कर्मस्थान, गृह	केवाड़	: घरक प्रवेश मार्ग
खली (2-66)	: तिलपिण्डिका	खरी	: तिलपिण्डिका
चाउला (3-8)	: अन्नविशेष	चाउर	: अन्नविशेष
छल्ली (3-14)	: त्वक्	छलरी	: त्वक्
छिणाल (3-17)	: जार	छिनार	: जार
छिण्णाली (3-27)	: जार (स्त्री)	छिनारि	: जार (स्त्री)
डाली (4-9)	: शाखा	डारि	: शाखा
ल-न			
घरिल्ली (2-106)	: पत्नी	घरनी	: पत्नी
ब-म			
डुंब (4-11)	: श्वपच	डोम	: श्वपच
उ-ओ			
खुट्ट (2-74)	: त्रुटित	खोंटब	: तोड़ि-ताड़ि कय गढ़बाक प्रक्रिया विशेष
ओ-ए			
उल्लोच (1-98)	: वितान	उलँच	: ओछाओनपरक उपरी वस्त्र
पोट्ट (6-60)	: उदर	पेट	: उदर
ण-न			
कुसण (2-35	: तीमन	कसौनी	: आमक तीमनविशेष

ढंकणी (4-14)	: पिधानिका	ढकनी	: पिधानिका

अर्थपरिवर्तनक दृष्टिञे देशीनाममालाक शब्दावलीक तुलनामे समरूप मैथिली शब्दावलीकेँ देखला उत्तर अर्थविकासक विभिन्न प्रक्रिया-अर्थसंकोच, अर्थ विस्तार ओ अर्थादेश परिलक्षित होइछ ।

अर्थ संकोच

अर्थ संकोचक प्रक्रियाक दृष्टिञे देशीनाममालाक अंडअ (1-16), अजराउर (1-45), करणी (2-7), कालिअ (2-58), कुसण (2-35), कव्वाल (2-52) आदि शब्द महत्त्वपूर्ण अछि । देशीनाममालाक व्याख्याक अनुसार एकरा सभक क्रमिक अर्थ अछि-माछ, गर्म, रूप, कालान्तर, तीमन, ओ गृह। समरूप मैथिली शब्दावली क्रमशः आड़ा, जराउर, करनी, काल्हि, कसौनी तथा केवाड़मे विवक्षित अर्थ क्रमशः माछक अंडा, मकर संक्रान्तिक अवसर पर सासुर द्वारा नवविवाहित वर-वधूकेँ देय उष्ण वस्त्रविशेष, मकान बनयबाक हेतु रूपायित करबाक राजमिस्त्रीक औजार विशेष, एक दिवसक कालान्तर, काँच आमसँ निर्मित व्यंजनक प्रकारविशेष तथा घरक द्वार संकुचित अर्थक संवाहक अछि जे शब्दमे अर्थसंकोचक प्रक्रियाक परिणाम थिक ।

अर्थ विस्तार

देशीनाममालाक शब्दावली कोल्हुअ (2-65), गेंठअ (2-93), रोट्ट (7-11) आदिक समरूप मैथिली शब्दावली कोल्हु, गेँठ आ रोटमे अर्थविस्तारक प्रक्रिया स्पष्टतः परिलक्षित अछि । देशीनाममालामे एहि शब्द सभक अर्थ अछि क्रमशः-इक्षुनिपीडनयन्त्र, स्तनक ऊपर बान्हल वस्त्रक ग्रन्थि तथा तन्दुलपिष्ट । मुदा समरूप मैथिली शब्दावलीक अर्थ थोड़ेक व्यापक अछि किएक तँ कोल्हुसँ प्राचीनकालक इक्षुनिपीडनयन्त्रेटाक बोध आब नहि होइछ । तेलहनकेँ पेड़िकऽ तेल निकालबाक यन्त्रकेँ सेहो आइकाल्हि कोल्हुए कहल जाइत छैक । प्राचीनकालमे लगभग सय वर्ष पूर्व धरि इक्षुनिपीडनयन्त्र तथा तेलहनकेँ पेड़बाक यन्त्रमे कोनो खास अन्तर नहि छलैक ।[8] एहिना गेँठ शब्द साम्प्रतिक मैथिलीमे स्तनक ऊपर बान्हल जायवाला वस्त्रग्रन्थिटाक हेतु प्रयुक्त नहि होइछ अपितु अपन विस्तृत अर्थमे ई कोनो ग्रन्थि (गीरह) केँ रूपायित करैछ । तहिना *रोट* शब्द तन्दुलपिष्ट रोटीक हेतु तँ प्रयुक्त अछिए, संगहि अपन विस्तृत अर्थमे ई मोट रोटीक सेहो बोध करबैछ । खास कऽ पावनिविशेषमे देवताविशेषकेँ कर-कट्टुक प्रयुक्त एकटा विशिष्ट प्रकारक मोट रोटी चढ़यबाक परिपाटी छैक जकरा *रोट* कहल जाइत छैक ।

एहिना अर्थादेश ओ अन्य भाषावैज्ञानिक प्रक्रियासँ सम्बद्ध उदाहरण सेहो ताकल जा सकैछ ।

कहल जा सकैछ जे देशीनाममालामे संकलित शब्दावलीक संग मैथिली शब्दावलीक तुलनात्मक अध्ययन मैथिली भाषा-विकासक महत्त्वपूर्ण कड़ीक रूपमे विशिष्ट भाषा तात्त्विक सामग्रीसँ परिपूर्ण अछि । एकर समेकित अध्ययन- मूल्यांकनसँ मैथिलीक देशज शब्दभंडारक कतिपय विशिष्टता ओ ऐतिहासिक मूल्यक दर्शन संभव छैक ।

सन्दर्भ-निर्देश :

1. विद्यापति गीतावली, मैथिली आकादमी, पटना, 1981, पद सं० 68 ।

   'कीर उपर कुरंगिनि देखल चकित भमय जनि ।
   कीर कुरंगिनि उपर देखल भमर उपर फनि ॥

2. माछक अर्थमे झख शब्द आब लुप्त भऽ गेल अछि मुदा प्रयोगमे *झखब, झख मारब* आदि क्रियापद जीवित अछि । दुनू क्रियापद निष्क्रिय होयबाक अर्थमे प्रयुक्त अछि । ई अर्थ माछ मारबाक हेतु बनसी पथने निष्क्रिय बैसल व्यक्तिक व्यापारसँ उद्भूत अछि ।

3. विद्यापति गीतावली, पद सं० 423 :

   'ओतए अछलि धनि निअ पिअ पास । एतए आएलि धनि तुअ विसवास ॥'

4. तत्रैव, पद सं० 49 :

   'करु अभिसार मदन सर बाला । कुटिल कटाख वाण कनिआरा ॥'

5. दुर्गन्धक अर्थमे 'गन्ध' शब्द मैथिलीक विशिष्ट शब्द थिक । हिन्दी भाषामे गन्ध सँ सुगन्ध आ दुर्गन्ध दूहूक बोध होइछ मुदा मै .ीमे गन्ध करब, गन्हायब आदि क्रियापद दुर्गन्धेक अर्थद्योतन करैछ ।

6. कीर्त्तिलता-विद्यापति, स. डा. उमेश मिश्र. अ. भा. मैथिली साहित्य समिति, इलाहाबाद-2,1972, पृ० 52 ।

   'बिछि-बाछि तेजि-ताजि, पक्खरेहि साजि-साजि ।
   लक्ख संख आनु घोर, जासु मूलेँ मेरु थोड़ ॥'

7. तत्रैव, प्रथम पल्लव :

   'महुअर बुज्झइ कसुम रस, कब्बकलाउ छइल्ल ।
   सज्जन पर उअआर मन, दुज्जन नाम मइल्ल ॥'

8. दृष्टव्य, बिहार पीजैन्ट लाइफ-जी० ए० ग्रियर्सन, कॉस्मो पब्लिकेशन्स, दरियागंज, नई दिल्ली, 1975, पृ० 46-56 ।



लेखक



नाम	: डा० योगानन्दझा
पिता	: स्व० रामलखनझा
जन्मतिथि	: 11 जनवरी, 1955 इसवी
स्थायी पता	: कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा- 846001
दूरभाष	: 06272-42774
शिक्षा	: एम० ए० (मैथिली, हिन्दी); पी-एच्०डी०
विनिबन्ध	: काष्ठव्यावसायिक मैथिली शब्दावलीक व्याख्यात्मक अध्ययन
शोध-प्रबन्ध	: मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावलीक व्याख्यात्मक अध्ययन
वृत्ति	: अंकेक्षण, बिहार राज्य विद्युत बोर्ड
सदस्य	: मैथिली परामर्शदातृ समिति, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली. (1998 सँ 2002)
अभिरुचि	: लोकजीवन, लोकसाहित्य, अध्ययन-अनुसंधान, कथा-निबन्ध-समीक्षादि
प्रकाशित पोथी	: परिणीता (खण्डकाव्यांश 1987), लोकजीवन ओ लोकसाहित्य (निबन्ध 1986), मैथिली शाक्त साहित्य (सम्पादन, 1996), फकीर मोहन सेनापति (अनुवाद, 2000), संकल्प 3, 4 आ 5 (सह सम्पादन 1985, 87 एवं 89)

●

शुभाशंसा



अति कोमल कान्त कलेवर मे
मिथिलाक माटि सन मीठ जकाँ,
चहकैत, फुदैत, नचैत जेना
मंजुल-तम शब्दक संयोजन।
किछु मान्य मैथिलिक वरदपुत्र
कें चित्रित परिचिति कृति-कृतित्व,
मृगमद सन महमह हो अनुदिन
श्री योगानन्द जीक चिन्तन॥
आलेख सञ्चयन मैथिलीक
अद्भुत अभिनव वरदान-सुमन!

श्रीकृष्णजयन्ती
२०५८वि० — रमाकान्त झा

वितरक
साहित्य निकेतन, न्यू मार्केट, लहेरियासराय, दरभंगा-846001., दूरभाष : 06272-42791